	बुध WED	बृह. THU	शुक्र FRI	
		1	2	
14	15	16	1	

MAY

नि	रवि
AT	SUN
3	4
7	

C. R. HIRANI
Advocate
Tel. 6429161
Bombay

Book purchased
on 8/4/2002
at.
Gtunnal: Sonepal -
Ashram.
Birthday of Gurumai

अन्तर के पट खोल

काग से हँस, हँस से परमहँस	1
आशाओं से मुक्त पुरुष ही संत है	31
स्वपन से सत्य में	65
जीवन से मृत्यु तक	103
भाव ही पूजा	137

प्रकाशक : आनन्दवाणी प्रकाशन 57ए अजन्ता अर्पाटमैन्ट्स, 36 आई. पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, नई दिल्ली-92

शब्द संयोजक : सुपर कम्प्यूटर्स, मौजपुर, दिल्ली।

साज-सज्जा : प्रिंट ग्राफिक्स, नारायणा, दिल्ली।

प्रकाशकाधीन प्रथम संस्करण 1999

इस पुस्तक या इसके किसी भी अंश का किसी भी प्रकार का मुद्रण, प्रकाशन, लेखन इत्यादि प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना नहीं होगा।

काग से हँस,
हँस से परमहँस

मेरे सतगुरू दीन दयाल
काग से हंस बनाते हैं कि सोया मनुवा जगाते हैं।
अजब है संतों का दरबार, कि देते भक्ति ज्ञान भंडार,
शब्द अनमोल सुनाते हैं कि मन का भ्रम मिटाते हैं।
गुरूजी सत् का देते ज्ञान, जीव का ईश से लगता ध्यान,
कि अमृत खूब पिलाते हैं कि मन की प्यास बुझाते हैं।
कर लो गुरू चरणों का ध्यान सहज प्रकाश हो जागे ज्ञान,
वो अपना ज्ञान लुटाते हैं कि भव से पार लगाते हैं।

आज पहले दिन सद्गुरू की वंदना करते हुए उस क्षोत्रिय
निष्ठ...., याद रहे संतों की कोई कमी नहीं भारत में, साधुओं,
यों की कोई कमी नहीं भारत में, लेकिन ब्रह्मनिष्ठ की बड़ी
ी है। घर छोड़ने वालों की भी कोई कमी नहीं है भारत में,
किन फक्कड़ों की बहुत कमी है। कमी इसलिए है क्योंकि
क्कड़ होते ही बहुत कम हैं। कृष्ण महाराज कहते हैं हजारों लोग
मार्ग पर चलते हैं, पर इन हजारों में से कुछ ही टिकते हैं।
श्चर्य! इन हजारों टिकने वालों में से कोई एक संत होता है।
में भी आश्चर्य! फिर हजारों संतों में से कोई एक ब्रह्मनिष्ठ होता
कृष्ण कहते-हे अर्जुन! इस दुनिया में तुझे कभी कोई
निष्ठ मिल जाए तो इसको सबसे बड़ा आश्चर्य मानना। ब्रह्मनिष्ठ
मिलना कोई इतना आसान भी नहीं है और ब्रह्मनिष्ठ की
चान, मैंने अक्सर कही, मैंने बार-बार कही। मैंने रूढ़िगत
ाज की दी हुई व्याख्या से हट कर हर बार कहा है। संत की
चान, ब्रह्मनिष्ठ की पहचान और कोई हो नहीं सकती है सिर्फ
की इतनी पहचान है कि जिसके पास बैठ के तुम बदल जाओ।
सके पास बैठ के तुम्हारा मन परमात्मा के आकाश में उड़ने को
र होने लग जाए। जिसके पास बैठ के इस रहस्य को जानने
इच्छा जग जाए जिस रहस्य को हम परमात्मा, ब्रह्म कहते हैं,
ुण निराकार कहते हैं, ओम कहते हैं, आमीन कहते हैं, अल्लाह
ते हैं, वाहेगुरू कहते हैं। इस रहस्य को जानने सीखने और फिर
रहस्य को जान के उसमें डूब जाने की चाह उठने लगे तो
झना जिसके संग में बैठे हो यह जरूर कोई ब्रह्मनिष्ठ है।
के अलावा यह चमत्कार कहीं कोई नहीं कर सकता है। कथाएँ

हजारों चलती रहती हैं पर कभी-कभी सुनाने वाले भी सोये-सोये बोलते रहते हैं और सुनने वाले भी सोये-सोये सुनते रह जाते हैं। यह तो कोई है जो तुमको जगाएगा। यह तो कोई है जो तुमको हिला जाएगा। तुम्हारे मन में बिजलियाँ कौंध जायेंगी। इसी को ही ब्रह्मनिष्ठ कहा। इसी को ही मैंने सद्गुरू कहा और ऐसे सद्गुरू का मिल जाना परमात्मा की परम कृपा, परम प्रसाद है कि ऐसे कामिल मुर्शद किसी ऐसे सांचे फकीर से मुलाकात हो जाए वह मुलाकात तुमको कैसे बदल देती है। ध्यान से सुनना–

मेरे सतगुरू दीन दयाल
काग से हंस बनाते हैं कि सोया मनुवा जगाते हैं।
अजब है संतों का दरबार, कि देते भक्ति ज्ञान भंडार,
शब्द अनमोल सुनाते हैं कि मन का भ्रम मिटाते हैं।
गुरूजी सत् का देते ज्ञान, जीव का ईश से लगता ध्यान,
कि अमृत खूब पिलाते हैं कि मन की प्यास बुझाते हैं।
कर लो गुरू चरणों का ध्यान सहज प्रकाश हो जागे ज्ञान,
वो अपना ज्ञान लुटाते हैं कि भव से पार लगाते हैं।

दो ही प्रकार के मुनष्य इस संसार में हैं एक वो जो काग वृति के हैं फिर एक वो जो हंस वृति के हैं। काग अथवा कौवा वृति, हंस वृति। दो ही किस्म की मनः स्थिति के लोग हैं। कौआ एक ऐसा पक्षी है जिसको बुद्धि के लिहाज से बिल्कुल कमतर माना है। जिसका भोजन कूड़ा कर्कट, लोगों की छोड़ी हुई विष्ठा, त्यागा हुआ सामान कौए का भोजन है। माने जिसको तुच्छ जानकर के, प्रयोग में न आने लायक जानकर के त्याग देते हैं जन। कौआ उसी को ही ग्रास

बना लेता है। उसी को भोजन बना लेता है। हंस फिर एक ऐसा पक्षी है कि जिसके लिए तो किवंदन्ति प्रसिद्ध है कि दूध में डाल दीजिए पानी और पानी मिले दूध में यह अपनी चोंच मारेगा तो उसमें से दूध भर पीएगा, पानी को नहीं पीएगा। ऐसे पीएगा ऐसी कीमिया, ऐसी Chemistry उसकी Beak में, उसकी चोंच में काम करती है।

एक कौआ है, जिसके सामने दूसरों का माल उड़ा ले जाना भर ही एक जीवन का लक्ष्य है। जहाँ तुम चूके, जहाँ तुम ज़रा से सुस्त हुए, जहाँ तुम जरा सा बेपरवाह हुए वो तुम्हारे रखे सामान को उड़ा ले जाता है। स्कूलों में अधिकतर बच्चे, जिन स्कूलों के प्रागंण में Gardens हैं या बाग हैं, जहाँ बच्चे अपनी Recess बिताते हैं तो अपनी आधी छुट्टी का भोजन खाते हैं कि वो बच्चे के हाथ से भी छीन लेते हैं क्योंकि जानते हैं कि ये बच्चा है आगे से लड़ नहीं सकेगा तो बहुत, बहुत बार बच्चे के हाथ से भी छीन के ले जाते हैं और बहुत बार तो बच्चा घबरा कर फैंक ही देगा। शरारती मन है कौए का। नीच प्रकृति का है लेकिन हंस, अत्याधिक शांत है, सौम्य है, गंभीर है। तो आश्चर्य नहीं कि फिर भारत के ऋषियों को परम हंस कहा गया है। ये भारत के संत जो हैं, कहा ये जो ब्रह्मनिष्ठ हैं, वह जिसने भीतर परमात्मा का रस चखा है, जिसने संसार का कूड़ा कर्कट अलग करके परमात्मा के रस को जो पी गया, जिसके मन में ऐसी विभाजन कर देने की, ऐसी माया के परदे से परे हट के उस ब्रह्म को पर्दा मुक्त करके जान लेने की क्षमता जिसमें है, उन फकीरों को परमहंस कहा गया। क्या? परम हंस। हंस तो खाली दूध पानी का भेद कर पाता है, तुमने तो विषय और ब्रह्म का भेद जान लिया। तुमने तो मरणधर्मा और अमृत धर्मा

का भेद जान लिया। तुम तो परम हंस हो। कौआ वृत्ति और हंस वृत्ति। हंस सदा शांत है, सन्तुष्ट है, धीर है, गंभीर है। कौआ हमेशा ही चंचल है, शरारती है, दूसरों की जूठन में नज़र रखता है और कोशिश कर लेता है कि जब मौका लगे तो वो ले उड़े।

ख्याल करना आप में कुछ लोग, हो सकता है कौआ वृत्ति के हों। कौआवृत्ति क्या? जिसकी नजर दूसरे पर है। दूसरे के सामान पर, दूसरे के घर पर, दूसरे की चीजों पर, दूसरों की प्रतिष्ठा पर। हालांकि मैं नहीं मानती समाज में कोई भी आदमी समाज के द्वारा दी हुई प्रतिष्ठा से प्रतिष्ठित हो सकता है। ख्याल से सुनना। मेरे देखे समाज में जिनको प्रतिष्ठित व्यक्ति कहा जाता है, वो बेचारे तो वो लंगड़े हैं जो समाज की दी हुई बैसाखियों पर चल रहे हैं और अंदर-अंदर डरते रहते हैं कि कोई उनकी इन बैसाखियों को छीन के न ले जाए। नहीं तो पंगु हैं, अंपग हैं, लंगड़े हैं बिल्कुल। जिनके अपने पाँव ही नहीं हैं जिनकी अपनी रीढ़ की हड्डी नहीं है। जो नपुंसक है बिल्कुल। दूसरों की दी हुई मान प्रतिष्ठा से जो अपने आपको प्रतिष्ठित मानता है उससे ज्यादा थुथला आदमी और कौन होगा?

एक राजनेता के घर में, चुनाव के दिन थे। तो राजनेता के घर में टिकट की इच्छा रखने वाले पहुँचे हुए थे। राजनेता के घर में पामेरियन कुत्ता पाल रखा था। तो मिलने वाले, जितने ये आए थे, चुनाव टिकट के इच्छुक और वो राजनेता जी तो अभी भीतर थे अपने किसी कार्य में व्यस्त थे। बाहर बगीचे में लोग उनकी इंतजार कर रहे थे। कुत्ता जो है वो तो कुत्ता है। घर और बाहर की सीमा तो ज्यादा जानता नहीं। बाहर आ गया। किसी ने

कहा-यह तो साहब का कुत्ता है। नेता जी का कुत्ता है। जितने के जितने टिकट के इच्छा वाले गए थे-आइये कुत्ता जी। आइये कुत्ता जी। कुर्सी खाली करके दे रहे हैं। बैठिये कुत्ता जी। बैठिये कुत्ता जी। साहब का, नेता जी का कुत्ता है न इसलिए उसकी भी चमचागिरी कर रहे हैं और मान लीजिए ऐसी चमचागिरी करने वाले में से किसी को टिकट मिल जाए और फिर वो अपने क्षेत्र से जीत भी जाए तो फिर ऐसे ही जीते हुए व्यक्ति को तो तुम प्रतिष्ठित व्यक्ति कह देते हो न। जो कुत्ता जी कहता है। पत्नी को तो पत्नी जी कभी नहीं कहा होगा। मित्र को तो श्रीमान जी कभी नहीं कहा होगा। पड़ोसी को तो जी करके कभी नहीं बोला होगा। लेकिन राजनेता के कुत्ते को कुत्ता जी जरूर बोलता है।

ऐसे प्रतिष्ठित या ऐसे So-called respected citizens of the society से तो सख्त Allergy है। मेरी नहीं उनसे बन पाती। वो ऐसी बू मारते हैं, ख्याल करना यह उनके जिस्म की बू नहीं है। पर बू है। जैसे महावीर तीर्थंकर जी के लिए उनके अनुयायियों का यह कहना है कि महावीर जी के जिस्म से हमेशा खुशबू निकला करती थी। खुशबू निकला करती थी। और सही देखा जाए तो वो त्यागी थे। वस्त्र तक त्याग दिए थे नंगे खड़े हो गये थे और नहाते भी जब थे जब वर्षा आती थी। पर उनके अनुयायी यह मानते हैं कि उनके जिस्म से खुशबू आती थी। वह खुशबू उनकी शुभ्रता, सत्यता की है, आत्मचिंतन की है। पर जो पूरा जीवन दूसरों के साथ प्रतिस्पर्धा में, ईर्ष्या में, द्वेष में बिताये वह तो बदबू ही देगा। जो अपनी शोभा दिखाने में, प्रदर्शन में जानता है वह फिर कुछ करेगा दूसरों से श्रेष्ठ दिखने को।

तो फिर वो बेशुमार चीजे और बेशुमार वस्तुएँ और बेशुमार सामान और Interior decorater को भी Engage कर लेता है मेरा घर अच्छा होना चाहिए। ख्याल रहे, अपना घर वो सुन्दर इसलिए नहीं करना चाहता कि सुन्दरता से प्रेम है। ख्याल रहे, क्योंकि जिसको सुन्दरता से प्रेम होगा वो असल में परमात्मा का प्रेमी होगा। क्योंकि परमात्मा से तो अधिक कोई सुन्दर है ही नहीं। ''सत्यम् शिवम् सुन्दरम्'' शिव से अधिक सुन्दर कुछ नहीं है। सत्य से अधिक सुन्दर कुछ नहीं। तो जो कहे कि मैं सुन्दरता का प्रेमी हूँ तो पक्की बात होगी कि वह ईश्वर का ही प्रेमी होगा। संसार का प्रेमी हो ही नहीं सकता है और जो संसार का प्रेमी है अगर वो, ऐसी प्रेम की Aesthetic value लेते हुए मान लीजिए वह घर को अच्छा बनाता है तो उस अच्छे बनाने में किसी को नीचा दिखाना या किसी को दिखाने भर का भी ख्याल नहीं है। लेकिन अक्सर करके जब लोग घर बनाते हैं तो वो Competitive होते हैं। दूसरे को दिखाना है। दूसरे को बताना है कि मैं तुम से श्रेष्ठ हूँ। तुमने मार्बल मकराना से मँगवाया, मैंने इटली से Import किया है। तुम्हारे जो घर के नल, नलके लगे हैं, वे तुमने यहीं से, बाजार से खरीदे हैं, मैने फ्रांस से मंगवाये हैं और ख्याल करना तुम्हारा घर सोने, हीरे, मोतियों से भी जड़ा हो और मान लो पूरे शहर में या तो सब कोई मर खप चुके हों या तुम बिल्कुल रेगिस्तान में रह रहे हो और मोतियों से जड़ा हुआ भी तुम्हारा महल हो, जब कोई देखने वाला न होगा, किसी को तुम दिखा न सकते हो, तुम मान भी नहीं कर सकोगे कि मेरा घर सबसे श्रेष्ठ है।

कौआ वृति, कौआ वृति माने दूसरों का छोड़ा हुआ तुम पकड़ना

चाहते हो। ख्याल करना जिसको लोग फैशन कहते हैं वो फैशन भी क्या है? फैशन भी यही है। किसी व्यक्ति के द्वारा शुरू की हुई एक अंधाधुंध लकीर। फिर जिस लकीर के पीछे चलने वाले कई फकीर हो गए। हॉलीवुड की एक सफलतम अभिनेत्री मार्लिन मुनरो कहते हैं एक बार शूटिंग करते वक्त उसके कान का एक बूंदा खो गया। और वह एक ही कान के बूंदे के साथ अपने घर को चली और तब, जब कार में बैठी और प्रैस फोटोग्राफर और सब फोटो खींच रहे हैं और संजोग की बात कि फोटो कुछ इस प्रकार से खिंच गई कि नज़र आ रहा था कि उसके एक कान में बूंदा है और एक कान में नहीं है। जैसे ही अमरीका भर के समाचार पत्रों में ये तस्वीरें छपीं, जितनी युवतियाँ, जितनी स्त्रियाँ पूरे अमेरिका भर में थी, जोड़ी होते हुए बूंदों की उन्होंने एक-एक कान से निकाल दिया। Because may be it is a fashion to wear one earing. शायद यह भी अब फैशन होगा क्योंकि मार्लिन मुनरो ने एक पहना है तो फिर सबने एक ही पहना। एक नियम बन गया और फिर इसी को लोग फैशन कह देते हैं। इसे भी मैं कौआ वृति मानती हूँ। ख्याल रखना आप लोग जब तैयार होते हो....। वही छोटी सी बात।

एक उदाहरण मैं दे रही हूँ। जब आप लोग तैयार होते हो, कपड़ा पहनते हो, जब आप बाजार से कपड़ा खरीदने जाते हो, आप बहुत बार वो नहीं खरीदते हो जो आपको जंचेगा या आपको पसंद हो। आप वो खरीदते हो, जो दूसरों को पसन्द होगा और दूसरों को जंच जाएगा। तो मतलब तुम अपने लिए तो जीते ही नहीं हो, दूसरों के लिए जिऐ जाते हो। और मज़ेदार बात तो यह है तुम एक बूंदा पहनोगे कि तुम दो बूंदे पहनोगे। यह भी दूसरों को देख कर निर्णय लोगे।

कौआ वृति और फिर दूसरी है हंस की वृति । हंस किसी के

लिए नहीं जीता। हंस दिखावट में नहीं जीता। हंस किसी Competition में नहीं जीता, उसको कोई लेना देना नहीं है। कभी तुमने देखा किसी सरोवर के निकट बैठे हंस को? देखा है, ख्याल करना हंस दूर की बात है तुम अपने घर की ही छत में, किसी बाग बगीचे में किसी पक्षी को किसी भी पक्षी को, आप चिड़िया को अपने घर में ही देख लो। अपने आप में मस्त हैं। दो दाने चुगे। चार दाने चुगे। बैठी चहचहा रही है। खुश है। प्रसन्न है। उसे कोई दौड़ नहीं लगी कि मेरे साथ वाली जो सहेली चिड़िया आई है वो ज्यादा दाने खा गई होगी। वो ज्यादा दाने मुँह में डाल के घर में ले गई होगी। उसको कोई दौड़ नहीं। उसका अपना पेट भर गया। संतुष्ट है। चहचहा रही है।

मैं तुमसे पूछती हूँ तुम्हारा भी पेट अन्न से तो भरता ही है। नहीं भरता? रोज तो खाते हो। कुछ भी खाते हो, दोपहर भी खाते हो, शाम भी खाते हो। तुम्हारा पेट भी अन्न से भरता है। क्या तुम चहचहाते हो? क्या तुम प्रसन्नचित हो? क्या तुम मुस्कुराते हो? क्या तुम आनन्दित रहते हो? और अगर नहीं तो तुमसे चिड़िया अच्छी है। फिर तुमसे चिड़िया अच्छी, भले वो मनुष्य नहीं। भले वो मनुष्य होने का अभिमान नहीं कर सकती कि मैं श्रेष्ठ हूँ दूसरे जीव जन्तुओं से। पर जो मुस्कुरा सकती है, जो आनन्दित है, जो चहचहा रही है, जो पंख फड़फड़ा करके आकाश में उड़ती फिर रही है। उसका मुकाबला तुम अपने शहर के धनी से धनी आदमी से करोगे तो वो भी गरीब नज़र आएगा।

गुजरात के संत हुए दादू दयाल जी। दादू जी लिखते हैं :-

"अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम

देने वाले सबको एक ही दाता राम"

पक्षी किसी की नौकरी नहीं करता। किसी को सलाम नहीं करता। तुमने देखा कभी ब्रीफकेस उठा करके किसी पक्षी को जाते कि मैं दफतर जा रहा हूँ। बाबू साहब को मनाना है। काम करना है, टैन्डर भरना है। वो इधर से लाना है सामान। वो उधर से बेचना है, उसकी दलाली खानी है, उसको दलाली देनी है। कभी देखा करते कुछ? नहीं करते हैं।

"अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम"

और फिर भी कितने मस्त हैं! फिर भी कितने शान्त हैं, सन्तुष्ट हैं। एक बात और कहूँ। बहुत सम्भावना यह है कि ये पक्षी अपनी इस सन्तुष्टि को देख कर आनन्दित नहीं हो पाते। क्यों? उतना भर समझने के लिए भी तो बुद्धि चाहिए और यह बुद्धि इन्सान के पास है। पर मज़े की बात तो यह है कि बुद्धि इन्सान के पास तो है पर इन्सान के पास चहचहाना नहीं है। चिड़िया के पास चहचहाना है पर उसके पास उसका मोल आँकने के लिए बुद्धि नहीं है।

कभी देखा तुमने पंख फैला करके जब मोर नाचता है? कभी देखा तुमने उसकी चाल जब वह मस्तानी चाल चलता है? और तो और अपने पिछवाड़े में बंधी हुई गाय की कभी आँखों में झाँक के देखो। कितनी शांत हैं किसी मुनि के जैसी। आँख में न क्रोध की लालिमा है, न वासना की लालिमा है, न अंहकार के डोरे हैं। आँखें कैसी निर्दोष होती हैं इन पशुओं की। पर अफसोस इस बात का है वो अपनी इस निर्दोषता को, वो अपनी इस मासूमियत की Value नहीं कर पाएंगे क्योंकि उनके पास बुद्धि नहीं है। और ख्याल करें

आप मनुष्य हैं आपके पास बुद्धि है पर उस बुद्धि का भी फिर क्या फायदा जो बुद्धि से आप बेचैन हो। जिस बुद्धि के कारण तुम चिन्ता में पड़े हुए हो। जिस बुद्धि के कारण तुम मेरी-तेरी में पड़े हुए हो।

जब किसी व्यक्ति को Heart stroke हो जाता है, दिल का दौरा पड़ने लग जाए और डाक्टर सबसे पहले उसे नींद की दवा देकर के सुला देता है। इसकी बुद्धि को सुला दो जो सोचे कुछ नहीं, जो विचारे कुछ नहीं। पड़ा रहने दो इसको बेहोश, मरा हुआ क्योंकि जागेगा तो फिर दिमाग लगाएगा और दिमाग लगाएगा तो खुद को दुःखी कर लेगा यह। बाकी घरवालों को भी सावधान करते कि इसको बहुत खुशी की खबर न देना। इसको बहुत गम की खबर न देना। क्योंकि पहले ही दिमाग से इतना सोच रहा है, इतना सोच रहा है ऊपर से और इसको सोचने का सामान दे दोगे, यह तो पागल हो जाएगा या मर जाएगा। मत देना इसको कोई खबर।

ख्याल करना यह तुम्हारी गरिमा हुई क्या? यह तुम्हारा सम्मान है क्या? कि तुम खुशी में, गम में शामिल नहीं हो सकते हो। फिर उस बुद्धि का भी क्या फायदा जिस बुद्धि से तुम बेचैन हो। उस अक्ल से भी क्या फायदा जिस अक्ल ने तुमको बेअक्ल कर रखा है।

शायर कहता है-

"इश्क करता है तो इश्क की तौहीन न कर
या तो होश में आ, या बेहोश ही रह"

एक काम कर। तौहीन न कर। अपमान न कर प्रेम का। या तो होश में ही रहो, पूरे रहो या पूरे बेहोश रहो। बीच वाली हालत

बड़ी खस्ता है। बीच वाली हालत बड़ी खतरनाक है और आदमी पूरा बेहोश नहीं है और आदमी पूरा होश में नहीं है। ख्याल रखना जिस दिन तुम पूरे होश में हो गए उस दिन तो तुम परमहंस हो गए। उस दिन तो तुम संत हो गए। उस दिन तो तुम फकीर हो गए।

ख्याल करना एक बात और मैं कह दूँ, बहुत से धर्म ऐसी उनकी विचार धारा है कि जो बड़े हैं वो बड़े ही रहेंगे। जो छोटे हैं वो छोटे ही रहेंगे। लेकिन भारत ने ऐसी विचारधारा दी कि नहीं, जिसको आप बड़ा देख रहो हो, आध्यात्म की दृष्टि से वो भी कभी छोटा था। तुम्हारे जैसा ही था। अगर वो छोटे से बड़ा हो सका तो तुम भी हो जाओगे। जिसे तुम आज ज्ञानी देख रहे हो कल वो भी अज्ञानी था। हांलाकि उनके चेले यह मानने को ही तैयार नहीं होते कि हमारे गुरू जी भी कभी अज्ञानी होते थे। कौन मानता है? कोई नहीं मानता।

कोई मानने को तैयार नहीं है। उदाहरण देती हूँ कबीर साहब का। कबीर साहब की आज तीन-तीन परम्पराएं चल रही हैं। एक परम्परा यह कहती है कि अनाथ बच्चे को तालाब के किनारे पाया गया और एक मुसलमान पति-पत्नी, दम्पति, नीरू और नीमा ने उनको पाला और फिर इस तरह से स्वामी रामानंद जी की संगत करते-करते वो संत हो गए थे। एक दूसरी कबीर साहब की ही परम्परा है-लहरतारा वाले। वो ये कहते हैं कि नहीं-नहीं, कबीर साहब किसी के छोड़े बच्चे नहीं थे। वो तो एक व्यक्ति गुजर रहा था तालाब के किनारे तो उसने देखा आकाश से एक किरण निकली सूर्य की और सीधे नीचे कमल पर पहुँची और देखते-देखते बच्चा बन गई और वो खिलखिला कर हँसने लग गई तो फिर उसने

उसको उठा लिया और फिर उसको एक पत्नी-पति को दे दिया पालने के लिए।

तो कबीर किसी की छोड़ी हुई औलाद नहीं थे और कबीर किसी की त्यागी हुई और विवाह से बाहर की, गैर कानूनी संतान नहीं थे। वो तो Direct आकाश से उतरने वाले एक अवतार थे। कबीर के अनुयायी मानने को भी तैयार नहीं है लेकिन कबीर साहब तो अपनी कथनी, वे खुद लिखते-

"अष्ट कमल का चरखा बनाया, पाँच तत्व की पूनी
नौ दस मास बुनन को लागे मूरख मैली कीन्ही
चदरिया झीनी रे झीनी"

अष्ट कमल का चरखा बनाया। हमारे शरीर में ये जो चक्र हैं, इन्हीं अष्ट चक्रों का चरखा और पाँच तत्वों की पूनी। इस पूनी से परमात्मा ने, नौ दस मास बुनन को लागे। इस मेरे शरीर को उसने नौ से दस मास में बुन के उसने तैयार कर दिया। पर इस बुनी हुई चदरिया को इस मनुष्य रूपी चदरिया को बहुतों ने तो खराब कर दिया, बहुतों ने तो मैला कर दिया पर कबीर कहते-

कबीर दास ने ऐसी ओढ़ी,
ज्यों की त्यों धर दीनी,
चदरिया झीनी रे झीनी।

मैंने भी ओढ़ी। मुझे भी यह मनुष्य तन रूपी चदरिया मालिक ने दी पर मैंने तो जैसी कोरी ओढ़ी वैसी की वैसी कोरी मालिक को वापस कर दी। न वासना की कालिमा लगने दी, न अज्ञान का अंधकार इसके ऊपर छाने दिया। कोरे का कोरा लौटा दिया था मैंने।

ख्याल रखना अब हम कबीर के कहे और लिखे गए पर भरोसा करें या किसी बात के ऊपर। किसी चली हुई परम्परा पर भरोसा करें। किसके ऊपर भरोसा करें। हमारे जीवन को हम दो ही ढंग से जी सकते हैं। या तो हंस वृति से जी लें या तो कौआ वृति से जी लें। कौआ वृति बेहोशी की वृति है। हंस वृति होश की वृति है। परम होश की वृति। अब मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहती हूँ- आप अपने आपको होश वाला मानते हो कि आप अपने आप को बेहोश मानते हो?

ख्याल रहे जब तक तुम अपने लिए निर्णय नहीं कर लोगे तब तक यात्रा ही शुरू नहीं होती। जब आदमी ऐसा अन्दर समझे कि मुझसे ज्यादा अकलमंद और कोई नहीं है तो वो किसी ज्ञानी गुरू की संगत करने क्योंकर जायेगा? और ख्याल रखना ऐसा अहसास ले आना कोई मुश्किल काम नहीं है। किताबें भरी पड़ी हैं बाजारों में। ग्रन्थ भरे पड़े हैं बाजारों में। खरीदते जाओ, पढ़ते जाओ, पढ़ते जाओ। खरीदते जाओ पढ़ते जाओ। और पढ़-पढ़ के, पढ़-पढ़ के एक अहसास भीतर ले आओ कि फिर मेरे जैसा ज्ञानी और कोई नहीं। क्योंकि मैंने सब जान लिया। ब्रह्म क्या, माया क्या, जगत क्या, जीव क्या, ईश्वर क्या, सब समझ लिया। अब मेरे से ज्यादा ज्ञानी कोई नहीं। बल्कि फिर बहुत सम्भावना तो यह हो जाती है कि फिर यह ज्ञानी अपना ज्ञान बघारने निकल पड़ेगा।

बौद्ध धर्म जब भारत से चीन में पहुँचा तो इसका नाम झेन धर्म हुआ। झेन शब्द का यूँ अर्थ ध्यान होता है। ऐसे ही एक संत बौद्ध संत या झेन संत आप उनको कह सकते हैं। लिन्ची की कथा बड़ी मीठी है। कहते है लिन्ची का घर एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर था। और हांलाकि वो बाहर अन्दर ज्यादा नहीं आते जाते थे। पर

ये ज्ञान का कमल जब हृदय में खिलता है तो खुशबू अपने आप उड़ जाती है। पहुँचानी नहीं पड़ती है। अपने आप उड़ जाती है और खबर फैल गई कि लिन्ची परम बोध को उपलब्ध हो गया। ज्ञानी हो गया। Enlightened हो गया है। एक बहुत बड़ा दर्शन का प्रोफैसर था, फिलोसफी का प्रोफैसर। जब उसे मालूम हुआ तो उसे लगा कि अच्छा, ऐसा है तो मैं जाऊँ। उसको मिल कर आऊँ, देख कर आऊँ और बहुत से प्रश्न हैं जरा उन प्रश्नों को भी पूछ आऊँ।

ख्याल रहे-प्रश्न पूछना दो ढंग से होता है। एक तो यह कि आप को जिज्ञासा थी। आप उस जिज्ञासा को शांत करना चाहते थे और दूसरा प्रश्न पूछने का यह तरीका होता है कि आप सामने वाले वक्ता अथवा संत को Test करना चाहते हो कि भई! इसका उत्तर तो मुझे आता ही है पहले से, फिर भी प्रश्न पूछूँगा कि यह वही जवाब देता है या नहीं देता है। दो किस्म के प्रश्न होते हैं।

अभी थोड़े दिन पहले हम पंजाब में थे तो लुधियाना में किसी के घर में बैठे हुए तो काफी लोग मिलने वाले थे। तो एक सज्जन चुपचाप बैठे थे। बड़ा अच्छा लगता है जब लोग बिना कहे चुपचाप बैठे रहें। नहीं तो कहना पड़ता है-कृपया शांत हो जाइये। कृपया शांत हो जाइये। कृपया शांति का दान बख्शिये। ऐसा बार बार कहा जाता है। मैं कई बार कहती हूँ काहे को कहते हो। अगर शान्ति उनके पास होती तो शांत होके बैठते। शांति उनके पास नहीं थी तो इसलिए तो बेचैनी से शोर मचा रहे थे। तो जिसके पास बेचैनी है तुम उसे कह रहे हो शान्ति का दान दो। मूर्ख हो कि नहीं? तो माँगने वाला ही मूर्ख हो गया। कहने वाला ही मूर्ख हो गया।

पर संत के पास जाए तो संत का कहते दर्शन करने जा रहे

हैं ख्याल रखना, हम लोगों की भाषा। हम कहते हैं फलां संत आए हैं हम संत का दर्शन करने जाएं। यह नहीं हैं वचन कि हम उनको सुनने जा रहे हैं। सुनना दो नम्बर का है, दर्शन एक नम्बर का है। सुनने में फिर मन, बुद्धि विचार, तर्क-वितर्क आ जाते हैं। लेकिन श्रद्धापूर्वक अगर आँख से संत का दर्शन किया जाए तो सत्य बात यह है कि फिर-

"आँखों ही आँखों में कुछ वो बात हो गई
गए थे सोए-सोए, गए थे हम सोए-सोए
पर अब तो जागी रात हो गई"

गए थे सोए हुए पर जाग गए हैं। रात अभी भी, भले संसार की पड़ी है पर मेरा जगना तो हो गया। शायर कहता है-

बहुत शको शुब्हा था मुझे खुदा की ज़ात पर
जो देखा मुर्शद का चेहरा तो मुझे यकीं आया

मुर्शद कहते गुरू को, संत को। तो प्रश्न वो पूछना जो सचमुच तुम्हारी जिज्ञासा का हो। नहीं तो ज्यादा करके लोगों के प्रश्न बिल्कुल बचकाने होते हैं। बैठ जाए न बस अच्छा महाराज! मन कैसे टिकता है? अच्छा फिर महाराज! आत्मा क्या होती है? अच्छा महाराज! फिर परमात्मा कैसे मिलता है? वो ऐसे पूछ रहे हैं जैसे शहर में सेल कहाँ लगी है? तो मैंने कह दिया, भई! वो नवीन Market में लगी है। तो ऐसा औपचारिक सवाल और उसका औपचारिक जवाब देने को मैं तैयार नहीं हूँ। मैंने जब कहा कि जो प्रश्न पूछना चाहो पूछ लो तो एक सज्जन बैठे थे। कहने लगे-महाराज! गर्मी वाला शिविर लगेगा और कहाँ लगेगा? मैंने कहा तुम सर्दी वाले

शिविर में आए थे अभी दिसम्बर में, हरिद्वार में, हरिद्वार? कहते-नहीं, महाराज! वहाँ तो नहीं आया था। तो मैंनें कहा जब वहाँ नहीं आए तो अगले का क्यों पूछ रहे हो? उसकी क्या गारन्टी कि तुम वहाँ पर भी पहुँचोगे? पूछो ही मत और अगर तुम्हें आना हो तो आ जाना। रास्ता तुम्हें मालूम हो जाएगा। पता तुम्हें मिल जाएगा। तो मैंने हाथ जोड़ दिये, पूछ लेना प्रश्न जो तुमको पूछना हो, पर वो पूछना जो तुम्हारी जिज्ञासा हो, दूसरा नहीं पूछना मेरे से।

आप हैरान होगे, सौ डेढ़ सौ आदमी बैठा हुआ था। किसी ने एक भी प्रश्न नहीं पूछा! ख्याल रहे अगर यह मैं जिज्ञासा वाला शब्द न जोड़ती तो मेरी तो खोपड़ी खा जाते। बिल्कुल खोपड़ी खा जाते। खोपड़ी से बात चली। अभी अमेरिका में एक किसी महिला ने.....। पूछने वालों के भी वारे बलिहारे जाएँ हम तो। पूछने वाले जब प्रश्न पूछते हैं। एक ने सीधे-सीधे प्रश्न पूछ लिया-आप हमेशा कपड़ा बाँधे रखते हो सिर पर नीचे शायद बाल नहीं है। मैंने कहा-बिल्कुल सच कह रहे हो बाल नहीं है। तुम्हारे जैसे लोगों ने खोपड़ी खाली कर दी है मेरी। बाल रह भी कैसे सकते हैं? बिल्कुल नहीं है।

जिज्ञासा का प्रश्न और माथा पच्ची और वक्त गुजारने के प्रश्न में बहुत अन्तर है। और यह दर्शन का प्रोफैसर लिन्ची को मिलने जाता है और बड़ी पहाड़ी चढ़ के हाँफता-हाँफता, पसीना-पसीना हुआ पहुँचा और इस संत की कुटिया में बैठा। चीन में रिवाज है आप के घर में, आपकी कुटिया में, आपके मठ में कोई आता है तो सबसे पहले बिना पूछे आप उसको चाय देते हैं। चाय पिलाना वहाँ की एक Ceremony भी है। धार्मिक

Ceremony, Tea making Ceremony होती है उन लोगों की। तो लिन्ची ने कहा-बैठो, मैं तुम्हारे लिए चाय लाता हूँ। तैयार नहीं है सो बना कर लाता हूँ। तो एक केतली में उसने चाय बनाई और फिर कप प्लेट में लेकर उसे प्रोफैसर के हाथ में रखी। तुम पकड़ो मैं तुम्हारे लिए चाय डालता हूँ। प्रोफेसर हाथ में पकड़े बैठा है और लिन्ची चाय डाल रहा है। तो चाय उड़ेल रहा है। डाल रहा है कप में, डालते-डालते कप भर गया पर वो अभी भी डाले जा रहा है। कप बहने लग गया। प्रोफैसर को लगा कि यह बन्द क्यों नहीं कर रहा है चाय डालना और जब प्लेट में चाय छलकी ही थी कपड़े पर गिरती तो कपड़े खराब होते तो प्रोफैसर ने कहा-सुनिये महाराज ! ये क्या करते हो? चाय गिर जाएगी। प्याली में अब जगह कहाँ है जो आप डालते जा रहे हो। रूक जाइये। अब चाय न डालिये। लिन्ची कहते हैं-तेरा मन भी तो प्रश्नों और उत्तरों से भरा पड़ा है। तेरे मन में भी तो लबालब दर्शन और ज्ञान की झूठी बातें भरी पड़ी हैं। मेरे ज्ञान की बात जा सके तेरे मन में, इतनी जगह ही नहीं है। इसलिए वापस चला जा, पहले खाली करके आ अपने मन को। फिर मैं तुझको ज्ञान का उपदेश दूँगा।

तेरा मन पहले से ही सुनी सुनाई, पढ़ी-पढ़ाई बातों से एक झूठा मान लिए बैठा है कि मैं ज्ञानी हूँ। मैं अक्लमंद हूँ, मैं विवेकी हो चुका हूँ, मैं परमज्ञानी हो चुका हूँ और दसियों (कई) किस्म की बातों को मन में लिए-लिए घूम रहे हो। मैं उत्तर दे सकूँ और मेरा उत्तर, तुम्हारे मन में जगह तब ही तो बनाएगा जब तुम्हारा मन खाली होगा। तुम्हारा मन खाली नहीं है अपने मन को खाली करके

आओ। गया था बड़े अभिमान से कि जा करके लिन्ची के परखच्चे उड़ा दूँगा। बड़ा संत हुआ....।

आदमियों को बड़ी तकलीफ होती है जैसे तुम्हारे घर परिवार समाज में कोई अचानक धनी हो जाए किसी की अचानक लाटरी निकल आए, अचानक धंधा बहुत अच्छा होने लग जाए, तो ईर्ष्या से जलने लग जाते हैं दूसरे लोग, तुम्हारे मित्र, परिचित। यहाँ ईर्ष्या करे तो समझ लगती है पर समाज तो फिर ऐसे व्यक्तियों से भी ईर्ष्या करने लग जाता है जो समाधि को उपलब्ध हो जाते। क्यों, उन्हें लगता कि हम तो बुद्धू के बुद्धू, यह बुद्ध हो गए। वाह-वाह! तुम कैसे कहते हो कि हम बुद्ध हैं। यही तो कारण है कृष्ण महाराज आते हैं तो लोग उनको ग्वाला, चोर, कपड़ा उठाई गिरा, छेड़ने वाला शरारती पता नहीं क्या-क्या उपाधियाँ देते फिरते थे। रामचन्द्र जी महाराज आते हैं तो ऐसे महापुरूष के गुण को, उसके व्यक्तित्व को समझने की अपेक्षा उनके व्यक्तित्व में खोट निकालने को तैयार बैठे हैं।

चाहे संत कबीर आते हैं, चाहे संत मीरा आती हैं। कहीं जहर के प्याले पीने पड़ते हैं और कहीं उनको बाँध करके...। कबीर को कहते गंगा में फैंक दिया था कि मर खप जाए यह। इसकी जुबान ऐसे ही बंद होगी और तो होगी नहीं कोई और तरीके से बहुत कठिन है। बहुत मुश्किल है कौवा वृत्ति और हंस वृत्ति। ख्याल करना, श्रोता जब कथा सुनता है न तो उसकी कथा सुनने का भी ढंग यही होता है। एक कौआ वृत्ति वाले बैठे होते हैं। पंजाबी भाषा तुममें बहुत लोग समझते हैं। वैसे मैं Clear कर दूँ।

पंजाबी भाषा में हम लोग कहा करते हैं श्रोता इस किस्म के होते हैं। ऊंघे चूंघे और सूंघे तीन किस्म के श्रोता।

ऊंघे श्रोता कौन है-कथा चल रही है और वो ऊंघ रहे हैं। नहीं समझे? कथा चल रही है और वो ऊंघ रहे हैं। दूसरे होते हैं-सूंघे, सूंघे कौन है? वो सूंघने को बैठे हैं कि इनकी कहाँ से गलती निकाले। आप यहाँ गलत बोले। आप वहाँ गलत बोले। आपने वो श्लोक ठीक नहीं बोला आपने वो ठीक नहीं कहा। हमें आपकी यह बात पसन्द नहीं। सूंघे माने वो Sniffers होते हैं न। Dog squad पुलिस वालों के Sniffers उनको बोलते हैं। जहाँ कुछ अपराध हो जाए तो उनको छोड़ देते हैं तो वो सूंघते-सूंघते-सूंघते कई दफा अपराधी तक पहुँच जाते हैं कि भई! इसने यहाँ पर कत्ल किया था। ऐसे ही कुछ श्रोता होते हैं जो सूंघने ही आते हैं Sniffers dog की तरह। सूंघते फिर रहे हैं कहाँ से पकड़ें बात और फिर लड़े महात्मा जी से कि तुमने ऐसे-कैसे बोला? वैसा कैसे बोला? ढिम्का कैसे बोला? नहीं समझे?और तीसरी किस्म के श्रोता हैं जिनको कहती हूँ मैं चूंघे। चूंघना माने पीना। चूंघना, पीना। जैसे कहते हैं न बछड़ा गाय को चूंघ रहा है माने दूध पी रहा है। ऐसे ही कुछ श्रोता हैं जो बोलने वाले संत को पीने आते हैं। न तो सोने आते हैं। न तो लड़ने आते हैं। वो तो संत की वाणी को पीने आते हैं और सच कहूँ संत की वाणी को क्या संत ही को पीने आते हैं। पी जाते हैं।

"ला पिला ऐ साकिया, ला पिला ऐ साकिया
आए हैं तेरी महफिल में हम
न माँग दाम हमसे
हम गरीबों से, क्या मोल चुकाए जाएंगे"

तीन किस्म के श्रोता। और तुम देखो तुम किस Category में आते हो। ऊंघने वाले, चूंघने वाले कि सूंघने वाले। खैर स्वागत तो तीनों का है। एक ने मेरे से कहा वो महाराज पीछे जनानी बैठी थी वो सो रही थी। मैंने कहा-शुक्र है क्या मालूम कितनी रात वो सोई नहीं होगी। क्या मालूम, घर की कितनी परेशानी उसको आई होगी कि दवा खा-खाकर के भी नींद न आई होगी तो शुभ हुआ उसके लिए प्रसाद मिल गया। उसके मन को आराम मिल गया उसके तन को आराम मिल गया। मुझे कोई आपत्ति नहीं भले सो जाए।

एक ने कहा-महाराज! यह जो बंदा है न यह हमेशा कथा के बाद कुछ न कुछ लड़ने की तैयारी करके आता है। मैंने कहा-अच्छी बात है। लड़ने वाले आएंगे तो नाम भी हो जाएगा। ख्याल रखना चुपचाप कथा चले, चुपचाप कथा समाप्त हो जाए बात नहीं बनती। यहाँ कुछ ऐसा कोई विवाद, कोई बात उठ खड़ी हो तो दस बंदे सोए हुए भी जग जाते हैं कि क्या बात हो रही है। चूंघने वालों का तो स्वागत है ही क्योंकि रस पिलाना और पीना ये दो ही तो काम हैं अपने। और तो कोई तीसरा काम है नहीं निठल्ले हैं बिल्कुल। एक ही काम करना आता है और कोई काम नहीं आता है।

कौआ वृत्ति नहीं हंस वृत्ति। हंस माने संतोष। हंस माने ज्ञान। हंस माने आनन्द। आप हंस बनना सीखो और

"मेरे सतगुरू दीन दयाल काग से हंस बनाते हैं"

ऐसा नहीं है कि जो एक बार कौआ हो गया वो कौआ ही रहेगा फिर हंस नहीं हो सकता है बिल्कुल हो सकता है और याद

रहे, ऐसा नहीं है कि जो हंस हो गया वो फिर कौआ हो सकता है। नहीं, जो एक बार हंस हो गया वो फिर परमहंस तो हो सकता है पर वापिस कौआ...। कौआ हंस हो सकता है। ख्याल रखना अज्ञानी ज्ञानी हो सकता है। पर ज्ञानी फिर पलट कर अज्ञानी नहीं हो सकता। यही तो मज़ा है हंस हो जाने का। यही तो मजा है आत्म पदवी को उपलब्ध हो जाने का। यही तो मजा है भगवान के इस भक्तिमय रास्ते पर चलने का। एक बार चल पड़े, एक बार भक्ति की रसधार दिल में बहने लग गई फिर तुम्हारा दिल कभी रेगिस्तान नहीं होगा। पक्की बात।

संसार में खुशी आए-आए, जाए-जाए। दुःख आए कि जाए। मृत्यु आए कि जाए। जन्म हो कि न हो। मिलना-बिछुडना सब चलता रहता है न भला। लेकिन एक बार जिसके दिल में सरसता प्रेम की, सरसता भक्ति की आ जाए फिर उनकी आँख में आँसू, भगवान के विरह में तो आ सकते हैं, भगवान के वियोग में तो आ सकते हैं, संसार की चिन्ता में कभी नहीं आते। कौआ हंस हो सकता है। हंस हो गया, परमहंस हो सकता है पर हंस बनके फिर वापिस लौटना, वो नहीं कभी हो सकता।

The point of no returning. वापसी यहाँ से कोई नहीं। One way ticket. Two way ticket नहीं है। Two way ticket माने आप यहाँ से अमेरिका। अमेरिका से फिर लौट आए। पर एक One way ticket बनती है। मंहगी बनती है। मालूम तुम्हें? Two way ticket सस्ती होती है। One way ticket मंहगी। भले तुम भारत भर में जाओ या भारत के बाहर जाओ। Two way ticket सस्ती और One way ticket मंहगी होती है।

ख्याल रहे जो सुन रहा है इसलिए कि सुन रहे हैं पर करेंगे वही जो हमको करना है। वो बड़ी सस्ती कथा सुनते हैं और याद रहे उनको सस्ते कथावाचक ही फिर अच्छे लगते हैं। जिसको पैसा रुपया देकर मँगा लिया। कथा करवाई, कथा कराने का पुण्य बटोर लिया और फिर उसको कहा, "चलो महाराज अब बोरिया बिस्तर उठाओ और चलो।"

तुम जानते हो कि पहले इस शहर में अलग-अलग धार्मिक संस्थाओं के बुलाने पर आया करती थी। कभी मन्दिर में हूँ तो कभी गुरूद्वारे में। तो मैंने अक्सर देखा जब उनका कार्यक्रम पूरा हो जाता तो उनका भाव यही होता था कि महाराज अब कौन सी train में चढ़ा दें आपको? हमारा Programme निपट गया। हमारा काम हो गया अब आप कब चलेंगे। यह कमरा कब खाली करेंगे?

क्योंकि मैंने फिर यह देखा कि ज्यादा करके Organizations के जो Members होते हैं न So called religious organizations. इनसे ज्यादा Irreligious और कोई नहीं होता। इनसे ज्यादा इन धार्मिक So called धार्मिक व्यक्तियों में ज्यादा अधार्मिक और ढूढ़े भी नहीं मिलता है कोई। उनका मकसद सुनना नहीं है उनका मकसद जागना नहीं है। उनका मकसद आनन्द में विभोर होना नहीं है। उनका मकसद है कि हमारी संस्था ने इतना बड़ा कार्यक्रम किया तो हमारी छाती ठुकती है, हमारी छाती बड़ी होती है। मैं उस जगह का प्रधान था। मैंने प्रोग्राम कराया तो ऐसा भाव रहता है।

फिर धीरे-धीरे संगत करते-करते जो थोड़े से सिरफिरे दीवाने मेरे साथ जुड़े तो उन्होंने कहा कि अब तो कुछ और किया जाना चाहिए। तो मैंने कहा बस फिर तुम्हीं करो जब तक होगी

इच्छा बैठेंगे जब होगा जाना तो मैं अपनी इच्छा से जाऊँगी न कि कोई मुझे पूछ रहा हो कि आप कमरा कब खाली...।

अब मैं कहूँ सीधे-सीधे थोड़ी कहते हैं। हम भारतीय लोग कोई बात सीधे नहीं कहते। हम भारतीय लोग सीधे हैं भी नहीं। भारतीय तो बहुत टेढ़ा आदमी है। बहुत टेढ़ा है। सीधी बात नहीं कहेगा। गोरी चमड़ी वाले इन अमरीकियों को मैंने देखा ये बड़े सीधे होते हैं। अगर मान लीजिए पत्नी पसन्द नहीं है या आज किसी बात पर पत्नी को पति पसन्द नहीं है तो साफ कह देते हैं। Please go out of the home. बात खत्म हो गई। तुम्हारा मेरा रिश्ता खत्म हो गया। पर यहाँ तरीका दूसरा है। सीधे नहीं बोलेंगे डाँटेंगे, डपटेंगे, इधर कमी निकालेंगे, उधर लड़ेंगे, उधर झगड़ेंगे। लाई क्या थी ? तरस करके तेरे से ब्याह कर लिया था। तू, तेरा क्या है? तेरा परिवार क्या है? तेरा रूतबा क्या है? तो ऐसे Indirect बातें कहते। Indirect torture इतना करे कि या तो वो ही घर छोड़ के चली जाए और या कुछ ऐसी बन जाए कि घरवाले कहें कि भई तुम अलग-अलग हो जाओ। हालांकि यहाँ वैसे अलग-अलग होने वाला काम बड़ा मुश्किल होता है।

बात अपनी कहने के लिए यह जो स्वतन्त्र मंच मैंने चुना इसलिए कि एक तो स्वतन्त्रता पूर्वक मैं अपनी बात कह सकूँ और दूसरे स्वतन्त्रता पूर्वक आप मेरी बात को सुन सकें। किसी को यह न लगे....। आज के इस कार्यक्रम में तुम जानते हो सबसे पहली माला मुझे एक मुसलमान ने पहनाई है। और ख्याल करना किसी So-called religious institution के अन्दर होती तो शायद, (शायद मैं कह रही हूँ) शायद कहीं कोई आपत्ति भी कर देता। कि ये क्यों है? वो क्यों

है? अब यहाँ बैठे हैं। इस भगवान की बनाई जमीन के ऊपर।

"न घर तेरा, न घर मेरा
मन्दिर है भगवान का"

तो जो चाहें बात कह सकते हैं। जो चाहें बात सुन सकते हैं। फिर कहूँ मैं, कौआ हंस हो सकता है। हंस वापिस कौआ कभी नहीं हो सकता। अज्ञानी ज्ञानी हो सकता है लेकिन तत्व ज्ञानी हो चुका आदमी फिर दोबारा अंधेरे में भटक नहीं सकता है। इसलिए मैं खुली बाहों से, खुले शब्दों से और प्रेम से आप लोगों को आमन्त्रित करती हूँ। आओ, आने वाले अगले कुछ दिनों में हम हंस कैसे हो जाएँ, हम परमहंस कैसे हो जाएँ, हम अपने अन्दर के उस साम्राज्य की समझ कैसे कर लें? हम अपने भीतर के उस परब्रह्म, परमात्मा के प्रकाश को कैसे पा लें? उसकी चर्चा करेंगे और बात तो बिल्कुल तय है कि :

"तय होंगी मंजिलें फिर यूँ इश्के आरजू की
कुछ उसने जुस्तजू की कुछ मैंने जुस्तजू की।"

कुछ आप दत्तचित होकर के सुनने को तैयार रहना और कुछ मैं अपना दिल खोलकर अपने दिल की बात को तुमसे Share करूँगी। और भगवान अपार कृपा सागर है और उसकी कृपा की बूँदे तो बरस ही रही हैं सब ओर। उस रस की बूँद का स्वाद तुम भी चख सको हमारा कुल मकसद यहाँ बैठने का, आने का इतना भर है। इससे ज्यादा कुछ नहीं।

फिर संसार की उस गारो गर्त से एक बार जो उठ जाओगे तो वापस फिर उस गारो गर्त में गिरोगे नहीं। और ख्याल रहे मुश्किल

कुछ नहीं है मैं इतना जरूर तुमको कह सकती हूँ। मैं इतना वायदा तुमसे जरूर कर सकती हूँ, यह कठिन नहीं है। जो तुमको कहते हैं न तुमको कि इस मार्ग पर चलना कठिन है वो तुम्हारे साथ कितना बड़ा अन्याय कर रहे हैं। भगवान ने कोई शर्त नहीं लगाई कि मेरे पास आने वाला ये करे, ये करे, ये करे तो आए। ये सारी शर्तें ये बीच वालों ने लगाई हैं। ये करो, ये करो, ये करो तो भगवान प्रसन्न होंगे। भगवान की तरफ से कोई शर्त नहीं है।

भक्ति मार्ग में परमात्मा के प्रति एक भाव रखा जाता है कि भगवान आप हमारी माँ है। आप हमारे पिता हो। आप श्लोक पढ़ते हो-

"त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव"

आप ही मेरे बंधु हैं, आप ही मेरे मित्र हैं, आप ही मेरी माता हैं, आप ही मेरे पिता हैं। भाव, कि आप ईश्वर से कोई भी सम्बन्ध जोड़ें। अब ये सारे ही सम्बन्ध ऐसे हैं जिसमें औपचारिकता बिल्कुल कोई नहीं है। बच्चा गन्दा हो, मैला हो, कुचैला हो, माँ गोद में बिठा लेती है। बच्चे ने साफ, उजले कपड़े न पहने हों, बहुत सयाना न भी हो तो भी माँ-बाप को बड़ा प्यारा लगता है तो भी बाप उसको गोदी में बैठा करके अपना वात्सल्य देता है इसी प्रकार से बंधु जो मित्र हैं। और मित्र तो फिर इतनी खुली भाषा....। कि कई एक मित्रों को तो मैंने देखा कि उनकी बातचीत गालियों से हो रही है। मैंने कहा-ये, ये क्या हो रहा है ! बोले-कुछ नहीं। पुराने मित्र हैं देर बाद मिले हैं। तो देर बाद मिलने का ढंग कि वो इतना Casual हो जाते हैं। वो एक दूसरे

को जाने किन-किन बुद्धू, भोंदू जाने किन शब्दों से बुलाते है और सामने वाले को गुस्सा भी नहीं आ रहा है।

कहा-ईश्वर को तू अपना बंधु समझ ले और जैसे आप अपनी माँ के घर, पिता के घर, अपने प्यारे मित्र के घर बेझिझक जा सकते हो। कोई शर्त नहीं है। जैसे आजकल शादी ब्याह में....। पहले तो होता था कि एक गाँव में शादी तो गाँव भर का निमन्त्रण बिना कहे हो जाता था। वो सबको लगता था ये तो हमारा ही है ब्याह। हमारा ही, घर का ब्याह है। अब तरीका यह हो गया है कि वो कार्ड के ऊपर लिख देते हैं न Only two persons. अब Five Star में ब्याह हो रहा है तो Only two persons. और जिस में सबको बुलाना हो तो लिख देते हैं With all family. माने सब आ जाओ। तो पहले नहीं ख्याल करते थे आजकल महानगरों में जब एक दूसरे को वो कार्ड देते हैं तो पहले पढ़ते हैं कि कितने लोगों को आमन्त्रित किया गया।

अच्छा, कुछ एक पार्टियाँ ऐसे भी सुनने को मिली जहाँ वो लिख देते हैं No children allowed. बच्चे को न साथ लाइयेगा। बड़ों का ही होगा। और कुछ फिर जब बच्चों की ही Party होती है तो उसमें लिखते हैं Parents not allowed. Only children allowed. खाली बच्चे भर ही आएँ। तो वो शर्त है वहाँ पर कि इतने आओ इतने न आओ। और ऐसे आओ और ऐसे न आओ। जैसे कुछ एक Clubs में ऐसा सुना कि Three piece सूट पहना हो तो ही जा सकते हैं नहीं तो नहीं जा सकते।

तुम्हें मालूम है-महात्मा गाँधी जब गोलमेज Conference

में इग्लैंड गए तो इनको भीतर पहले प्रवेश नहीं दिया जा रहा था। वो कह रहे थे यह क्या बंदा लंगोटी लगा करके....।

Naked man can not enter ये नंगा आदमी अन्दर नहीं जाएगा। जा करके कोट पैंट पहन के आओ। Dress-code, ड्रेसकोड है हमारा। उसके बगैर हम भीतर नहीं जाने देंगे। मसला हो गया था। खैर किसी तरह से फिर प्रवेश मिला और बातचीत जो भी हुई सो हुई।

तो और कहीं जाना हो तो उसमें शर्ते हैं लेकिन भगवान के घर जाने के लिए कोई शर्त नहीं है। परमात्मा के घर में कोई शर्त नहीं कि तुम ऐसे ही जाओ। अब कई लोग कहते हैं सतोगुणी हो जाओ, उज्जवल हो जाओ तो भगवान के घर में प्रवेश मिलेगा। प्रश्न ये उठता है अगर उज्जवल हो गए तो घर में प्रवेश की जरूरत ही क्या रह गई? अगर हम पुण्य आत्मा हो ही गए तो फिर क्या जरूरत रह जाएगी भगवान की चरण शरण जाने की? भगवान ने कोई शर्त नहीं लगाई। वो कहते-जैसे हो तुम, जैसे भी हो। भले तो भले आ जाओ। बुरे तो बुरे आ जाओ। आ जाना ही बहुत होगा। किस हाल में आए हो वो हाल मायने नहीं रखता।

आज के प्रथम दिवस इतना ही कह करके मैं वाणी को विराम दूँगी। आप सब लोगों का मैं हृदय की गहराई से स्वागत करती हूँ। उम्मीद नहीं मैं करती। शायर कहता है-

"कोई जागे न जागे,

आवाज़ लगाना हमारा काम है।"

मैं उम्मीद नहीं कर रही हूँ। आवाज़ लगाऊँगी। बात कुछ

रखूँगी। कुछ बात जम जाए। कोई दिल में क्रान्ति उठ खड़ी हो
अत्याधिक प्रसन्नता उसमें मेरी होगी। शेष चर्चा कल करेंगे।

आशाओं से मुक्त
पुरूष ही संत है

जो ऐसी कृपा हो जाए प्रभु मुझे तेरा दर्शन मिल जाए।
अपना यहाँ पर कोई न था पर मेरा-मेरा किया मैंने,
इक बार जो मेरा तू हो जाए
दुनिया से किनारा मिल जाए।
जीना न आया कभी मुझे मरता हर आस के टूटने पर,
कुछ और नहीं जीना ही सिखा
मन आस निरासा हो जाए।
तू पास ही मैं देखूँ न, कैसा ये पर्दा बीच पड़ा,
इक अपनी नजरे करम कर दे अज्ञान का पर्दा मिट जाए।
मन मस्त रहे तन झूम उठे ऐसा नशा पिला दे तू,
आनन्द का प्याला पी लूँ मैं ऐसी जो मस्ती मिल जाए।

जो ऐसी कृपा हो जाए प्रभु मुझे तेरा दर्शन मिल जाए।
अपना यहाँ पर कोई न था पर मेरा-मेरा किया मैंने,
इक बार जो मेरा तू हो जाए
दुनिया से किनारा मिल जाए।
जीना न आया कभी मुझे मरता हर आस के टूटने पर,
कुछ और नहीं जीना ही सिखा
मन आस निरासा हो जाए।
तू पास ही मैं देखूँ न, कैसा ये पर्दा बीच पड़ा,
इक अपनी नजरे करम कर दे अज्ञान का पर्दा मिट जाए।
मन मस्त रहे तन झूम उठे ऐसा नशा पिला दे तू,
आनन्द का प्याला पी लूँ मैं ऐसी जो मस्ती मिल जाए।

जीना सिर्फ श्वास भर आने-जाने का नाम नहीं है। और जीना किसको कहते हैं? और वह जीना है कैसा जिस जीने की माँग इन पंक्तियों में मैंने की।

"जीना न आया कभी मुझे, मरता हर आस के टूटने पर, कुछ और नहीं जीना ही सिखा, मन आस निरासा हो जाए।"

ख्याल रहे पशु का बच्चा लगभग पूर्ण पैदा होता है। हर बालक, पशु का हो, पक्षी का हो जैसे ही वो जन्म लेते हैं जन्म से चन्द ही दिनों में वे चलने लगते हैं, दौड़ने लगते हैं भागने लगते हैं। एकोएक मनुष्य का बच्चा है जिसको वर्षों का पालन पोषण, वर्षों का ध्यान, माँ-बाप का ख्याल, बाप की प्रेरणा, बाप की सुरक्षा, माँ के द्वारा दिया भोजन, सब मिलना चाहिए। पशु का बच्चा पैदा होने के बाद माँ-बाप से जुदा हो जाए तो थोड़े ही दिन में वह

अपने बलबूते पर शिकार करना, खाना सीख जाता है। लेकिन अगर कहीं इन्सान का बच्चा उसके माता पिता से जुदा हो जाए तो बहुत सम्भावना है ठंड से मर जाएगा, भूख से मर जाएगा। अन्यथा कोई दूसरा जानवर ही उसको शिकार करके खा जाएगा।

पशु की संतान को देख रेख की जरूरत बहुत दिनों तक नहीं रहती है। पर मनुष्य के बच्चे को बहुत देख-रेख की जरूरत रहती है। ख्याल रहे-हर चीज के दो पक्ष होते हैं उसका लाभ और उसकी हानि। जहाँ पशु का बच्चा चंद ही दिनों में अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है अपने जीवन की बागडोर अपने हाथ संभाल लेता है और पूर्ण है उससे ज्यादा वह...।अब कुत्ता-कुत्ता ही रहेगा चाहे 40 साल का हो जाए। गधा-गधा ही रहेगा चाहे 20 साल को हो जाए। बिल्ली-बिल्ली ही रहेगी चाहे वह 12 साल की हो जाए। तो एक जो उनकी रचना हो जाती है उनके तन का विकास भले होता है लेकिन उनकी बुद्धि और मन का विकास बिल्कुल भी नहीं न के बराबर। जितना भर जीवन रक्षा हेतु उनको चाहिए उतना प्रकृति ने उनका System बना दिया By Birth जन्म से ही उनको मिल जाता है। लेकिन मनुष्य का बच्चा चूंकि अपूर्ण पैदा होता है तो शरीर के नाते भी माँ-बाप की देख-रेख की जरूरत रहती है और फिर समाज, और अध्यापक और शिक्षा, और फिर वातावरण उसको बहुत कुछ सिखाते हैं तो शरीरिक विकास के साथ-साथ इस इन्सान के बच्चे का मन का विकास भी शुरू हो जाता है। बौद्धिक विकास भी होने लग जाता है और फिर यह विकास होते-होते तक एक कुत्ते का बच्चा तो 10-12 साल की उम्र के बाद भी वह कुत्ता ही रहेगा उसका

कोई और डिग्री नहीं मिल जाने वाली। वह जैसा है वैसा ही रहता है। कोई विकास मानसिक अथवा बौद्धिक उसका नहीं होता है लेकिन मनुष्य का बच्चा उपयुक्त देख-रेख, वातावरण मिलने पर बहुत विकास करता है और बहुत सम्भावना है कि एक उम्र के बढ़ते-बढ़ते-बढ़ते अब उसमें बहुत से गुण अथवा दुर्गण आने शुरू हो जाते हैं। या तो वह एक बुरा व्यक्ति बन जाएगा या तो वह एक अच्छा व्यक्ति हो जाएगा। या तो असाधू होने लग जाएगा। या तो वो साधू होने लग जाएगा। तो विकास हो रहा है। या तो विषयी पामर हो जाएगा। और या तो फिर विरक्त त्यागी हो जाएगा। लेकिन कुछ न कुछ Change होगा। कुछ न कुछ बदलाहट होगी। इसीलिए मनुष्य होने का जहाँ एक नुकसान यह है कि आपको बहुत संभालना पड़ता है। आपके शरीर और मन को बहुत देख रेख की जरूरत है। वहाँ लाभ यह भी है कि आपके पास पूरे-पूरे मौके रहते हैं कि आप जिधर चाहें आप अपना विकास कर सकते हैं।

एक उदाहरण मैं देना चाहूँगी। जर्मनी का तानाशाह हिटलर। दुनिया जानती है लाखों-लाखों यहूदियों का कातिल है वह। गैस चैम्बरस में डालकर के सामूहिक हत्या करने वाला यह दुर्दान्त तानाशाह हिटलर, कभी किसी जमाने में पेन्टर होना चाहता था। चित्रकार होना चाहता था और कहते हैं कि एक स्कूल में, पेन्टिग के स्कूल में वो Admission लेने जब गया तो उसको उपयुक्त न मानकर के दाखिला नहीं दिया गया। वहाँ दाखिला न मिलने के कारण इतने अंहकार को चोट लगी कि फिर चित्रकारी का ख्याल भी उसने दिमाग से निकाल दिया। और फिर ख्याल रहे। चित्रकारी करने का जो

उसके भीतर जो वो एक भाव था उसकी मनः स्थिति उसके वातावरण और उसकी बुद्धि ने फिर कुछ ऐसा मोड़ लिया कि फिर उसने रंग तो बिखेरे पर किसी Canvas पर नहीं मनुष्य के खून के रंग बिखेर दिए। रंग तो अब भी बिखेरे उसने। कहते हैं वह जिन लोगों की हत्या करता उन लोगों की विशेषतः स्त्रियों के मूंड मुंडवाता। लम्बे-लम्बे बाल होते अपने सामने मुंडवाता और उन बालों से रस्सियाँ बनवा करके Army में वो as a रस्सी use करने के लिए भिजवाया करता और उसको बड़ा आनन्द मिलता था।

ख्याल रखना कहीं विधायक पक्ष चित्रकारी का कि चित्र बनाता तो शायद सोभासिंह जैसा हो जाता। पर वो भीतर था लेकिन उपयुक्त वातावरण, सही-सही दिशा निर्देश, सही-सही वातावरण न मिलने के कारण कितना ह्रास हुआ। कितना पतन हुआ। न केवल उसका बल्कि उसके कारण कितने लाखों लोगों को अपनी जान से हाथ धोने पड़े।

आदमी के पास पूरी-पूरी Potentiality है। मनुष्य होना एक बीज जैसा है। अब बीज को अगर तुम पत्थर पर दे मारो कुछ नहीं होने का है। इसी बीज को तुम मिट्टी में दे मारो और मिट्टी में उसको सही हवा पानी मिल गया तो जाने कौन सा वृक्ष निकल आए कि वो बरगद हो, कि पीपल हो, कि आम हो, कि जामुन। लेकिन जितनी देर तक आपने बीज को मिट्टी में बोया नहीं है, उतने देर तक बीज-बीज ही रह जाएगा, बीज वृक्ष कभी नहीं बन पाएगा। बीज में वृक्ष होने की क्षमता है पर जिस बीज को सही हवा पानी और सही मिट्टी मिल जाए वह बीज फलीभूत हो जाएगा, फल देगा, फूल देगा लेकिन बीज-बीज रह जाए उसे सही मिट्टी न मिले तो आप कभी उस बीज से न तो मीठे फल खा सकोगे, न तो

सुन्दर फूल ले सकोगे, न ही अपने आपको सुन्दर बना सकोगे उसके फूलों के साथ।

मनुष्य की सम्भावना भी एक बीज की तरह से ही है। अगर इस बीज को सही-सही रोपा जाए, अगर इस बीज का सही-सही पालन पोषण किया जाए तो इसका विकास इतना हो सकता है कि ये चरम सीमाओं को छू जाए। तो जीना मैं किसको कहती हूँ? सही जीना वो जिनकी भीतर की Potentiality अब बाहर निकलनी चालू हो गई। जो अपने अंतर के गुणों को पहचान पाए, जो अपने आस-पास की प्रकृति के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ पाए, जो खोज पाए, जो देख पाए। कितने लोग हैं जो खुली आँख जी रहे हैं? कितने लोग हैं जो अपने आस-पास की प्रकृति की छटा को महसूस कर पा रहे हैं और कितने लोग हैं जो मन की गहराई में जा करके असीम आनन्द की प्राप्ति कर पा रहे हैं? कितने लोग हैं जो इसी मन से.....। शास्त्र कहता है-

"मनैव मनुष्यानाम कारणम् बंध मोक्षयो"

इस मन से बन्धन में चले जाओ, इस मन से मुक्ति को चले जाओ अर्थात् इस मन से अज्ञानी हो रहो, इस मन से ज्ञानी हो जाओ। इस मन से तुम मीरा जैसी मतवाली भक्ता हो जाओ। इस मन से तुम तानाशाह हो जाओ। ख्याल रहे सब कुछ इसी मन से हो रहा है। सारी सम्भावनाएँ तुम्हारे इसी मन में हैं और इन सम्भावनाओं का सही-सही उपयोग, सही-सही प्रयोग कितने लोग कर पाते हैं। अगर सत्य कहूँ तो बहुत कम गिनती के हैं। मनसविद् मनोवैज्ञानिक भी इस तथ्य को पूरा-पूरा प्रमाण दे करके

स्वीकार करते हैं। वे कहते हैं मनुष्य जाति में मात्र गिनती भर
लोग हैं जो अपनी बुद्धि का पूरा प्रयोग करते हैं। प्रयोग भी न
करते हैं। बुद्धि का प्रयोग उनका उतना ही है जितना प्रयोग ए
पशु करता है खाने, पीने, रहने, सोने, जन्म देने इत्यादि कर्म
लिए। इतने भर के लिए।

जीवन यापन करना भर। तो अगर इतना भर कर्म तुमसे
रहा है तो फिर पशु और मनुष्य के भीतर ज्यादा अन्तर, कहाँ अन्त
रह गया? कोई अन्तर नहीं। मनुष्य की श्रेष्ठता सिर्फ इसमें न
है कि वह अपने शरीर का पालन पोषण करके, अपने सी संता
की उत्पति कर दे। मनुष्य की श्रेष्ठता इसमें है कि वह जीवन
श्रेष्ठ मूल्यों की पहचान करे।

अब मैं एक छोटी सी बात कहना चाहूँगी। सुबह तुम्हारी शु
हुई। सुबह उठते सार तुम्हारा खाना पीना चालू हो जाता है। ए
तो यह जो बला आजकल चलती है बड़ी पुरानी है बला। अंग्रेज
की देन Bed tea दिन की शुरूआत, आँख में कीचड़, मुख
जमाहियाँ और Bed tea, बिस्तर में पड़े-पड़े जो चाय आप लो
पीते हो। जो दिन की शुरूआत तुम्हारी चाह (चाय) से होती है
ख्याल रखना चाह ही तो भटकाती है। चाहे वह प्याली वाली
चाहे वह मन वाली हो। दिन में तुम्हें वह सुबह तुम्हारा पहला प्याल
न मिल जाए तो घरों में झगड़े हो जाते हैं। चाय नहीं मिली आज
सुबह की। तो चाह (चाय) से शुरू हुई। तो खाना-पीना नहा
-धोए। कोई काम धंधे को चला गया कोई घर के धंधे में ल
गया। और दिन रात कट रहे, कट रहे, कट रहे और कट रहे कि
लक्ष्य के लिए। अच्छा खा सकें, अच्छा पहन सकें, अच्छा मका

हो जाए, अच्छी गाड़ी हो जाए? ख्याल रखना मैं विरोधी नहीं हूँ। भले मेरे कपड़े संन्यासियों के हैं, भले मेरा वेष संत का है। लेकिन मैं अपने आपको त्यागी नहीं मानती हूँ। चूंकि संसार में त्यागने लायक कुछ नहीं है। सच बात तो यह है और त्याग हम उसका करें जो हमारा हो। तो हमारा है ही क्या, जिसका हम त्याग करेंगे। ख्याल करना तुम्हारे जो तथाकथित त्यागी हैं जिनको तुम त्यागी कहते हो, इन्होंने कपड़े त्याग दिए, इन्होंने खाना त्याग दिया, इन्होंने मकान में रहना त्याग दिया तो ख्याल रखना इसमें कौन सी बड़ी बात है।

सभी जानवर नंगे रहते सभी ने कपड़ों का त्याग कर रखा है। सभी जानवर जो हैं वो मिठाइयाँ नहीं खाते वह घास-पात खा लेते हैं। सभी जानवर जो हैं खुले पेड़ों के नीचे या पेड़ों के ऊपर घोंसलों में रहते हैं तो आप उनको इतने भर से त्यागी तो नहीं कहते। न ही उनके पाँव छूने जाते हो। लेकिन आदमी ऐसा कर दे तो तुम्हें लगता है कि मैं नंगा खड़ा नहीं हो सकता बाजार में, यह नंगा हो गया तो यह महात्मा हो गया। यह बड़ा हो गया। यह त्यागी हो गया। मैं ऐसे त्याग को त्याग नहीं मानती हूँ। मैं ऐसे त्याग को संत होने का लक्षण भी नहीं मानती हूँ और फिर खास तौर पर जो त्याग दिखाने के लिए किया जा रहा हो।

पिछले दिनों मुझे एक बड़े प्रसिद्ध जैन आचार्य के एक शिष्य मिले, मुनि। मैंने उससे पूछा-मैंने कहा,तपस्या महावीर जी का मार्ग था। तप उनका मार्ग था। तन को, मन को तपाना उनकी साधना थी। तो आप अपने आप को अगर उनके अनुयायी कहते हैं तो तप आपकी साधना होनी चाहिए लेकिन एक छोटा सा संशय है मुझको।

क्या आप कृपा करके उसका समाधान करेगें? मुनि जी कहते
कि कहिये। मैंने कहा-एक बात बताइये अक्सर समाचार पत्रों क
जब पढ़ते हैं तो किसी न किसी जैन मुनि किसी न किसी जै
साधू का जिक्र रहता है उन्होंने 150 दिन केवल पानी पीक
उपवास किया। वे इतने दिन तक मौन रहेंगे। वे इतने दिन तक
अन्न नहीं खाएँगे। मैंने कहा इसका ये पर्चा, ये इश्तिहार बाजी
ये विज्ञापन क्यों चलता है?

महावीर जी ने अगर कपड़े छोड़े तो उन्होंने कोई विज्ञापन तो
नहीं दिया था कि कल से मैं कपड़ों का त्याग करने लगा हूँ। तो
ऐ दुनिया के लोगो ! मेरे इस त्याग को देखने आओ और फिर से
आर्शीवाद ले जाओ और फिर अपनी मनोकामना पूरी कर लो।
महावीर जी से तो कपड़े छूट गए थे, छोड़े नहीं थे उन्होंने। याद
रहे, छूट गए थे छोड़े नहीं थे उन्होंने। तुम चाह करके छोड़ रहे हो।
तुम मानते हो अन्दर, कहीं तुमने ऐसा माना कि मकान मेरा है, धन
मेरा है, कार मेरी है तो मैंने इसका त्याग किया। ख्याल रखना,
त्याग तुम किसका करोगे? जिसको तुम पहले अपना मानते हो,
अपनी मिलकियत जानते हो, अपनी Ownership अपनी Propri-
etorship तुम जानते हो तो ही तो कहोगे न कि यह मेरा था और
मैंने इसको छोड़ा, मैंने इसको त्यागा।

मैं एक प्रश्न पूछती हूँ तुम्हारा है क्या? तुम्हारे लिए मेरा
कहने को है क्या? और जब तुम्हारे पास मेरा कहने को कुछ है
ही नहीं तो तुम कैसे कह सकते हो कि मैंने त्याग कर दिया, जब
तुम्हारा था ही नहीं। तुम यह भी नहीं कह सकते कि मैंने त्याग कर
दिया। मैं यह नहीं कह रही हूँ कि अच्छा कपड़ा न पहनना अब मै

यह भी नहीं कह रही हूँ कि धूल ध्वांस भरके जरा तुम ज्यादा साधू हो जाओ। और मैं यह भी नहीं कहती हूँ कि तुम अपना घर अच्छा न बनाना, पर मैं यह जरूर कहती हूँ कि घर भर ही तुम्हारे जीवन का लक्ष्य नहीं होना चाहिए। बढ़िया दो मंजिला, चार मंजिला मकान भर बना लेना ही तुम्हारा लक्ष्य नहीं हो जाना चाहिए।

महानगरों में मैंने हालत देखी। अब कहते कि एक घर, एक बंगला तो शहर में है अब एक फार्म हाऊस बाहर भी होना चाहिए और जिन गाँवों को कोई पूछने को भी तैयार नहीं था उन गाँवों की जमीन सोने के भाव बिक रही हैं। क्यों? दौड़ लग गई है एक का है तो मेरा भी होना चाहिए। तेरा भी होना चाहिए। तो जिसकी जिन्दगी का कुल लक्ष्य इतना भर ही है कि मेरा यह हो जाए, मेरा वह हो जाए, मैं इतना बना लूँ और वो भी अपनी सन्तुष्टि के लिए नहीं, ख्याल रखना वो भी दूसरे को दिखाने के लिए। तो यह जीना, जीना न हुआ। इस जीने को हम जीना नहीं कहेंगे यह पशु तुल्य ही है। हालांकि पशु फिर मनुष्य से और सयाना। वह एक जानवर का शिकार करता है।

तुम जानते हो शेर शिकार करने पर जितना खा सकता है, खा लेता है बाकी सियारों के लिए छोड़ देता है। एक दिन का बासी माँस शेर नहीं खाता है। शिकार किया, मेहनत किया और जितना खा सके खाएगा और फिर उसके बाद वह बचा-खुचा मरा हुआ जानवर, जितना माँस बचा रहे वो छोड़ जाता है और सियार, वे दूसरे-दूसरे जानवर, वे आस-पास घूमते रहते हैं कि जब बादशाह महाराज जाएंगे तो फिर हम लोग...। उनकी किट्टी पार्टी चालू हो जाती है फिर।

अब तुमने थोड़े से धन में से या अन्न में से थोड़ा दान कि
तुम उसका कितना पोस्टर पर्चा करते हो, विज्ञापन करते हो।
जैसा, जानवर हो करके रोज अपने भोजन का इतना त्याग
देता है। कइयों का पेट पालता है, समाजवादी है पूरा। अपना
नहीं दूसरों का भी ख्याल रखता है। जीना किसको तुम कहो?

"जीना न आया कभी मुझे, मरता हर आस के टूटने पर

आदमी जीता है आशा से। युधिष्ठिर से कहते हैं-यक्ष
प्रश्न पूछा था। महाभारत की कथा है। प्रश्न किया था यक्ष
युधिष्ठिर से कि युधिष्ठिर बताओ किसके बलबूते जीता है आदमी
किसके बलबूते जीता है? और देख अगर प्रश्न का उत्तर गल
हुआ तुम्हारी हत्या कर दूँगा। जैसे तुम्हारे अन्य चार भाइयों को मैं
मारा। ऐसे मार दूँगा। युधिष्ठिर ने बड़े शान्त भाव से उत्तर दिय
उसने कहा-आदमी सिर्फ आशा के सहारे जीता है। न पत्नी
सहारे, न पति के सहारे, न बाप के, न कुल के, न धन के। सि
एक के सहारे जीता है। वह है-आशा। सिर्फ आशा।

हजार बार टूटने पर भी हारता नहीं है। हजार बार टूटने
भी हार नहीं मानता है। फिर चल पड़ता है। फिर चल पड़ता है
कभी तुमने सड़क के सहारे घिसटते हुए बीमार बूढ़े लाचार व्यक्ति
को देखा है? खर्च करने को धन नहीं है। खाने को अन्न नहीं है
तन पर वस्त्र कोई नहीं है। रहने को मकान कोई नहीं है ऊपर
शरीर में दसियों रोग लग चुके हैं। कमर है कि तीर कमान की न्य
झुक चुकी है। लेकिन उससे अगर पूछो कि ऐसी जिन्दगी क्यों
रहा है? मर क्यों नहीं जाते? इन दुःखों का अंत क्यों नहीं
देते? तो उसको भी आशा है। वह भी सोचता है शायद कल, शाय

कल कुछ हो जाए। शायद कल कुछ मेरा बन जाए। शायद कल मेरे दिन अच्छे हो जाएं। आदमी जीता है आशा के ऊपर।

सब टूट जाता है। कभी-कभी आदमी का अंहकार भी टूट जाता है पर फिर भी आशा नहीं टूटती। और जितनी बार आशा बनाई तुमने, जितनी बार अपने सामने आशा को टूटते हुए देखा है, याद रहे आशा नहीं टूटती, कहीं अन्दर तुम ही टूट जाते हो। इस जीने को हम जीना नहीं कह सकते हैं। तो

"कुछ और नहीं जीना ही सिखा"

हे गुरूवर! हे संत! हे प्रभु! कृपा कर मेरे ऊपर। और कुछ नहीं माँगते तेरे से। हद हो गई कि तुमने मुझे जीने को जीवन तो दिया पर इस जीवन को जीना ही मुझे नहीं आता। तुमने यह जिन्दगी की दौलत तो मेरे को दी लेकिन इस दौलत का मोल आँकना ही मुझे नहीं आ रहा। एक कृपा कर दे जहाँ श्वास लेने को, जहाँ जीवन जीने को तुमने ये पल, ये जिन्दगी मुझको दी है उस जिन्दगी को सही से मैं जी सकूँ, इतनी अक्ल भी दे दे।

श्रीकृष्ण भगवान भगवद् गीता में बहुत मनोवैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण करते हैं आदमी के मन की आशाओं का। और फिर इन आशाओं के बनने के कारण और टूटने के कारण और फिर टूटने पर जो मन की हालत होती है उस हालत का वर्णन कृष्ण अपने शब्दों में करते हैं।

"ध्यायतो विषयान् पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
संङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।।"

कृष्ण कहते हैं आदमी विषयों का चिन्तन पहले अपने म
में करता है। वह खा लूँ, वह पहन लूँ, वह देख लूँ, वह सुन ल
वह चख लूँ। अपनी इन पाँच इन्द्रियों के द्वारा विषयों को भोग
की....। इन विषयों का चिन्तन पहले-

''ध्यायतो विषयान् पुंसः''

मन में विषयों का चिन्तन चलता है। और ये विषयों क
चिन्तन बढ़ता है, संग करने से, ख्याल रखना आप जैसे संग
अधिकतर बैठने लग जाएंगे, आप के मन का चिन्तन भी वैसे
होने लग जाएगा। आप शराबियों के साथ बैठना चालू कर दीजिए
शुरू-शुरू में वे शराब पीयेंगे तुम अपने गिलास में Thums-up डा
के पीने लग जाओगे। तो थोड़े-थोड़े दिन में वे कहेंगे जरा सी ए
घूंट तो डाल दें। संगत पूरी करो। बैठे हो तो Company दे
चाहिए। तो पहले वो एक ढक्कन डालेंगे फिर दो ढक्कन डाले
फिर चार ढक्कन डालेंगे और फिर धीरे-धीरे गिलास से Thum
up गायब हो जाएगी और वही भर रह जाएगी। संगदोष।

संग का दोष जानना हो तो और जानो। आप संगत कर
लग जाइये सटोरियों की। सटोरिये समझते हो न? Share Brok
तुम जिनको कहते हो। कबाड़ा कर देते हैं ये। लगा दो, लगा दो
आज बढ़िया भाव चल रहे हैं। दिन भर चर्चा चलेगी। अब तुम हो
Passively तुम सुन रहे हो और सुनते-सुनते मन में ख्याल आ
लग जाता है क्यों ना मैं भी Try कर लूँ। तो तुमने भी लगाय
पहले ध्यान भी नहीं था, ख्याल भी नहीं था, पता भी नहीं था
संग बैठने से ज्यों-ज्यों सुनते गए, मन चिन्तन करने लगा और म
ने कहा चलो करके देख ही लेते हैं एक बार। क्या हो जाएगा

क्या हो जाएगा? तुम चल पड़े इस डगर में।

"संङ्गस्तेषूपजायते"

संग करने से तुम्हारा विषयों का चिन्तन किस प्रकार बढ़ता है? कृष्ण महाराज पूरा विवेचन दे रहे हैं। आप संगत करने लग जाइये कवियों की, आप संगत करने लग जाओ शायरों की। बैठना चालू हो जाओ उनके पास। तो उनकी शायरी सुनते-सुनते तुम भी तुकबंदी करने लग जाओगे। तुकबंदी। शायरी नहीं, तुकबंदी करने लग जाओगे। तुम संगत करने लग जाओगे। तुम संगत करने लग जाओ ऐसे लोगों की जिनका मन किसी एक क्षेत्र में लगा रहता है तुम वैसे हो जाओगे। संगीतकारों की संगत में बैठना चालू हो जाओ। संगत करते-करते तुम्हें भी गाने का मन होने लगेगा। जब तार छिड़ेगें, जब वीणा छिड़े, जब तबला छिड़े, जब मंजीरा बजे तो किसका दिल नहीं करेगा गाने को? भले आवाज कैसी भी हो।

मुझे ध्यान आ गया। फरीदकोट पंजाब में हमारे एक शिष्य हैं। बड़ा मस्त है। बहुत ध्यानी है। पर उस बेचारे को, उसके कंठ में जो सुर है न, उसके वो कुछ ऐसे हैं कि समझो जैसे गधा और घोड़ा और गाय और भैंस सबकी आवाज को Mix कर दो तो उसकी आवाज बनती है। पर है वो इतना मस्त, तो सबसे अग्रिम पंक्ति में....। यह नहीं कि देर से आने के बाद सबसे आगे बैठता वो। बहुत जल्दी आ करके सामने, सन्मुख बैठने के लिए बैठता। तो जैसे हमने कुछ गाना भजन, तो वो मस्त हो जाता। वो ताली पीटता और ताली भी बड़ी बेताली। एक तो होती है ताली-ताली जैसी। एक ताली होती है बिल्कुल बेताली जैसी। माने चल रहा है

कहरवा और उसकी ताली चल रही दादरे में, कुछ ऐसा। वह गा
चालू करे और जब गाना चालू करे तो बड़ी दिक्कत हो जाती
हमारे लिए। ऐसा बेसुरा गा दे। तो हमने फिर एक दिन उससे कह
मैंने कहा-देखो, सामने बैठना है, बैठ। पर गाना मत। अच
महाराज! नहीं गाएंगे। और अगले दिन जब बैठे जब किसको य
रहे कि वचन दिया था कि नहीं गाएंगे और जब मस्त हुए तो गा
फिर चालू हो गए। फिर उसके पास हम एक बंदा बैठाने लगे
जहाँ यह बोलना चालू हो तो कोहनी मार देना ताकि उसको य
आ जाए कि कहा है कि नहीं गाना। ऐसा बेसुर गाता।

एक दिन की बात है शिविर में। शिविर में, ऐसे ही सर्दी
तो सब लोग धूप में बैठे थे। गंगा जी के तट पर ध्यान करवा
थे। ध्यान के बाद थोड़ा ऐसे ही बैठे हुए थे सब लोग। तो मैंने ऐ
कहा। मैंने कहा-कोई भजन मुझको सुनाएगा? कौन सुनाएगा
उसी से कहा। मैंने कहा-अच्छा, प्यारे! आज तू बोल ले। आ
छुट्टी तेरे को। आज तू जी भरके सुनाले। तो कहता महाराज! ऐ
तो हम नहीं गा पाएंगे। बोले-वो तो आप गाते हो तो कुछ कर
आ जाता है तो हम गा पड़ते हैं नहीं तो हमें कहाँ आता है। अ
हमारे गले की औकात गाने की क्या है ये तो हम भी जानते है

पर गाने वालों की संगत में, संगीतकारों की संगत में बैठ
लग जाओ तो फिर संगीत से प्रेम होने लग जाता है। गाना अच
लगने लग जाता है। नृत्यकारों की संगत में बैठने लग जाओ
नाच देखना या नाच करना अच्छा लगने लग जाएगा और स
कबीर महाराज कहते हैं, संतों की संगत में बैठो तो राम प्य
लगने लग जाता है। किसकी संगत? संतों की संगत में बैठो

संत से, ख्याल रहे सीधे परमात्मा से सम्बन्ध मनुष्य का बनना बहुत कठिन है। क्यों? केन उपनिषद में मंत्र आता है। जिसको हम नेत्रों से देख नहीं सकते, कानों से सुन नहीं सकते, जिस तक पहुँच हमारे मन की भी नहीं है, ऐसे ब्रह्म के साथ सम्बन्ध कैसे जुड़ेगा? प्रश्न पूछता है शिष्य गुरू से-जिसे मैं देख न सकूँ, जिसे मैं छू न सकूँ, जिसे मैं कानों से सुन न सकूँ, ऐसे ब्रह्म से मेरा सम्बन्ध कैसे होगा? ख्याल रहे। गुरू कहता है-उस अग्राहिय, उस अनिर्वचनीय ब्रह्म की अनुभूति जिस संत के भीतर हुई हो उसके पास बैठने से तुम्हारा भी ब्रह्म से प्रेम हो जाएगा। किसके पास? जिसने अपने भीतर उस राम रस को पिया है। ऐसे राम रस से मतवाले हुए, जब संत की संगत में बैठने लग जाओगे, नहीं भी होगा प्यार, तो भी राम से प्रेम जग जाएगा।

''संगत करिये साध की जौं की भूसी खाए''

फिर कहा-साधू की संगत में बैठना। भले खाना पीना और भले गरीबी रह जाए और भले जौं की छोड़ी भूसी से रोटी खानी पड़ जाए तो भी कोई बात नहीं। क्योंकि इस संगत में बैठते-बैठते जो तुम्हें भीतर मिल जाने वाला है, उसके सामने तो सारा संसार फीका है। संगत ध्यान से करना। ख्याल से करना। एक चीज इसमें और मैं तुमको कहना चाहूँगी। तुम्हारे घर में तुम्हारा कोई पड़ोसी आ के Garbage फैंक दे, कूड़ा कर्कट फैंक दे लड़ाई हो जाती है। मुहल्लों में, गलियों में अक्सर महिलाओं की लड़ाई इसी बात पर होती। बहुत सी महिलायें यूँ-यूँ कर रही (सिर हिला रही हैं)। कि बिल्कुल सही कह रहे हैं। अपने घर में सफाई कर ली और अपने घर का कूड़ा पड़ोसी के दरवाजे के सामने....। अब अपने दरवाजे के सामने थोड़ी न

डालेंगे। सामने वाले के दरवाजे के पास डाल दिया। अब सामने वाली घर से उठ कर बाहर आई। क्या देखती है कि उसके घर के आगे कूड़ा पड़ा है। तो वो गाली गलोच, किसने डाला कूड़ा? हाथ टूट जाएँ उसके, फलाँ, ढिम्का। अब चालू हो गई लड़ाई।

तुम्हारे घर के बाहर कोई कूड़ा डाल दे...। पर वैसे मैंने एक चीज और देखी। बिल्कुल, कई लोग गन्दगी Proof हैं। गन्दगी Proof । उन्हें न तो गन्दगी नज़र आती है, न उनको बदबू आती है। पर उनकी बात नहीं मैं कर रही हूँ। एक बात मैं कहूँगी। हम लोगों में बहुत सी चीजों की कमी है और सबसे बड़ी कमी है सफाई की।

सफाई की बात मैं यूँ कुछ कहूँ कि कई बार जैसे किसी-किसी के घर में जाओ तो जब उनके बर्तन आता है पानी या भोजन का, तो उसी में झूठन चिपटी है अभी भी। सर्फ चिपटी है अभी भी। साफ ही नहीं हुआ है। और साफ अगर हुआ है तो अच्छे से पोंछा नहीं है। हमारे एक संत होते थे पंजाब में निर्मले संत। तो ऐसे एक माई ने उनके लिए भोजन परोसा। भोजन का वक्त था। तो जब भोजन खाने लगे तो थाली में कहीं राख चिपटी हुई थी। पहले तो राख से ही बर्तन मांझते थे न। तो राख चिपटी हुई थी।

तो संत ने वो थाली वापिस कर दी और कहा हम नहीं खाएंगें और दूसरे से कहा कि तुम मेरा भोजन डाल के लाओ। तो वह माता रोने लगी। जो थाली को साफ नहीं कर सका। जो आदमी हाथ के बर्तन को साफ नहीं कर सका। वो मन को साफ करने की भी चेष्टा क्यों करेगा? जिसको सामने पड़ी स्थूल गन्दगी नजर नहीं आ रही तो उसको मन में पड़ी सूक्ष्म गन्दगी कैसे नजर आएगी? तो हमको नहीं खाना। थाली साफ करो। थाली साफ

करने से अर्थ उनका कुछ और भी गहरा है कि साथ-साथ में अपना मन भी साफ करो।

अक्सर झगड़े ऐसे स्त्रियों में हो जाते हैं। दूसरे की गंदगी कोई बर्दाश्त नहीं करता। हाँ, वह बात अलग है कि हम गन्दगी छोड़ जाते हैं तो लगता है कि हम तो निकल गए। खास तौर पर वह रेलवे में, रेल के डिब्बे में, Toilet में, शौचालय में तुम गए, गन्दा कर आए, तुम भाग गए। आए बाहर कि हम तो निकल आए साफ और जो पिछले वाला जाएगा जब उसकी दुर्दशा से तुमको कोई मतलब नहीं है बात छोटी सी है।

तो साधू तो तुमको कहते हैं मन साफ करो। मैं पहले कहूँगी, अपने घर के बाथरूम ही साफ कर लो। शुरूआत कहीं से तो करनी, वहीं से शुरू हो जाओ। तुम किसी की गन्दगी छोड़ी बर्दाश्त नहीं करते हो। पर, संगत करने के मामले में तुम बिल्कुल होशियार नहीं रहते हो और दूसरे आकर के जब निन्दा चुगली का कूड़ा कर्कट तुम्हारे कानों में डालते, तुम कभी नहीं कहते कि भाई! मेरे को यह कूड़ा क्यों दे रहे हो? दूसरे की निन्दा चुगली सुनते वक्त तो कान यूँ ऐसे खेंच करके, कुत्ते जैसे कान खड़े करके सुनते हो कि क्या कह रहे हैं। अच्छा! क्या हुआ था? फिर क्या हुआ था? फिर क्या हुआ? और सुनाने वाला भी मसाला लगा-लगा के बात को यूँ से यूँ...।

वैसे एक खासियत है विशेषतः पूरे ही उत्तरप्रदेश में कह देती हूँ मैं। नाम है उत्तरप्रदेश। पर मैं इसको कहती हूँ अफवाह प्रदेश। एक मिनट लगता है, यूँ। एक कहानी बनी और फिर दो पैर की चलती अखबार पूरे शहर में घुमा देती है। समझे दो पैर की अखबार?

इन्सान। दो पैर की अखबार। यह घूम जाएगा। दो मिनट में बात कह
की, कहाँ की, कहाँ की कहाँ पहुँच जाती है और तुम बड़े मजे
सुनते हो। तुम कभी शिकायत भी नहीं करते हो कि मुझे क्या लेन
देना। तुम मेरे कान में दूसरे का कूड़ा कर्कट क्यों डाल रहे हो? किस
की लड़की भाग गई तो भाग गई मैं क्या करूँ? किसी ने बेईमानी
कर ली तो कर ली, मैं क्या करूँ? तुम मुझे उसकी बुराई क्य
सुनाना चाह रहे हो? तुम वहाँ बड़े प्रेम से सुनते हो। बल्कि कथा चा
इतने प्रेम से न सुनते हो। पर पड़ोसी के घर में रात क्या हुआ व
कोई तुम्हें सुनाने लग जाए तो बड़े मजे से सुनने लग जाओगे। कथ
में हो सकता है थोड़े ढीले-ढाले बैठ जाओ। पर तुम्हारे साथ वाल
दुकानदार ने कौन सा नया माल अपनी दुकान में सुबह से लगा देन
है ताकि वह तुम्हारे ग्राहकों को पटा सके। यह बात कोई तुमको
सुनाने लगे, यह बहुत प्रेम से सुनोगे।

शायद हम लोगों की अपेक्षा और हम लोगों की Choice जह
है हम लोग ध्यान भी वहीं देते हैं। वहीं देगें ध्यान। ख्याल रखना-

"ध्यायतो विषयान् पुंसः संङ्गस्तेषूपजायते।
संङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।।"

पूरी एक श्रृंखला बांधी है कृष्ण महाराज ने। कहते फिर सं
से जो विषयों का चिन्तन उठा तो मन में कामना जगी। कामन
जगी मन में कि अब यह पदार्थ मुझको भी मिल जाए। अब यह
अमुक-अमुक चीज मुझको भी मिल जाए और अगर वह चीज न
मिले तो फिर मन में क्रोध आता है। क्यों नहीं मिली? मैंने चाहा
मैंने माँगा मुझको क्यों नहीं मिली? कामना के पूर्ण न होने प
क्रोध जगता है।

"क्रोधात भवति सम्मोहः, सम्मोहात स्मृति विभ्रमः"

और कहते जब क्रोध जग जाता है तो फिर ऐसे व्यक्ति के भीतर मन में सम्मोहन हो जाता है। ख्याल रखना-सम्मोहन। और सम्मोहित हुए मन से स्मृति का नाश हो जाता है। अक्ल का, विवेक का नाश हो जाता है।

"स्मृति भ्रंशाद् बुद्धि नाशो"
स्मृति के टूट जाने पर फिर बुद्धि का विनाश। और
"बुद्धि नाशात् प्रणश्यति"

ख्याल रखना। ये सारी चर्चा कहाँ से चालू हुई? विषय के संग करने भर से। विषय के चिन्तन करने भर से। और तो कहीं से नहीं।

तो संग के लिए बहुत खबरदार रहना चाहिए और संग से उठती है कामना। अच्छा, कामना पूरी हो जाए तो क्या संतुष्टि हो जाती है? अब इसमें एक और बात सोचने की है। तुमने कुछ चाहा, तुमने कुछ सोचा, मन ने कोई कामना की, पूरी हो जाए तो क्या संतुष्टि हो जाती है? अब इसमें एक बात और सोचने की है। तुमने कुछ चाहा, तुमने कुछ सोचा, मन ने कोई कामना उठाई तो क्या कामना पूरी हो जाने पर मन आस निरास हो जाएगा? और अगर मन आस-निरास तब भी नहीं हो रहा तो क्या होता है? कामना पूरी हो जाए तो लोभ बढ़ जाता है और लालच बढ़ जाता है और मिल जाए, और मिल जाए।

एक जुआरी दीवाली की पूरी रात जुआ खेलने के बाद सुबह घर पलटा। पत्नी कहती-क्या काम कर आए रात भर? घर नहीं पलटे। कहते कुछ न पूछ रात मैंने दस लाख जीते। पत्नी बड़ी

खुश हुई। सारा गुस्सा ठंडा हो गया। जो गुस्सा आया था न कि रात भर घर नहीं पलटा है और जुआरियों में बैठा जुआ खेलता रहा है, ताश के पत्तों में फंसा रहा है। सब गुस्सा था फिर.....। तो मतलब तुम लोगों के लिए फिर अच्छा या बुरा Depend करता है Economics के ऊपर। अगर इस चीज़ में लाभ मिलता है तो कोई बात नहीं भले वह गलत ही हो, भले वह बुरी ही हो कोई बात नहीं। पत्नी कहती है अच्छा दस लाख जीत लाए लाओ-लाओ जल्दी दो मुझको। कहाँ है वो पैसे? दिखाओ मुझको। पति कहता है वो तो पैसे नहीं है क्योंकि दस लाख रात मैं जीता भी और फिर ऐसा लगा कि दस शायद और जीत जाऊँ तो दस के दस एक ही बाजी में लगाए और दस के दस गँवाए। तो एक ही रात में मैं लखपति भी हुआ और एक ही रात में मैं कंगालपति भी हो गया। तो पत्नी ने फिर अपना ड्रामा चालू कर दिया तुम्हें कोई फिक्र नहीं। न बच्चों की, न मेरी। रात भर घूमते रहे। सड़ते रहे। तुम्हारी अक्ल कहाँ चली गई।

दो मिनट में गुस्सा शान्त था जब माल देखा आते और जब माल जाते देखा तो फिर गुस्सा आ रहा है। जुआ भी कोई चीज है? बच्चों को ये सिखाओगे। कैसे बाप हो तुम!

आस! आस पर आदमी जीता रहता है। एक बार आस टूटी फिर आस लगाता है। पर यह आशा बनी ही क्यों तो कृष्ण कहते हैं- "विषय के ध्यान करने पर" विषयों का ध्यान कहाँ से आया? कहा-संग करने पर। संग करने पर उठी कामना जब पूरी हो गई तो लोभ बढ़ गया और नहीं पूरी हुई तो आदमी का क्रोध बढ़ता है। और

"जीना न आया कभी मुझे, मरता हर आस के टूटने पर"

हर आस जब टूटती है तो बड़ी तकलीफ होती है। अक्सर माता पिता और विशेषतः जो वृद्ध अवस्था में पहुँच चुके हों और जिनके बाल बच्चे उनकी पूरी-पूरी देख रेख न कर रहे हों तो बहुत दुःखी होते हैं वे। अब कोई पूछे, पुत्र क्या पिता को दुःख दे रहा है या कि पिता की यह आशा कि पुत्र मेरा फरमाबरदार हो, पुत्र मुझे पूछे, पुत्र मेरी इज्जत करे, पुत्र मेरी सेवा करे। यह जो आशा उसने बाँधी या आशा जो पूरी नहीं हुई तो अन्दर क्रोध आ रहा है। तो दुःख जो है वो पुत्र पिता को दे रहा है या दुःख पिता को उसके ही मन की आशा दे रही है। कौन दुःख दे रहा है? ख्याल रखना, आशा दुःख दे रही है और आस के टूटने पर निराशा और आस के पूरी होने पर और लालच। यही तो शायद माया है यही तो शायद अज्ञान है। यही तो सम्मोहन है। तुम जानते हो सम्मोहन? Hypnotism.

Hypnotist दूसरे को सम्मोहित करता है। आदमी की आशा ने आदमी को ही सम्मोहन में रखा है। आदमी का मन आदमी को खूब धोखा दे रहा है और फिर इस धोखे में आदमी जीता चला जा रहा है। कृष्ण महाराज कहते हैं बुद्धि का नाश न हो जाए। स्मृति का भ्रम तुम्हारा न टूट जाए, इसलिए जाग। जाग करके भीतर थोड़ा चिन्तनशील हो और देख कि जो आस करने के बाद भयानक दुःखों को सहन करना पड़ता है क्या वो आशा करना उचित भी है कि नहीं?

अब तुम्हें लगेगा कि महाराज! अब घर गृहस्थी वाले हैं आशा कैसे छोड़ दें? ख्याल रखना युधिष्ठिर यही बात तो कह रहा है। मनुष्य जी ही रहा है अपनी आशाओं के बलबूते और आशा को

छोड़ने को भी तैयार नहीं और आदमी गुलाम भी इसलिए है कि आशा है। और आशा न रहे तो कोई गुलामी भी नहीं, कोई गुलामी नहीं किसी प्रकार की गुलामी नहीं। दासता से मुक्त हो जाता है आदमी, जो अपनी आशा से मुक्त हो गया।

तो मैं यह कहना चाह रही हूँ, तुम जिस क्षेत्र में हो तुम जो काम करते हो करो। मनोयोग से करो। लेकिन इतना करो कि तुम बहुत बड़ी Expectation खड़ी न कर दो। तुम बहुत बड़ी अपेक्षा न बना के बैठ जाओ कि मेरी यह अपेक्षा है। ख्याल रखना-मेरी यह अपेक्षा है और जब अपेक्षा नहीं पूरी होगी तो तकलीफ होगी। तो अपेक्षा रखो ही क्यों? आस बाँधों ही क्यों? और जब यह मालूम हो...।

चक्कर यह है आस पूरी हो जाए तो लगता है काम बढ़िया। आस पूरी न हो तो क्रोध आता है कि किस चक्कर में पड़ गए। जैसे मैं एक छोटा उदाहरण तुमको देना चाहूँगी। एक महात्मा की प्रसिद्धि कुछ इस प्रकार से हो गई कि यह महात्मा जी जो है वह मंत्र उच्चारण करके एक खास किस्म के फूल देते हैं और उस फूल का जिस किसी को वे प्रसाद दे दें उससे उसकी मनोकामना पूरी हो जाती है। शरीर के रोग दूर हो जाते हैं। मन के रोग दूर हो जाते हैं। एक की पूरी, दो की पूरी, तीन की पूरी, चार की पूरी, और अब इस तरह का चलन चल पड़ा तो भीड़ लग गई और भीड़ इतनी लग गई कि महाराज वे महात्मा जिस शहर में थे उस शहर में फूलों की भी ब्लैक होने लग गई।

Demand and supply. When the demand is more and supply is less, तो फूल जैसी चीज भी...। उसकी भी बड़ी Demand हो जाए। अब जाने वाले 4-4, 5-5, किलोमीटर लम्बी

लाइनें लग रही हैं कि जाएंगे फूल ले आएंगे और मिल गया तो फिर शरीर के रोगों से मुक्ति। मन के रोगों से मुक्ति। आर्थिक, धन की तंगी से मुक्ति। बस जीवन में आनन्द ही आनन्द हो जाए। ख्याल रहे यह आनन्द इतना सस्ता नहीं कि एक फूल से तुमको मिल जाए। नहीं मिलता है। अब ले आए। किसी ने पूछा-पंक्ति में खड़े, लाइन में खड़े अगले वाले से पूछता है कि भई! आप क्या पहली बार आए हो या आते रहते हो? कहते-नहीं, हम पहली बार। बोले-आप? कहते-पहली बार। कहते-क्या ख्याल है, कामना पूरी होगी? तो जाने वाला कह रहा है-हो जाएगी। ऐसा सब लोग कहते हैं। इसलिए तो हम भी आए हैं। अब नहीं होगी तो इसमें हमारा क्या चला जाएगा। नहीं होगी तो उससे हमारा क्या जाएगा? एक ने कहा कि वे देंगे जब तो ठीक हो जाओगे। अब ले आए और लाने के बाद तकलीफ उलटे और बढ़ गई। तकलीफ जो है वह उलटे और बढ़ गई। मैं सच बात बता रही हूँ।

कि एक ऐसे बाबा के विषय में तो मैंने सुना है कि वह मिट्टी देता है और लोग मिट्टी ले के आते हैं। उसने कहा कि रोज सुबह उठ करके इसका प्रसाद खाइये और वे मिट्टी फाँकते फिर रहे हैं। इस आस में कि हमारी जो तकलीफ है वो दूर हो जाए। आदमी कितना अपनी आशा का गुलाम कि अपनी आशा की पूर्ति के लिए मिट्टी भी खा जाए। धूल भी खा जाए। सिर स्वाह भी पाले। जो कहो, कर ले महाराज।

कई बार ऐसे कुछ, जैसे आस के चक्कर में महात्माओं के पास जाने की आदत रहती है। वे कभी भूले भटके मेरे पास भी आ जाते हैं। एक बार तो जिक्र किया था। वे एक आ गए कि

महाराज वे...। और तब हम नए-नए महात्मा हुए थे। नए-नए गुरु जी हुए थे। तो एक परिवार आया, बोले इनको प्रसाद दे दो। बहु थी। पेट से थी। गर्भवती थी। बोले इनको प्रसाद दे दो। तो मेरे पास मिठाई पड़ी थी, डिब्बा। तो मैंने खोला तो उसमें बर्फी थी तो मैंने बर्फी निकाली, तो मैंने कहा लो। तो वो कहते न-न यह नहीं। न-न महाराज। ऐसे जैसे करन्ट लग गया। क्यों? अभी तो कह रहे हो प्रसाद दे दो। दे रहे हैं तो लेते नहीं हो। न-न महाराज। बर्फी नहीं, सेब दे दो। संतरा दे दो। क्यों? उसमें क्या है? और इसमें क्या है? तो एक दूसरी स्त्री जो उसके साथ आई हुई थी जेठानी। वो कहती देखो न बर्फी देंगे तो लड़की होगी। संतरा देंगे तो लड़का होगा। तो वो Male gender वाले फल। तो मिठाई देनी तो रसगुल्ला दो बर्फी नहीं। 'ई' वाली चीज कोई नहीं देनी। 'ई' वाली नहीं देनी आ वाली देनी है। लड़की-लड़का। नहीं समझे? तो रसगुल्ला दे दो, गुलाब जामुन दे दे। male है ये। बर्फी नहीं देना। इमरती नहीं देना। बिल्कुल नहीं देना इमरती। स्त्रीलिंग वाली मिठाइयाँ हैं ये। पुरूष लिंग वाली मिठाइयाँ देना। तो मैंने कहा-नारंगी चलेगी? ख्याल रखना मैंने कहा-नारंगी चलेगी? कहते नहीं महाराज, नारंगी नहीं, संतरा चलेगा। क्योंकि वह भी 'ई' आ गई न पीछे। हे भगवान! कहाँ फँसाया मेरे को?

अब वैसे एक सच्ची बात, सच्ची बात मैं तुमको...। किसी डाक्टर से पूछ के देखो। Medical Science में पूछ कर के देखो। Logic से सोच के देखो। तर्क से सोच के देखो तो बर्फी खा लेने से क्या लड़की हो जाएगी? बोलो न और संतरा खा लेने से लड़का? और ऐसा सचमुच होता हो तो जनानियाँ बर्फी खानी छोड़ दें। कोई

जनानी न खाये बर्फी। पर महात्मा जी से प्रसाद लेना हो तो कहते पुरूष लिंग वाला देना प्रसाद। स्त्रीलिंग वाला नहीं देना। आशा। मैंने कहा-देखो, क्षमा कीजिए मुझे। जो तुम्हें यह ही नहीं मालूम कि प्रसाद लेने का कारण, प्रसाद लेने का भाव क्या होता है तो मेरे से ले ही क्यों रहे हो? और न तो मैं यहाँ लड़की देने बैठी हूँ और न तो मैं यहाँ लड़का देने बैठी हूँ। मेरी परामर्श मानो तो हिन्दुस्तान में Already आबादी ज्यादा है। पैदा ही कुछ न करो छुट्टी मारो। सरकार भी खुश होगी किसी ने तो सही कदम उठाया।

आशा। आशा पूरी हो जाए तो मैंने एक चीज और देखी अपनी आशा को पूरा करने के चक्कर में आदमी जाने कितने पापड़ बेल जाता है। आज के जमाने में क्या, सदा से ही ऐसा रहा जो महात्मा जो साधू तुमको तुम्हारी आशाओं के अनुकूल वचन सुनाए, जो तुम्हारी आशा पूरी होने का रास्ता दिखाए वह महात्मा तुम्हें बड़ा अच्छा लगता है। और जो महात्मा कहे आस निरास हो जाओ वे कहते महाराज आपे ही रहो निरासे हमें काहे को निरासे करते हो? हमें नहीं निरास करो। अपना तो घर बसाया नहीं दूजों का भी कहते न बसे। कहते आस ही निरास हो जाओ। क्यों हो जाए आस निरास? जिन्दगी है जिन्दगी में जिएंगे नहीं?

जीओ। कौन कहता है नहीं जीओ। पर ख्याल रखो, क्या इसको तुम जीना कहोगे जो हर आस टूटने पर जो हजारों बार तुम मर जाते हो रोज-रोज? छाती पर साँप लोट जाते हैं जब तुम अपनी मनोइच्छित चीज दूसरे के पास देख लेते हो। चाही तुमने थी, है दूसरे के पास। कष्ट होता है, तकलीफ होती है।

विषयों का चिन्तन। तो सावधान रहना इस बात से, आप के

मन में कैसा चिन्तन उतरे। इस विषय में बहुत सावधान रहना चाहिए। क्योंकि जैसा चिन्तन आपके मन में होगा आप के मन की दौड़, आपके मन की यात्रा सारी की सारी उसी तरफ जाने लग जाएगी। कृष्ण महाराज कहते हैं:-

"विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति।।"

जिसकी समस्त कामनाएं चली गईं, जिसकी समस्त आशाएं चली गईं वही शांत है। वही निष्प्रिय है। वही ममता रहित। ख्याल रखना आप अपने घर में रहो, आनन्द से रहो। पर दो तरीके हैं एक तो आप सबसे पहले आशाएँ और अपेक्षाएँ बाँध के जियो और फिर दूसरा तरीका यह है आप ने अपेक्षा छोड़ दी, आपने आशा छोड़ दी, आप जी रहे हो, शरीर से कर्तव्य कर रहे हो, शरीर से काम धंधा भी पूरा कर रहे हो, लेकिन आप ने अपेक्षा छोड़ दी। काम इतना सा है। छोटा सा। अपेक्षा छोड़ दी। आस भर छोड़ दो। आस भर छूट गई, याद रखना, आस भर छूट जाए तुम साधू हो गए। आस भर छूट जाए तो तुम संत हो गए। आस भर छूट जाए। कर्म फिर भी चलेगा। ख्याल रखना, इस धोखे में मत रहना कि मैं यह कह रही हूँ कि कर्म नहीं कर पाओगे, या कर्म होगा नहीं, उल्टे कर्म और अच्छा होगा और बढ़िया होगा।

अपेक्षा नहीं। एक मैं छोटा सा उदाहरण देती हूँ, तुम अपने घर के सदस्यों के लिए काम करते हो। स्त्री है तो पूरे घर का, पुरूष है तो पैसा कमा के लाने का काम करते हो। पर साथ ही साथ तुम परिवार से अपेक्षा भी जब रखते हो और पूरी न होने पर दुःख रहता है। लेकिन काम तुम वही करोगे, काम तुम वही करो लेकिन उस

काम को करने में अपेक्षा न रह जाए। जैसे एक उदाहरण इसमें मैं यूं दूँ। मान लीजिए आप के पड़ोस में कोई बीमार हो गया। आप का उनसे सम्बन्ध अच्छा था तो आप ने कहा कि आप चिन्ता न करिये आप के खाने-पीने का जो भी इन्तजाम, आप निश्चिन्त रहिये हम अपने घर से बना के आप के लिये लाएंगे और तुमने बनाया और तुमने उनको दिया और तुमने उनको खिलाया और तुम यह कर रहे हो इसलिए नहीं अब भीतर में सूक्ष्म चले.....। अब औपचारिकता के नाते तो ये भी कि शायद कभी जब हम बीमार होंगे तो ये भी हमारी देखभाल करे। अब समाज तो ऐसे ही चलता है न। दे ले, ले दे, दे ले कुछ ऐसे ही।

पर तुम किसी संत की सेवा करो।

"आओ सखी संत पास सेवा लागिये"

कभी किसी संत के प्रेम में पड़े हो? कभी किसी संत के साथ दिल का सम्बन्ध जुड़ा है तुम्हारा? और अगर जुड़ा है तो तुम जानते हो जैसे एक प्रेमी प्रेयसी के लिए यत्न से उसको उपहार, उसको भेंट, उसको प्रसन्न करने की कोशिश करते हैं, ऐसे ही कोई संत के प्रेम में पड़ जाए फिर वो संत को प्रसन्नता देने वास्ते उनके लिए कुछ न कुछ करने की चाह रखते हैं। करते हैं, प्रेम से कर रहे हैं पर वापसी, वापसी की तो चाह ही नहीं है और जो वापसी चाह रहा है ख्याल रखना, वह प्रेम से नहीं कर रहा है। मैं कह रही हूँ प्रेम से, अपेक्षा से नहीं। तुमने प्रेम से किसी के लिए भी भले वह माँ के लिए, बाप के लिए, पत्नी के लिए, पति के लिए। अब चूँकि ये सम्बन्ध ऐसे हैं जहाँ Constantly give and take होती रहती है। इसलिए बहुत बार तुम ममता रहित नहीं कर

पाते लेकिन मान लो सचमुच प्रेम है।

एक उदाहरण मैं ऐसा देती हूँ। कथा आती है शीरी फरहा की। कहते हैं एक बार शीरी फरहाद के आगोश में पड़ी थी। औ फरहाद कहता है शीरी से तुमको कबाब अच्छे लगते हैं इसलि आज मैंने तुम्हारे लिए देखो कबाब बनाए हैं। और शीरी, कहते है बस फरहाद खिला रहा था वह खाती जा रही थी और वे थोड़े थे तो वे खत्म होने लगे और शीरी खा रही है इधर फरहाद देखत है कि खत्म होने लगे।

कहते हैं कि फरहाद ने कि, कहीं शीरी और न माँग ले, अ आगोश में पड़ी है तो छोड़ के नया कुछ इंतजाम करने का भ हिसाब नहीं बन पाएगा और वो माँग न ले कहीं और तो कहते उसने अपनी जांघ का माँस काटा। जांघ का माँस काट करके आग में पकाया। आग में पकाया, कथा बड़ी मीठी है कबाब स खत्म हो चुके। शीरी अभी और भी खाना चाह रही है। फरहाद फिर अपने जांघ का, अपने माँस का कटा वह टुकड़ा जिसक सेका था उसने शीरी के मुख में डाला, कहते जैसे...। अब प्रेम न। प्रेम की गहराई! पशु के माँस को खाने पर कुछ नहीं हुआ औ खा रही है। स्वाद से खा रही है। जब यह उसके जिस्म का टुकड़ जब शीरी के मुख में गया तो कहते अचानक आँख खोल करके पूछती है यह क्या है? कहते कबाब ही तो है। कहते नहीं यह त मुझे यूँ लगा जैसे किसी ने मेरे जिस्म को चीर करके, मेरा माँ काट करके, मेरे मुख में रख दिया।

फरहाद इसके पहले कि कोई उत्तर दे पाता, शीरी ने उसके जिस्म से वह बहता खून देखा। कथा का भाव प्यार में वह अप

जिस्म को भी काट के देना चाह रहा है। ऐसा प्यार! तब उसमें अपेक्षा बिल्कुल कोई नहीं है। अब उसमें आशा कोई नहीं है। मैंने उसके लिए यह किया तो अब वह मेरे लिए यह पलट के करे। बिना आशा के, बिना किसी Expectation के कभी तुमने किसी के लिए...। मैं अब फिर कहूँ किसी के लिए अगर कुछ किया है तो तुम जान पाओगे कि मैं यह क्या बात कह रही हूँ।

कभी स्वार्थ से अलग हो करके, कभी ममता से परे जा करके जिसको तुम न जानते हो कभी करके देखना ऐसा। वैसे समाज सेवक प्रायः यही करने की कोशिश करते हैं पर फिर उनके करने में Politics ज्यादा है। करने का भाव कम होता है। पर मैं कह रही हूँ जहाँ सचमुच में प्रेम हो और किसी से भी प्रेम हो। किसी से भी प्रेम हो जाए। अपेक्षा रहित हो करके उसके लिए करके देखना कुछ कर्म। उस करने में इतना आनन्द है इतना सन्तोष है, इतनी मिठास इतनी Satisfaction, Inner contentment तुमको मिलेगी कि उसकी कल्पना भी नहीं तुम कर पाओगे।

मैं तुमसे यह कहना चाह रही हूँ। आप ठीक इसी प्रकार से अगर अपने निकट सम्बन्धियों से भी व्यवहार कर सकें तो तुम्हारे जीवन से दुःख चला जाएगा। कर्म तो भी होगा। काम तो भी चलेगा। सारा मामला तो भी चलेगा। बस एक चीज बदल जाएगी। तुम बदल जाओगे। सिर्फ एक चीज Change हो जाएगी। तुम Change हो जाओगे। शायर कहता है-

"आया जो सुकून दिल को मेरे
लगा कि जमाना ठहर गया
जमीं ठहर गई सारा आसमां ठहर गया"

जब दिल को शांति आ जाए, जब दिल में सन्तोष आ जा
तो ऐसा महसूस होता है कि सब, सब संतोष। सब ओर शांति। स
ओर ठहराव। सब ओर आनन्द हो गया। आशाओं से मुक्त
आशाओं से मुक्त हुए को ही हमने संत कहा। ख्याल करना, ज
आशाओं से मुक्त है और...। और अब क्या पहचान करोगे? सि
इतनी भर, जो आशा से मुक्त है वही योगी। जो आशा से मुक
वही संत। जो आशा से मुक्त वही आनन्द में है। आशा से मुक
हो जाओ। कुछ न करो। न घर छोड़ना, न परिवार की जिम्मेदारी
कुछ छोड़ने की जरूरत नहीं, बस एक चीज छोड़ दो-आशा। सि
आशा और जिनकी आशा छूट गई उनके भीतर उनके जीवन
कितनी मस्ती है, कितना आनन्द है। स्वामी रामतीर्थ ने अपने शब्
में कुछ इस प्रकार से कहा-

हर हर ओम, हर हर ओम
जंगल में जोगी बसता है वो रोता है ये हँसता है,
दिल उसका कहीं न फँसता है,
तन मन में चैन बरसता है।
हर हर ओम, हर हर ओम
खुश फिरता नंग मलंगा है नैनों में बहती गंगा है,
जो आ जाए सो चंगा है मुख रंग भरा तन रंगा है।
हर हर ओम, हर हर ओम
गाता मौला मतवाला है जो देखो भोला भाला है,
मन मनका उसकी माला है तन उसका एक शिवाला है
हर हर ओम, हर हर ओम
पास उसके पंछी आते हैं और दरिया गीत सुनाते हैं,

बादल इस्नान कराते हैं वृक्ष उसके रिश्ते-नाते हैं।
हर हर ओम, हर हर ओम

अब महाराज, तुम हँसने वालों के साथ हँसने लग जाते हो, रोने वालों के साथ रोने आ जाते हो। पर जोगी, जो आशा मुक्त हो गया वह अपने एकान्त में, अपने भीतर में ऐसा मस्त है, कोई परवाह नहीं। हँसे तो कहते हँस ले भाई, आतें खुल जाएंगी और कोई रोने लग जाए जोगी के सामने तो कहता रो ले आँखें साफ हो जाएंगी।

जंगल में जोगी बसता है ये रोता है वो हँसता है,
दिल उसका कहीं न फँसता है तन मन में चैन बरसता है।
हर हर ओम, हर हर ओम
खुश फिरता नंग मलंगा है नैनों में बहती गंगा है,
जो आ जाए सो चंगा है मुख रंग भरा, तन रंगा है।
हर हर ओम, हर हर ओम. . . . .।

आशाएँ जिसकी मुक्त हुई फिर वह गाता मौला मतवाला है। फिर वो गाएगा मतवाला हो करके। फिर मनका उसकी माला है, तन उसका एक शिवाला है। फिर उसको किसी शिवालय में जाने की जरूरत नहीं। उस जोगी का तन ही एक शिवालय हो जाएगा। फिर उसको हाथ में किसी रूद्राक्ष, चन्दन सफटिक माला पकड़ने की जरूरत नहीं। उसके मन का एक-एक मनका ही माला का हिस्सा हो जाता है। किसके लिए? जो आशाओं से मुक्त हुआ। जिसने अपेक्षाओं को छोड़ दिया। जिसने अपेक्षाओं के बोझ से अपने कंधों को अलग किया। ऐसा ही व्यक्ति जीवन में आनन्द से सुख से संतोष से जी पाएगा। आप आज के इस विचार का चिन्तन

करना, ख्याल करना और हो सके तो शायद बात दिल में उतर जाए कि हम अपने जीवन को अगर आनन्द, अगर प्रेम, अगर संतोष के साथ जीना चाहते हैं तो उसका एकमात्र एक ही उपाय है और वह उपाय सिर्फ इतना - आशा से, अपेक्षा से मुक्ति। आज बस इतना ही

स्वपन से
सत्य में

*

मैंने सपने में आज देखा है
श्याम मुरली बजाते देखा है
कर में मुरली को लिए,
और सोलह श्रृंगार किए,
श्री राधा संग झिलमिलाते देखा है।
श्याम मुरली बजाते देखा है।
चाँदनी रात में, श्री राधा जी के साथ में,
सखियों संग रास रचाते देखा है।
श्याम मुरली बजाते देखा है. . .
जैसे धरती पे गगन,
हमने देखा ये मिलन,
श्याम संग रास रचाते देखा है।
श्याम मुरली बजाते देखा है. . .
जब मेरी आँख खुली,
श्याम जी की लीला चली
अश्क बिन्दुओं को ढलते देखा है।
श्याम मुरली बजाते देखा है,मैंने सपने में आज देखा है।

*

मैंने सपने में आज देखा है
श्याम मुरली बजाते देखा है
कर में मुरली को लिए,
और सोलह श्रृंगार किए,
श्री राधा संग झिलमिलाते देखा है।
श्याम मुरली बजाते देखा है।
चाँदनी रात में, श्री राधा जी के साथ में,
सखियों संग रास रचाते देखा है।
श्याम मुरली बजाते देखा है. . .
जैसे धरती पे गगन,
हमने देखा ये मिलन,
श्याम संग रास रचाते देखा है।
श्याम मुरली बजाते देखा है. . .
जब मेरी आँख खुली,

(हर सपने का अंत है कोई सपना सदा तो चलेगा नहीं, श्याम जी की लीला चली, चाहे कितना भी प्यारा हो। ये सपना भी टूट गया)

श्याम जी की लीला चली
अश्क बिन्दुओं को ढलते देखा है।
श्याम मुरली बजाते देखा है,
मैंने सपने में आज देखा है।
"जिधर देखती हूँ उधर तू ही तू है,
फिर भी क्यों मैं तुझको ढूँढती हूँ।
कहूँ क्या मैं अपने मन की चाहत,
कि हर घड़ी तेरे चरण चूमना चाहती हूँ।

सब दर्द मिट गए एक दर्द के सिवा,

कि दिल तड़पता रहता है कि तुझे छू के देखूँ, फिर छू-
के देखूँ।"

प्रेम की भाषा, प्रेम की अवस्था अद्वितीय है, अवर्णनी
है, अनिर्वचनीय है। लेकिन प्रेम की गहराई में जो लोग डू
हैं वही लोग जानते हैं जो नहीं डूबते हैं वो तो बस कल्पना
जाल बुन सकते हैं बस उतना ही। जिसने कभी अपनी खु
आँख से सूर्य का प्रकाश नहीं देखा है तो वो जान नहीं सक
है कि सूर्य की इन किरणों में कितनी चमक, कितनी दम
कितना आलोक होता है। हालांकि हर मुनष्य प्रेम को तरस
है, हर मनुष्य प्रेम चाहता है और सच्चाई फिर यह कि
मनुष्य प्रेम से खाली है। प्रेम विहीन है हृदय क्योंकि प्रेम रह
तो सन्तुष्टि होती और प्रेम होता तो बिन मोल भगवान तुम्ह
हाथ में बिक भी जाता।

मीरा के बड़े दुःसाहसी वचन हैं। मीरा कहती है-

"मैंने लीनो री गोबिन्द मोल" ख्याल करना आज त
किसी ने ऐसे शब्दों का प्रयोग नहीं किया जहाँ तुम कह रहे हो
भगवान को खरीदा है मोल।

"मैंने लीनो री गोबिन्द मोल।
कोई कहे सस्तो, कोई कहे मंहगो,
लीयो री तराजू तोल।
कोई कहे छाने, कोई कहे चुपके,
लीयो री बजन्ता ढोल।"

जब बिना मोल उस मालिक के हाथ में तुम बिक जाते हो तो बिना मोल तुम उसको खरीद भी लेते हो। पर आदमी भगवान को तो खरीदना चाहता है पर आप नहीं बिकना चाहता। ख्याल करना भगवान बिकने को भी तैयार है जो खरीदार हो कोई। पर उसका मोल बहुत मंहगा है और उसका मूल्य है स्वयं अपना आपा। वही देना होगा और कुछ से काम नहीं चलेगा। तुम गए मन्दिर, चार पैसे पटक आए सामने उसके। तुम गए मन्दिर में चार फल पटक आए उसके सामने और तुमको लगता है कि इन छिछोरी चीजों से मैं भगवान को खरीद लूँगा।

कल रात एक व्यंग मैं सुन रही थी। एक शराबी, पियक्कड़ मन्दिर में घुस गया। हनुमान जी का मन्दिर था। पियक्कड़ था, खड़ा हो गया। झूम रहा है। झूल रहा है। छोटा सा मन्दिर था खाली एक पंडित थे वह भी बाहर खड़े थे। पिये था पर अभी तसल्ली नहीं हुई थी और पीने की चाहत थी तो कहता है, हे हनुमान जी! आज कहीं से 50 रुपये तुम दिलवा दो तो कल मैं 100 तुमको चढ़ाऊँगा। व्यापार करने की ऐसी बुरी आदत पड़ी तुम भगवान के साथ भी Trading चालू कर देते हो। पंडित गड़बड़ था। उसने सुन लिया। उसने कहा यह तो सौदा अच्छा है, तो पचास का नोट उसने चुपके से रख दिया। अब उसने आँख खोली सामने पचास का पत्ता पड़ा। उसने उठाया और भक्त की श्रद्धा बड़ी पक्की हो गई यह तो मनोकामना पूर्ण मन्दिर है।

दूसरे दिन फिर पहुँचा। हनुमान जी आज 100 मिल जाए तो कल 200 पर शर्मिन्दा बहुत हूँ आज का वायदा था। पर आज 100 तो कल पक्के। चुपके से उसने फिर 100 धर दिए। दो रोज

बाद फिर पहुँचा। कहता-हुनमान जी आज तो इतना शर्मिन्दा हूँ कि शर्म के मारे मेरी गर्दन झुकी जा रही है। वायदा खिलाफी मैंने की। पर क्या करूँ तेरे सिवा कोई और है ही नहीं। इसलिए आज अगर सिर्फ 500 रुपये मिल जाएँ तो कल मैं 2000 दूँ। पिछला ब्याज सहित। अब पंडित जी को लगा भाई यह तो बहुत बढ़िया deal है। तो वो 500 का गाँधी वाला नोट धर दिया। वह ले गया उठा के।

अब शराबी को इतनी बुद्धि लगाने की जरूरत तो है नहीं कि आ कहाँ से रहे हैं। क्या हनुमान जी का Reserve Bank of India के साथ कोई Connection है कि निकलते आ रहे हैं, निकलते ही आ रहे हैं। उसको कोई मतलब नहीं पैसा चाहिए मिल गया।

चार दिन तक लौटा नहीं। पैसा कुछ दिया नहीं। छः दिन बाद फिर गया। अब कहता, हे भगवान! आज तो बस मेरा दिल है गर्दन काट के फैंक दूँ मैं। ऐसा बदनाम और ऐसा गंदा आदमी हूँ मैं। पर क्या करूँ आज तो बड़ी भारी जरूरत हो गई। 2000 दे दो तो 10,000 दे दूँगा। पंडित को लगा कि यह तो पागल बना रहा है और अब नहीं मैं रखने का। तो वह बड़ी देर तक कहता रहा, बड़ी देर तक कहता रहा। आज कुछ थाली में आ ही नहीं रहा है। तो पंडित ने कहा देखो भाई! भगवान को विश्राम करना है अब जाओ। बोले-ऐसे कैसे चला जाऊँ। मैं जब जो माँगता हूँ तब मुझको मिलता। आज माँगता हूँ, आज मिलता नहीं है। तो भगवान रोज़-रोज़ थोड़ी देते हैं। फिर आना। और शराबी था और गुस्से में आ कर कहता है अच्छा! यह बात है। तो ठीक है कल आऊँगा। पर कान खोल के सुन ले, अगर कल मुझको न मिला तो तेरी भी

टाँग तोड़ दूँगा और मन्दिर को भी तोड़ दूँगा। शराबी है न, कोई समझदार आदमी तो था नहीं।

अब शराबी था तो ज़रा मीठे और सभ्य शब्दों का प्रयोग करना नहीं जानता था। तुम सभ्य हो और शराब पी कर कभी मन्दिर जाने का सोच भी नहीं सकते हो तो बड़ी होश-होश में और बड़े सुन्दर-सुन्दर शब्दों में तुम भी तो भगवान के साथ Deal करते रहते हो कि नहीं। ये मन्नत वो मन्नत, ये मनोकामना वो मनोकामना। प्रेम कहाँ? व्यापार है। देना ही कुछ नहीं चाहते बदले में चाहते भी बहुत कुछ हो। अजीब सौदा करना चाहते हो तुम। चित्त भी मेरी, पट भी मेरी। देना भी कुछ न पड़े और मिल भी सब कुछ जाए। इसलिए तो फिर अजामिल जैसे कथाएँ घड़ी (बनाई) गई हैं कि मरते-मरते उसने भगवान का नाम लिया, भगवान का भी नहीं अपने बेटे का नाम लिया और वे तर गए और तुमको बड़ी खुशी लगती है तुमको बड़ी प्रसन्नता होती है, ऐसी कथाओं को सुन करके कि ठीक है हम भी यही कर लेंगे काम। मरते-मरते एक बार बुला लेंगे भगवान को (मिलते-जुलते नाम वाले को) और हमारी भी मुक्ति हो जाएगी। खबरदार रहना, ये जो कथावाचक तुमको यह वाली कथा सुनाते हैं मूर्ख बना रहे हैं तुमको और तुम मूर्ख अगर हो तो बन जाओगे और अगर मूर्ख नहीं हो, सयाने हो तो तुम कहोगे चल, चल बाबा! इतना सस्ता नहीं है।

भगवान के साथ सांची प्रीति कुछ ऐसी अवस्था है मन की जिसमें आदमी का अहम्, आदमी की बुद्धि, गलते-गलते गल जाती है बिल्कुल। रहती नहीं है कुछ भी। प्रेम का वह जो भाव

है वह भाव कुछ ऐसा है कि आदमी को लगता है कि सिवा
अब और कुछ मैं कर ही नहीं सकता।

"तेरे कदमों पे सदके मैं, तेरी राहों पे कुर्बा
अब और नहीं राह कोई तेरी रह गुजर के सिवा"

तेरी राहगुजर के सिवा और कोई रास्ता ही नहीं जहाँ मैं
सकूँ। लेकिन आदमी को तो लगता है थोड़ा-थोड़ा संसार चला
थोड़ा-थोड़ा भगवान को खुश कर लो तो दो घड़ी मन्दिर में मथ
पटक आए फिर दिन भर दुकान में खटकते रहे और ख्याल रख
फिर ऐसे पटकने वाले सिर और किसी आम नास्तिक में फिर क
ज्यादा अन्तर नहीं नजर आता। क्योंकि व्यक्ति तो वही का क
रहता है उसमें परिवर्तन तो कोई है नहीं, बदलाव तो कोई है नहीं
प्रेम की रसधार नहीं है तो जीवन में परिवर्तन होगा भी कहाँ से

दुकान में बैठकर के खूब जेब काटता है। तो तुम कल्प
भी नहीं कर सकते हो कि यह रोज मन्दिर जाने वाला आदमी
हाँ! अगर उसने तिलक लगाया हो या कोई हाथ में माला या क
गले में कंठी रखी हो तो तुम पहचान लोगे कि भई यह रोज मन्
जाने वाला एक धार्मिक आदमी है। पर जेब काटते वक्त वो उत
ही अधार्मिक है जितना कोई नास्तिक अधार्मिक है।

कल रात कुछ महिलाएँ जो दर्शन को आईं तो एक महि
ने कहा कि मेरे पति बिल्कुल भी न तो भगवान को मानते हैं
तो मन्दिर। किसी धार्मिक स्थान में आना-जाना नहीं और सत्स
का तो सवाल ही नहीं है। पर पिछले वर्ष जब आप आए
गुजरते-गुजरते स्कूटर से आवाज़ गई तो हम लोग रूक गए, सुन

लगे। कहती अब तो यह हालत है कि वह एक दिन भी Miss नहीं करते हैं। और फिर ध्यान सिखाया था तब से बराबर ध्यान भी कर रहे हैं। तो मैंने उससे कहा इसमें हैरत वाली बात कौन सी है? कहती-नहीं, मैं इसलिए कह रही हूँ कि वो बिल्कुल भी नहीं मानते थे, नास्तिक थे अब बहुत जीवन बदल गया है।

मैंने उस महिला से कहा-कि देखो मेरे साथ ऐसे ही लोगों की बनेगी। शराबियों की, जुआरियों की, नास्तिकों की। वो मेरी बात बहुत जल्दी समझ जाते हैं। मन चूंकि बिल्कुल कोरा है न। कभी-कभी तथाकथित धार्मिक आदमी ने अपने मन को झूठे ज्ञान से, कभी-कभी किये हुए कर्मकांड से इतना अपने आपको श्रेष्ठ हूँ, मैं श्रेष्ठ हूँ, ऐसा भाव उसने बना लिया है कि वो किसी संत की वाणी को नम्रतापूर्वक न तो सुनना चाहता है न सुने हुए वचन का चिन्तन करना चाहता है।

कहती-नहीं-नहीं, वो शराबी नहीं थे। मैंने कहा-होते तो भी मुझे कोई दिक्कत नहीं थी। सुख की तलाश में वह बेचारा भटक रहा था और क्या था? वह अपने सुख को बोतल में ढूँढ रहा था और क्या था? और तो कोई कसूर नहीं है उसका। और मैं उसकी इस तलाश को जरा सा मोड़ देने की चेष्टा कर देती हूँ कि शराब पीनी है तो खूब पियो। कौन मना करता है? मैं तो मना नहीं करती हूँ पर यह है कि पीना तो फिर वह पीना जिसको पीने के बाद फिर नशा हल्का न होता हो। और वो नशा फिर एक ही है, सिर्फ परमात्मा का। उसके अलावा और कोई नशा है ही नहीं।

आम तौर पर साधू, कथावाचक निन्दा करेंगे, डाटेंगे, पाप लगेगा। मरोगे-सड़ोगे नर्क में जो पीते हो। मैं कहती हूँ काहे को? जब तक अन्दर की शराब पीनी नहीं आएगी, तब तक अन्दर का नशा, भीतर का राम रस पीना नहीं आएगा बाहर तो वह खोजेगा ही। नहीं खोजेगा? घर में रोटी न मिलती हो तो आदमी भीख माँगने कटोरा लेकर बाहर नहीं जाएगा क्या? बिल्कुल जाएगा वह। पर जिस दिन कोई दिखाने वाला मिल जाएगा कि नहीं बाहर नहीं भीतर चलो, बाहर नहीं अन्दर चलो। उस दिन उसके ये जो कृत्य हैं वे कृत्य बदल जाएंगे उसके।

आज प्रश्नोत्तरी चलनी थी तो पहला प्रश्न आज मैं लेती हूँ।

प्रश्न : मोह की जड़ जो पीपल के पेड़ की तरह अन्दर तक फैली है ऊपर से तो काट ली जाती है पर अन्दर जड़ पड़ी रहती है। इस मोह की जड़ को अन्दर से साफ कैसे करें?

प्रश्न बड़ा महत्वपूर्ण है। आए कोई संत तुम कथा सुनने लगे। रोज़ नियम से जाते बहुत अच्छा लगता और फिर संत के प्रभाव से थोड़ी साधना भी चालू हो गई। पर जैसे ही संत विदा हुए वो जो दिल में भाव उठ रहे थे वो भाव धीरे-धीरे कम होते-होते फिर आदमी वापस उसी Routine में चला जाता है। कथा सुनते-सुनते में तो आदमियों को, सबको वैराग्य हो जाता है। पर इस वैराग्य को हम लोग कहते हैं श्मशानी वैराग्य। जैसे श्मशान में जा करके मरे हुए आदमी की लाश को देखकर के सब कोई ज्ञान झाड़ने लग जाते हैं। जिसका मरा है वे रो रहे होंगे और जो दूसरे आते हैं वे लोग कह रहे होंगे।

महाराज! दाना पानी उठ गया था, कोई बात नहीं। सबने मर जाना है कोई बात नहीं और बड़े-बड़े दोहे, श्लोक भी सुना देंगे।

"नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणी नैनं दहति पावकः"

आत्मा तो मरती नहीं है, देह मर जाती है। हौसला करिये और रोने वाला रोए चला जा रहा है। एक बात याद रखना तुम दूसरे को ज्ञानी होने का मौका दोगे तो वे ज्ञान तो खूब झाड़ेंगे। बिल्कुल झाड़ेंगे। पर मुश्किल तब हो जाती है जब उसी के घर में मौत हो जाए तो फिर वो रो रहा होगा। तब वो अपना ज्ञान सब भूल जाने वाला है। तब तुम चले जाओगे उसको समझाने-आत्मा तो मरती नहीं है, देह मर जाती है। सांत्वना करिये। जितने श्वास थे पूरे हो गए। जाने वाला चला गया, मरने वाले के साथ मरता है कोई। माने एक दूसरे को उपदेश तो दिया लेकिन एक दूसरे की बात सुनने की या विचार की जरूरत भी कहाँ थी। ऐसे ही सत्संग में या किसी संत की संगत में रहते-रहते एक प्रभाव भीतर आने लग जाता है थोड़ी देर को लगता है कि बस कोई नहीं मेरा, कोई नहीं मेरा और लगता है जैसे बस सब मोह छूट गया, अब तो महाराज! हम भगवान के हो गए और भगवान के अलावा कोई है ही नहीं हमारा। तो यूँ लगा जैसे मोह खत्म हो गया। निर्मोह हो गए। पर ये निर्मोह होने का भाव ज्यादा दिन तक टिकता नहीं तो फिर लगता है ओहो! ये तो बड़ी गलती में थे हम। हमारा मोह तो अभी भी उतना ही है अन्दर।

श्री मद्भागवत् में जड़ भरत की कथा बहुत प्यारी आती है कि जड़ भरत ने अपना राज्य त्याग दिया, पत्नी को त्याग दिया, सारे सुख वैभव त्याग दिए, साधू हो गया, तपस्वी हो गया और वो

मुनि बन कर तप करता है, कुटिया में रहता है। फिर एक दिन एक हिरनी के बच्चे को....। हिरनी अपनी जान बचाने वास्ते शेर से, नदी में छलाँग लगाई और छलाँग लगाते-लगाते में ही प्रसव हो गया और बच्चे को जन्म देकर हिरनी मर गयी। उसकी मरी देह को तो शेर ने खा लिया पर वह जो बच्चा नदी में गिर गया था वह इस जड़ भरत जी के हाथ में आ गया अब वह इतना प्यारा नन्हा सा बच्चा जड़ भरत जी कहते बड़े प्यार से उसका लालन-पालन करें, पालन पोषण करें और फिर इतना मोह इतना मोह उससे बढ़ गया कि उसके बगैर वो एक क्षण न रहते और फिर ऐसे ही उनकी मृत्यु हो गई। भागवत की कथा कहती है अगला जन्म जड़ भरत का एक हिरन के रूप में हुआ। लगा कि मोह मुक्त हो गये। घर छोड़ दिया, परिवार छोड़ दिया, पत्नी छोड़ दी। महाभोगी विलासी था यह। एकदम त्यागी हो गया इन्द्रियों का इतना संयम पर मन में मोह फिर भी रहा। जड़ फिर भी रही। इस ममता की जड़ को काटना तब तक सम्भव नहीं हो सकता कि जब तक आप अपने ही शरीर से ममत्व भाव को तोड़ नहीं पाएंगे। जब तक यह लगता रहेगा कि यह शरीर मेरा है, मेरा ही शरीर है, मैं इस शरीर में हूँ।

"अहम् देहम्, मम् देहम्"

जब तक मैं देह हूँ, मेरा देह है ऐसा भाव बना रहेगा तब तक लाख भर परिवार छोड़ दो। ममता नहीं छूटेगी। राजा जनक याज्ञवलक्य मुनि इत्यादि जितने गृहस्थ राजाओं और ऋषियों के उदाहरण हैं इन लोगों ने घर नहीं त्यागे। महाऋषि वशिष्ठ ने घर नहीं त्यागा कि मोह त्याग करने के लिए घर त्याग किया हो। नहीं

ऐसी तो परम्परा भी नहीं थी। घर में थे। महाऋषि वशिष्ठ अपनी पत्नी अरून्धती के साथ रहते थे। तो मोह था जिस कारण, पत्नी के साथ रहते। और क्या जो त्याग के चले जाते पत्नी को, वे मोह से मुक्त हो जाते हैं? ख्याल करना, पत्नी त्याग के चले जाने से, पति त्याग के चले जाने से तुम मोह को त्याग दोगे इस झूठे ख्याल को छोड़ देना। वशिष्ठ ने जरूर त्याग किया पर वशिष्ठ ने न पत्नी, न परिवार का त्याग किया उन्होंने सिर्फ यह देह मैं नहीं हूँ, यह देह मेरी नहीं है इतनी भर बात का त्याग कर दिया। देह तुम्हारा है? हालांकि लगता तो तुम्हें यही है कि यह मेरा है।

किसी ने पूछा कि महाराज युक्ति बताइये कि मरे न। मौत से सबको डर लगता है। बोले-महात्मा जी कोई युक्ति बताइये कि हमको मौत न आए। महात्मा ने कहा-एक युक्ति है। साँस लेते रहना। क्या करना? श्वास लेते रहोगे तो मौत नहीं होगी। अब यह कोई युक्ति है? प्रश्नकर्ता बड़ा सन्तुष्ट। हाँ, महाराज! श्वास तो लेते रहेंगे। जब मौत की वह घड़ी आएगी तो श्वास लेना चाहोगे तो भी...। तुम्हारे चाहने से श्वास आ रही है? बोलो न। तुम चाह रहे हो तुम सोच रहे हो तो श्वास...। अगर ऐसा होता तो गहरी नींद में जा कर सब लोग मर जाते क्योंकि नींद में तो ख्याल शरीर का भी खत्म हो जाता है। पर नींद में भी श्वास तो, बेहोशी में भी श्वास तो, चलती रहती है। कोमा में चला जाए कोई आदमी तो भी श्वास तो चलती ही जा रही। तो श्वास तुम ले रहे हो कि श्वास आ रही है? अगर ले रहे होते तो लेते रहना बन्द नहीं करना। कभी मौत नहीं होगी, अमर हो जाओगे बिल्कुल। कंस और रावण की तरह बिल्कुल अमर हो जाओगे। पर श्वास तुम ले नहीं रहे श्वास तो आ

रही हैं तो कैसे कह सकते हो मेरा शरीर। अच्छा और पूछती हूँ पलकें झपक रहे हो कि पलकें झपकी जा रही हैं। छोटी सी बात है। कोई बहुत बड़ी बात नहीं, मैं कह रही हूँ।

दिल का धड़कना, फेफड़ों का चलना, Pancreas का Move होना, जितना Digestive system है वह चलना, Brain का Nervous system मैं इसकी बात तो पूछ ही नहीं रही। छोटी सी बात पूछ रही हूँ। पलकें तुम झपक रहे हो कि पलकें भी झपकी जा रही हैं। झपकी जा रही हैं तुम नहीं. . । कभी-कभी बच्चे खेल खेलते हैं न वो आमने सामने बैठ जाते हैं। Competition करते हैं कि कौन पहले पलक झपकेगा तो आँख चौड़ी करके एक दूसरे को देखते रहते हैं और फिर वो बस, डप! यूँ झपक ली गई। तो वो लड़ाई हो जाती वो कहते तुमने झपकी। वो कहते मैंने तो झपकी नहीं और सच कह रहा है क्योंकि पलक तो झपक ही जाती है तुम झपकाते थोड़ी हो।

तुम कैसे कह सकते हो कि शरीर तुम्हारा। शरीर तो तुम्हारा है नहीं। पर शरीर मेरा है यह सबको लगता है। इस जड़ पर वार कर दो। एक बार जड़ काट दी तो पेड़ काटने की, अलग-अलग शाखाएँ काटने की, पत्ते काटने की, अलग-अलग जरूरत रह ही नहीं जाती। तो तुम अगर चाहते हो कि मोह से छुट्टी हो जाए तो फिर किसी संत की संगत में निरन्तर रहो और फिर ध्यान के द्वारा जिस दिन...।

जैसे मैं घोड़े पर सवार बैठता हूँ ऐसे मैं इस देह में हूँ पर देह से भिन्न हूँ। देह का मोह छूटे तो ही ममता का जाल टूटेगा।

प्रश्न : पूछते हैं कि रात का स्वप्न तो भूल जाते हैं

क्योंकि रोज नया या रूख बदला होता है पर दिन में तो रोज वही कर्म वही हालात होते हैं। फिर उसे स्वप्न कैसे मानें? दुनिया को कहते हैं कि ख्वाब है पर दुनिया ख्वाब लगती तो नहीं है।

प्रश्न बहुत अच्छा है। आज तो हमने भजन भी वही गाया–

"मैंने सपने में आज देखा है
श्याम मुरली बजाते देखा है"

सपना, स्वप्न को थोड़ा समझियेगा। मनौविज्ञानिक आदमी कहते हैं हर स्वस्थ आदमी एक रात में आठ से दस सपने देखता है। हर सपने की Duration, हर स्वप्न का जो काल है वह 15 से 20 मिनट तक का है। अब ऐसे यंत्र बन चुके हैं कि आपके Brain, आपकी खोपड़ी के साथ लगा दिये जाएँ तो जैसे Cardiogram के ऊपर पूरा Graph आ जाता है आपके हृदय की धड़कन के विषय में। E.E.G में जैसे आपके दिमाग की सारी जो Clear Graph बन जाती है ऐसे ही Dream Analysis मशीन अब बन गई है जो कि Laboratory में इस्तेमाल करते हैं और वो दूसरी एक वैज्ञानिक ढंग से Recording करके देखा गया कि हर व्यक्ति 15 से 20 मिनट लम्बा और 8 से 10 स्वप्न हर रात में देखते हैं। पर स्वप्न हमें याद कौन सा रहता है जो नींद से जगने से बिल्कुल साथ-साथ में देखा हो बस वही। बहुत भयानक है बहुत डर का सपना चल रहा हो और अचानक नींद खुल जाए, डर के कारण से, तो भी वो स्वप्न तुमको याद रहता है या . . .। नींद बिल्कुल ठीक-ठीक चली हो पूरी रात और जगने से पहले-पहले Last जो अंतिम स्वप्न तुमने देखा हो

वह स्वप्न तुमको याद रहता है। पर एक बात मैं तुमसे पूछती हूं जब स्वप्न चल रहा होता है तो क्या उस वक्त यह ख्याल तुमको आता है कि ये स्वप्न है। थोड़ा गम्भीरता से विचार करके देखो तो बिल्कुल पता नहीं चलता है कि यह सपना है। सपना टूट जाए, नींद खुल जाए और तुम जगने के बाद फिर देखते हो कि अच्छा वो तो सपना था। हैरानी की बात यह है कि स्वप्न कौन देखता है, यह आपका ही मन देखता है। अर्ध चेतन अवस्था में Sub-Conscious Mind में सारा स्वप्न चलता है सुषुप्ति में मन लगभग-लगभग Un-conscious है बिल्कुल भी होश नहीं है और जागृत अवस्था में मन पूरे होश में है।

स्वप्न जब चलता है तब यह हालत है न तो तुम पूरे बेहोश हो जैसे गहरी नींद में और न तो पूरे होश में हो जैसे कि जागृत Waking state में हो। बीच की अवस्था में स्वप्न चलता है। अच्छा सपना है क्या? सपना और कुछ नहीं। तुम्हारे ही मन के विचार। जो दिन भर तुमने देखा सुना, वह सब संस्कार तुम्हारे मन में Imprint होते जाते हैं। सब अंकित होता जाता है। पर ख्याल रहे सिर्फ दिन का नहीं महीनों-सालों, यहाँ तक की पिछले जन्मों, लाखों-लाखों जन्मों के संस्कार जो हैं वो आपके इस मन की गहरी परतों के भीतर पड़े हैं स्वप्न में खुलने लग जाते हैं इसलिए तो बड़े-बड़े अजीबो-गरीब स्वप्न देखते हो। कहीं यह कि तुम पंछी बने उड़ रहे हो, कहीं यह कि तुम गहरे पानी में चले गए और अजीब-अजीब हालात और देशों में तुम अपने आप को देखते हो। पर जितनी देर तक स्वप्न चल रहा हो उतनी देर तक किसी माई के लाल को यह ख्याल नहीं होता कि यह सपना है और अगर किसी को यह ख्याल आ जाए कि यह जो

मैं देख रहा हूँ यह सचमुच का नहीं है यह सपना है तो याद रखना सपना टूट जाएगा। सपना चल नहीं सकता। सपना तब तक चलता है जब तक तुमको वो सपना नहीं, सच लग रहा हो। तुम कहते हो सपने रोज नए होते हैं, रोज बदल जाते हैं तो सपने लगते हैं। दिन में तो रोज वही कर्म करते रहते हैं वही शक्लें, वही परिवार, वही मकान सब कुछ वैसा। कुछ नहीं बदलता है। इसलिए यह सच्चा लगता है कि और सपने झूठे लगते हैं तो बताओ कैसे हम दुनिया को सपना माने जैसा कि ऋषि लोग, उपनिषद कहते हैं कि संसार सारा झूठ है स्वप्न की न्याई है।

"जैसे सपना रैन का तैसो ये संसार"

ऐसा कैसे हम मान ले? ख्याल रखना तुमने सपने को भी सपना कब जाना? हर रात सपने से उठने के बाद तुमने कहा कि वह सपना था। वह सपना था। वह सपना था पर जगने के बाद कह रहे हो कि सपने चलते में कह रहे हो? सपने चलते में कह रहे हो? सपने चलते में तो कह ही नहीं रहे हो तो जब सपना चल रहा था तब भी तुमने उसको सच्चा माना, जागने के बाद उसको झूठा कहा। ठीक ऐसे ही यह जिस दुनिया को तुम देख रहे हो ये दुनिया भी चलता स्वप्न है पर जब तक तुम जागोगे नहीं तब तक तुमको ये सपना लगेगा नहीं चाहे हजार बार मंत्र जाप कर लो। मंत्र जाप की दुनिया झूठ है, झूठ है, झूठ है। तुम्हारे कह देने से दुनिया झूठ हो जाएगी। शंकराचार्य जब कहते हैं-

ब्रह्म सत्यम् जगत मिथ्या जीवो ब्रह्मै न पराः।

परमात्मा ही सत्य है सारी दुनिया मिथ्या है। झूठ है। मिथ्या

किसको कहते हैं, जिसका प्राग भाव, प्रदवंसा भाव न मालूम हो कि कब चालू हो कब खत्म हो जाए। जिसका आदि-अंत न समझ लगता हो उसको हम मिथ्या कहते हैं और सारा माया जगत मिथ्या है। ऐसा शंकराचार्य को लगा। अब कई बार जब ये श्लोक पढ़ते हैं लोग तो वो कहते हैं महाराज! कैसे मिथ्या है? ख्याल करना जब शंकराचार्य कहते हैं कि संसार मिथ्या है तो वो अपनी स्थिति ब्यान कर रहे हैं कि मेरे लिए मिथ्या हो गया है अभी तेरे लिए सच्चा ही है। तेरे लिए संसार झूठ उस दिन होगा जिस दिन तू अपने आत्मतत्व की सच्चाई को समझ लेगा। उसके पहले पढ़ते रहो इस श्लोक को, पर लगेगा कि भई संसार झूठ है तो फिर हम झूठ के पीछे क्यों भाग रहे हैं। ख्याल रखो। एक बात मैं...।

कभी-कभी ऐसे अजीबो गरीब हालात हो जाते हैं। हम लोग ऋषिकेश में जहाँ पहली कुटिया थी तो आस-पास बहुत जंगल था और साँप बिच्छू बहुत रहते थे। तो हमारे जो साधक कभी-कभी आ जाते रहने को, तो हम उनसे कहते कि भई! रात अगर तुमको बाथरूम, शौचालय जाना हो तो पहले लाइट जलाना फिर जाना क्योंकि किसी सर्प पर पैर आ जाएगा या तो बिच्छू काट ले तो मुश्किल हो जाएगी। एक महिला दिल्ली से आई हुई थी वह रूकी। रात उनको पेशाब जाना था तो वो लाइट जलाई नहीं उन्होंने Street light जो बाहर से थोड़ी आ रही थी तो उनको लगा इसी में चली जाऊँगी। तो जैसे चली चलते-चलते निगाह गई तो चीख निकल गई। साँप, साँप, साँप। आवाज सुन के बाहर जब गए तो हम लोग, लाइट जलाई। साँप नहीं था। एक रस्सी का टुकड़ा ढील सा पड़ा था। पूरी रोशनी नहीं थी और पूरा अंधकार भी नहीं था। पड़ी

हुई रस्सी को देख करके क्या बोलती है साँप और डर रही है। चीख रही हैं, गुरूजी बचाओ। मैंने कहा, अब तेरा ज्ञान कहाँ गया। गुरू जी बचाओ! अब गुरूजी क्या करें!

वह ख्याल जा नहीं रहा। अभी भी डर लग रहा। काहे से? साँप से कि रस्सी से? उस साँप से जो रस्सी में है नहीं। और रस्सी है देखकर के भी सर्प का भाव नहीं जा रहा है।

बस, आदमी की जो संसार झूठा-झूठा जो बोलते हैं बस इसी तरह से। अब जिसने सचमुच में समझा तो उसके पास, रस्सी पड़ी भी रहे तो उसे दिक्कत...। और सर्पों की बाबत मैं कहूँ सिर्फ कोबरा और पाइथन ये दो सर्प ऐसे हैं जिनमें जहर है और बाकी तमाम सर्प जाति में जहर है नहीं। पर फिर लोग इतने मरते क्यों हैं? वो मर जाते हैं भय से। भय से ही मर जाते हैं। साँप ने काट लिया माने वो जहरीला होगा ही। मरेगा ही मरेगा। रस्सी देखने पर भी सर्प का भय बराबर बना हुआ है। क्योंकि प्रकाश में जाकर पूरे से निरीक्षण करके समझा नहीं है। तो जिसको तुम कह रह हो कि वो सपना। अब मैं तुमसे कहती हूँ जब सपना चले तब याद रखना कि ये सपना है। तब याद रहता नहीं।

अब ज्ञानी ने अपने भीतर उस सत्य स्वरूप को समझा तो वो कहता है वाह! वाह! एक परमात्मा ही सच। अब रस्सी देख ली न। अब कह रहा है परमात्मा ही सच और साँप तो झूठा। ये दुनिया का, माया का रेला-पेला तो झूठा। अब उस संत के अनुभव को तुमने सुना या अगर लिखा गया किताब में तो तुमने पढ़ लिया। अब पढ़े हुए और सुने हुए को तुम दोहराए चले जा रहे हो कि भगवान सांचा

और दुनिया झूठी। निरीक्षण किया नहीं। ध्यान में उतरे नहीं। गहरी साधना की नहीं। कैसे पता चलेगा?

एक प्रश्न मेरे पास जाने कितने बार आएगा और भगवान जाने जब तक यह शरीर जिन्दा रहेगा तब तक आता ही रहेगा। समस्या बड़ी गम्भीर है।

प्रश्न पूछते हैं कम से कम दस प्रश्न थे और प्रश्न एक ही कि एक गुरू से दीक्षा ले चुके हैं पर सन्तुष्टि नहीं है आप को सुनते हैं तो मन को शान्ति मिलती है। आपका सत्संग अद्वितीय है। अब आप बताइये कि हम क्या करें? जो गुरू हैं, उनसे सन्तुष्ट नहीं है तो उनको छोड़ दें? छोड़ दें अगर, तो क्या मुझे पाप लगेगा?

मैं तुम्हारी हालत को खूब समझती हूँ-मंजू। खूब समझती हूँ मैं तुम्हारी हालत को। पर मैं एक बात कहूँ जब गुरू तुमने बनाया था, जब गुरू तुमने किया था तब बिल्कुल कोई सोच विचार नहीं किये थे कि सास ने कान पकड़ के बैठा लिया था। ले मंत्र, गुरूजी से। तो तुमने ले लिया। क्या ऐसा किया था? कि एक मतलब कुन्बा, परिवार एक जगह जाता था तो वहाँ तुमको भी जाना था तो उनके साथ तुमको भी लेना पड़ा।

अच्छा मुझे समझ नहीं लगती लोग दीक्षा ऐसे लेते हैं जैसे प्रसाद बंट रहा है कि चलो भई हलवा मिल रहा है तो मैं भी खा लेता हूँ। खा ही रहे हैं न तो क्या है दीक्षा कहीं कोई संत दे रहे हों। मुझे तो बड़ी हैरानी होती है। देने वाले भी थोक के भाव में देते हैं और लेने वाले भी थोक के भाव में लेते हैं और लेने के बाद फिर

पछताते हैं महाराज! अब क्या करें? सन्तुष्ट नहीं हैं।

दीक्षा का अर्थ जाने समझे बिना गुरू बना लेना तो फिर पश्चाताप तो होगा ही, बिल्कुल होगा। गुरू बनाने का अर्थ क्या लेते हो तुम? किसी से मंत्र ले लिया और फिर उसकी तस्वीर को टाँग दिया। तो गुरू जी दीवार पर टंगे हुए हैं और तुम दुनिया में टंगे हुए हो। खूब जोड़ी बनी हुई है और जिसको गुरू बनाया उसको भी सन्तुष्टि कि तुमने साल के साल चन्दा भेज दिया और चेले को बड़ी सन्तुष्टि कि गुरू तार ही देंगे क्योंकि गुरू तो हमने बना ही लिए हैं।

एक बात याद रखना। जैसा भी तुम गुरू बना लो, लेकिन जब तलक साधना नहीं करोगे तो ब्रह्म भी तुमको तार नहीं सकेगा। शंकर को भी तुम गुरू बना लो, पर अगर बताए हुए मार्ग पर चलना नहीं न प्रेम का स्वाद, न ज्ञान की ऊँचाई, न ध्यान की गहराई और तुम कहो हमारे को सन्तुष्टि मिल जाए। कैसे मिल जाएगी भइया? मुझे तो बड़ी हैरत लगती है लोगों ने गुरू ऐसे बनाए कि बस कुछ न पूछो अब फिर गुरू बने हैं तो बने हैं। अब कई बार कहते कि महाराज तब अक्ल नहीं थी, अब अक्ल आई है। अब जैसे वह बाल विवाह होता है न। नहीं होता बाल विवाह?

बाल विवाह आज भारतीय कानून के अनुसार मान्य नहीं है। illegal है। ठीक है कि नहीं? भारतीय संविधान बाल विवाह को मान्यता नहीं देता। वह कहता है 18 साल की लड़की हो, 21 वर्ष का युवक हो, लड़का हो तो ब्याह माना जाएगा। अन्यथा नाबालिग के साथ ब्याह किया या करवाया जाए तो उसकी 7 से लेकर 15 साल की कड़ी कैद भी है। सजा भी है और जुर्माना

भी है। अब अगर तुमको लगता है कि हमने नाबालिग अवस्था में गुरू बना लिये थे महाराज! फिर वो गैर कानूनी तो है ही है illegal तो है ही है तो फिर उसमें पाप कहो तो कोई नहीं है गैर कानूनी तो है ही।

दीक्षा का अर्थ होता है, सार में समझना। दीक्षा का अर्थ आप अपने आपको किसी संत के प्रेम के बन्धन में बाँधते हो। और संत भी तुमको वचन देता है कि जो कुछ मैंने अपनी साधना जीवन और गुरू की कृपा से ज्ञान जाना है वह सब कुछ मैं तुमको खुले दिल से बताऊँगा और शिष्य कहता है-हे गुरूवर! आपके बताए मार्ग पर मैं चलने का पूरा प्रयास करूँगा पर जहाँ गिर जाऊँ तो सम्भाल लेना।

ख्याल रहे, शरीर से कोई भी गुरू सदा नहीं रहा है न सदा रहेगा। पर गुरू का दिया हुआ ज्ञान अमर है वह हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा। तो गुरू बनाने से अधिक गुरू के ज्ञान को धारण करना जरूरी है। पर प्रथा यह चल पड़ी है कि मैंने गुरू धारण कर लिया। और मैं हमेशा पूछती हूँ कि गुरू को ही धारण किया कि गुरू के ज्ञान को भी धारण किया। गुरू के उपदेश को भी धारण किया और अगर उपदेश और ज्ञान को धारण नहीं किया तो क्या एक; क्या दस गुरू बना लो तो भी कुछ नहीं होने का है। पर इसमें एक बात मैं और जरूर जोड़ देना चाहती हूँ। हो सकता है कि जिसको तुमने गुरू बनाया हो कमी उसमें नहीं, कमी खुद तुम्हारे में है। पर दूसरे को दोष देना बड़ा आसान है।

मैं नाम नहीं लूँगी पर बहुत से गुरूओं के चेले ऐसे मेरे पास

आ जाते हैं और जिद्द करके (मैं सच कह रही हूँ जिद्द करके) अनशन कर देंगे, खाएंगे-पिएंगे नहीं, हड़ताल कर देंगे कि अब आपसे पुनः दीक्षा हमको चाहिए ही चाहिए। और कभी-कभी ऐसे हड़तालियों के आगे, महाराज! झुकना पड़ भी जाता है। मैं दे भी देती हूँ। तो मैं उनसे हमेशा बात पूछती हूँ कि इसकी क्या गारन्टी है कि कल तुम हमें भी छोड़ के कहीं और नहीं चले जाओगे।

हालांकि मैं आज तुमको एक रहस्य की बात बताऊँ। दीक्षा के समय जब भी मैं दीक्षा देती हूँ तब मैं हमेशा उन Socalled तथाकथित शिष्यों को कह देती हूँ कि मेरी तरफ से तुमको कोई बन्धन नहीं चाहो तो मुझे छोड़ कर जा सकते हो। मैं अपनी तरफ से तुम्हारी गुरू नहीं हूँ क्योंकि मैं अपनी तरफ से तुमको ब्रह्मस्वरूप जानती हूँ मैं तुम्हें शिष्य जानती नहीं हूँ। तुम अगर चाहते हो तो गुरू कह सकते हो पर मैं तुमको शिष्य शायद उस दिन कहूँगी जिस दिन मैं देखूँ कि हाँ तुम मेरे बताए और चलाए हुए मार्ग पर चल रहे हो। कोई जीवन में ऊँचाई, कुछ साधना देखूँगी तो कहूँगी अन्यथा तुम्हारी तरफ से भले मैं तुम्हारी गुरू पर मेरी तरफ से तुम मेरे शिष्य नहीं हो और मैं तो बिल्कुल खुली छुट्टी देती हूँ। जो जानती हूँ मैं तुमको बताऊँगी, जो समझती हूँ वो बताऊँगी। पर कई बार मैंने ये देखा अब जैसे यहाँ कल बहुत से लोगों ने कहा महाराज! आपने पिछली बार कहा था कि ध्यान शिविर जैसा हरिद्वार में होता है वैसा यहाँ कानपुर में होगा तो वह हुआ नहीं। मैंने कहा कि भई! कुछ कारण से नहीं हो पाया। कुछ परिस्थिति ऐसी हो गई पर तुम हरिद्वार क्यों नहीं आए। हरिद्वार हर वर्ष पाँच दिन का सर्दियों में दिसम्बर के

महीने हम शिविर कराते हैं, तुम उसमें क्यों नहीं आए? ओ महाराज! वेल नहीं लगी सी। तो मैं-मैनूँ वेला समझया है? तुम्ह फुर्सत नहीं वहाँ आने की और तुम चाहते हो तुम्हें घर में बैठे सिख दूँ मैं। दिक्कत कोई नहीं है। मुश्किल कोई नहीं है। पर चक्क यह है कि तुम्हारी प्यास इतनी झूठी है। तुम्हारी माँग इतनी छोटी है कि क्या कहूँ।

यहाँ मान लीजिये आपको तुम्हारे शहर में तुम्हारे बच्चे को अच्छे कालेज में Addmission न मिले तो क्या तुम अपने बच्चो को बंगलौर और हैदराबाद और कहाँ-कहाँ नहीं भेज देते हो कि जाओ बच्चे वहाँ पढ़ लो। यहाँ नहीं Addmission एक तो Reservation और आरक्षण ने सत्यानाश कर रखा है। योग्य बच्चो को मिलता नहीं है। अयोग्य जो हैं वह कई बार पहुँच जाते हैं। क्या दूर दराज तक तुम अपने बच्चों को पढ़ाई लिखाई...। ऐसे तुम लड़की का रिश्ता करने लगो और तुम्हें अपने शहर में अच्छा रिश्ता नहीं मिल रहा। दूर कहीं हजारों मील दूर कहीं कलकत्ता, बम्बई, अमेरिका कहीं तुमको अच्छा लड़का, अच्छा घर-घराना मिल रहा हो तो रिश्ता नहीं कर देते हो कि जाओ बेटी सुख से रहना। जहाँ रहेगी सुख से रहेगी, तू भले जा, दूर भी जा कोई बात नहीं। पर जहाँ ज्ञान की बात आ जाए, ध्यान सीखने की बात आ जाए तब तुम कैसे निठल्ले और आलसी हो जाते हो कि हम तो वहाँ नहीं जा सकते। यहीं घर बैठे सिखा दो। हमने कहा-इस बार हम भी नहीं सिखाएंगे।

भाव मेरा कहने का यह है कि जरूरी नहीं कि जिस गुरू से तुम सन्तुष्ट, कह रहे हो कि मैं नहीं हूँ। हो सकता है कमी तुम्हारे

में है और यह भी हो सकता है कि जिसको तुमने गुरू बनाया कभी उसी में है। शायर कहता है-

"ऐ शेख पड़ा गिरेबान पे हाथ बड़ी मुद्दत के बाद
मैं समझता था कि मंजिल कुछ दूर नहीं"

सच तो यह है कि परमात्मा तुमसे दूर नहीं। सच तो यह है कि भगवान तुमसे दूर नहीं। सच तो यह है कि भगवान शाहों का शाह तुम्हारे दिल के आसन पर बैठा है। सच तो ये है कि एक घड़ी पल भी कमी नहीं तुम्हारी मुक्ति में। सच तो यह है कि तुम बुद्ध स्वयं हो। सच तो यह है कि तुम खुद भगवान के ही स्वरूप हो। पर इतनी भर बात को Clear करने के लिए किसी न किसी गुरू की, संत की संगति की आवश्यकता है पर गुरू कौन? मैंने हजार बार कहा आज एक हजार एक बार कह रही हूँ गुरू वह है जिसके भीतर सत् है और जो तुमको सत् की प्राप्ति में सहायता दे सकता है बस। चेला बनाना जिसका उद्देश्य हो, धन इकट्ठा करना जिसका उद्देश्य हो वो तुम्हारे लक्ष्य में कभी तुम्हारा सहायक नहीं हो पाएगा। बिल्कुल नहीं हो पाएगा। इसलिए तुम दूसरे में कभी ढूँढ़ना चाहते हो। कभी-कभी मेरे कुछ एक पुराने शिष्य तो कई लोग कहेंगे कि महाराज! वह अब आपके आते नहीं हैं। अब तो वहाँ जाते हैं, तो मैंने कहा बुरा क्या है, अच्छा है, अच्छा है। यहाँ प्यास न बुझी तो वहाँ सही। जीवन बहुत छोटा है लक्ष्य बहुत बड़ा है। सत् की प्राप्ति, आत्म साक्षात्कार भीतर ईश्वर का दर्शन यह लक्ष्य है। मेरे से न हो पाया तो दूसरे से सही। मुझे बड़ा आनन्द है। मेरी शुभकामनाएँ हैं उनके साथ।

इसमें भी बड़ा झगड़ा-झमेला है। घर छोड़ा, परिवार छोड़ा, मेरी-तेरी छोड़ी पर अगर अन्दर ममता की जड़ पड़ी है तो फिर चेला मेरा, आश्रम मेरा। फिर इस झगड़े में साधू पड़ जाता है। हम तो कहते हैं-

आए को हर्ष नहीं। शिष्य आ जाए, प्रेमी आ जाए कोई तो

"आए को हर्ष नहीं, गए को शोक नहीं
कैसे निर्द्वन्द भयो समझने की बात है
देह नेह नेड़े नहीं लक्ष्मी को हेरे नहीं
मन काहूँ फेरे नहीं, जन्म है न जात है
ऐसे जब ज्ञान होए तभी नर मोक्ष पाए
ब्रह्म के समान होत, ब्रह्म में समात है"

आए तो अच्छा, नहीं आते तो जाओ। आए हो तो खुली बाँह स्वागत है तुम्हारा। नहीं आते हो तो पीछे से हम चिट्ठी नहीं भेजने वाले कि हम तुम्हारे बिना उदास हैं। क्योंकि उदासी अब इस दिल में आती नहीं। जब से दिल दिलबर से लगा, तब से बस दिल में आनन्द है। दिल में न दुःख है, न चिन्ता है, न शोक है, न मोह है।

एक अन्तिम प्रश्न और ले लेते हैं। पूछा है कि

प्रेम की कसौटी क्या है? गुरू तो शिष्य के प्रेम की गहराई जानता है। परन्तु शिष्य अपने प्रेम को कैसे परखे? कैसे जाने कि उसके दिल में कितनी श्रद्धा है, और समर्पित जीवन की पहचान क्या है?

ख्याल रहे प्रेम की कसौटी तो अपने आप हो गई जब तुम्हारी श्रद्धा जो गुरू के प्रति थी इतनी सम्पूर्ण अहसास भीतर

देती है कि आदमी को फिर ऐसा लगता भी नहीं कभी कि क्या मुझे प्रेम है कि नहीं। जिसे यह लग रहा है कि मुझे प्रेम है कि नहीं मतलब उसे खुद ही को शंका है। तो जहाँ शंका है, वहाँ मतलब अभी प्रेम...। तुम कसौटी पूछना चाहते हो। कसौटी बताओ और क्या कहूँ। प्रेम अपने आप में ही कसौटी है। प्रेम को तुम किसी अन्य कसौटी पर नहीं परख सकते हो। जब प्रेम है तो बस है और जब प्रेम नहीं है तो नहीं है। प्रेम की मात्रा, प्रेम की Percentage भी नहीं होती कि इतनी Percent है। पहले तो थोड़ा-थोड़ा प्यार था अब ज्यादा-ज्यादा प्यार है। पहले गुनगुना प्यार था, अब तो बड़ा तेज प्यार है। प्यार है कि बुखार है? क्या है? अभी 98 था तो अब 100 हुआ अब 104 हो गया अब 108 हो गया अब फिर वापस Normal 98 हो गया। ये प्यार है कि बुखार है? क्या है ये भई तुम्हारा।

अगर प्रेम तुमको सचमुच में होगा तो प्रेम तुमको इतना गहरा अहसास, इतना संतोष इतनी तृप्ति भीतर देगा कि तुमको पूछने की जरूरत नहीं होगी कि मुझे प्रेम है कि नहीं और सच कहूँ तो तुम यह भी कल्पना कर रहे हो कि गुरू को पता लग जाता है कि शिष्य को कितना प्यार है। अब सैंकड़ों लोग मुझे गुरू मानते हैं और मैं इस व्यास आसन पर बैठी बड़ी ईमानदारी से, इतने ईमानदार, सच बोलने वाले शायद ही तुमको मिले। अब यह अन्दर की राज की बात है जो गुरूओं के दिल-दिल में होती है, हम बाहर निकाल रहे हैं। मैं नहीं कह सकती हूँ कि मेरे किसी शिष्य को मेरे से कितना प्यार है। और याद रखना जो शिष्य बार-बार आकर कहता है न कि गुरू जी प्यार है, गुरू जी प्यार है तो माने कहीं

प्यार नहीं बुखार है। प्यार जब होता है तो आँखें नम हो जाती है प्यार जब होता है तो गला भर आता है। प्यार जब होता है तो गर्द बस झुक जाती है और कुछ नहीं हो सकता।

शायर कहता है न-

"न नमाज आती है न वजू आता है,
सजदा कर लेता हूँ जो सामने तू आता है।"

बस शीश झुक गया। अब झुके हुए सिर के बाद यह तो कहना नहीं पड़ता न कि गुरू जी देख लो शीश झुका है। जहाँ कहने की जरूरत हो...।

अमेरिका में Marriage and Divorce नाम की पुस्तक धड़ाधड़ बिकी। Just like hot cakes, उसमें Author लिखता है लेखक कहता है कि ऐ दुनिया के पति-पत्नियों सावधान हो जाओ! जिस दिन तुमको तुम्हारा पति अथवा पत्नी ज्यादा बार-बार कहे कि मुझे तुमसे प्यार है, मुझे तुमसे प्यार है तो समझ लेना इसने जरूर कहीं टांका भिड़ाया है। और वो अन्दर से, सुरक्षा की दृष्टि से, तुमको अहसास देना चाह रहा है कि मेरे पर कोई शकोशुबा नहीं करना बहुत प्यार है। लेखक लिखता है जब पति ज्यादा फूल देने लग जाए पत्नी को, आभूषण, चॉकलेट देने लग जाए तो पत्नी जरूर खबरदार हो जाए कि जरूर कुछ दाल में काला है।

मुझे स्मरण आया हमारे एक मिलने वाले, सुनने वाले शिष्य पति पत्नी काफी बड़ी उम्र के। एक दिन ऐसे बैठे थे उनके घर में तो मैंने पूछा-कि कभी इसने तुमको कहा कि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। पति ने कहा कभी नहीं और पत्नी ने भी कहा कभी नहीं। बहुत

कुरेदा मैंने, कि क्यों नहीं कहा तो पति ने जवाब दिया। वो कहते, महाराज! कहने की जरूरत क्या! कहने की जरूरत ही क्यों पड़े? कहने की जरूरत तो वहाँ पड़ती है जहाँ नहीं होता है। जहाँ होता है, वहाँ कहना नहीं पड़ता।

तो प्रेम की कसौटी क्या है? प्रेम की कसौटी यह है कि तुमको मुझसे पूछना न पड़े कि महाराज हमें आपसे प्यार है कि नहीं। हम फोन नहीं उठाते जब दिल्ली में हों। दूसरे-दूसरे सब लोग उठाते हैं फोन। एक बार गलती से वह बहुत देर तक घंटी बज रही थी किसी ने उठाया नहीं और मैं बहुत नजदीक थी फोन के तो उठा लिया फोन। तो वो जैसे ही कहा, 'हैलो' तो सामने वाला जो उधर से कर रहे थे फोन। तो महिला एक दम आवाज पहचान गई। कहती-स्वामी जी आप बोल रहे हो? मैंने कहा-हाँ। तो उसका Dialogue चालू हो गया। आप कितने प्यारे हो। आप कितने अच्छे हो। आप फलाने हो, आप ढिमकाने हो, आप ये हो, आप वो हो, अब लम्बा चल रहा है। मैंने कहा आप कहना क्या चाहते हो मुझसे पहले वह कह लो और जो Adjectives लगा रहे हो न मेरे साथ, ये बहुत हो गए बस। Adjective समझते हो न? अंग्रेजी की Grammar.

मीरा के लिए कृष्ण के प्रति प्रेम प्रगट करना, कृष्ण को दिखाना या बताना नहीं था जब वो भीतर प्रेम भर नहीं पाती थी तो दुनिया को भी बताने को नहीं वो अपनी लेखनी से अपने प्रेम को उंडेला करती थी। इतना अन्दर भर गया प्यार। तो कैसे निकले? या तो आँखों से आँसूओं में निकले या तो फिर वह तेरे हाथ से एक कविता के पद पदावली के रूप में निकले और तो कोई तरीका

नहीं। प्रेम की और कोई कसौटी नहीं है। प्रेम की कसौटी बस इतनी ही कि तुम्हें लगे कि बस. . .।

"बात आँखों ही आँखों में कुछ यूँ हो गई
वो मेरे हो गए मैं उनकी हो गई"

बस। और प्रेम जैसी बात को तो कहना, समझना, बताना भी बड़ा मुश्किल। कई बार, कई लोग कहेंगे कि महाराज आर्शीवाद दो कि भगवान से प्रेम हो जाए। मैं कहूँगी कि अगर मेरे आर्शीवाद में इतना बल होता तो शहर-शहर जा के प्रवचन करने की जरूरत ही क्या होती? अपने आसन से बैठी सबको आर्शीवाद दे देती और सबके दिल में प्रेम के झरने फूट जाते। हालत तो ये है कि बोल-बोल के, बोल-बोल के, गा-गा के, कह-कह के, प्रवचन करके कभी-कभी तो शरीर भी थक जाता है, हार जाता है और सुनने वाले सामने बैठे होते हैं तो खूब सिर मार रहे होते हैं। पर सुनने वालों में से More than 40% घर जाते-जाते तक टांय-टांय फिस। सब बराबर। मैं तो कई बार उदाहरण दिया करती हूँ कि जैसे जब सपेरा बीन बजाता है बीन की आवाज से सर्प मस्त नहीं होता। वो बीन की Movement से सर्प हिलता है पर जैसा कि अब Myth चल रही है कि सर्प बीन को सुनकर के डोलता है, मस्त होता है तो कहते वाह! वाह! वाह! कितना बढ़िया! साँप मस्त हो गया। पर जैसे बीन बन्द कर दोगे साँप फिर डसता है। ऐसा नहीं कि उसका जहर निकल गया बीन सुन लेने से या बीन को देख लेने से।

मेरे शब्द कठोर हैं, जरा सभाल के सुनना। मैं कई बार कहती हूँ ऐसे ही जब हम लोग गाते हैं, जब सुनाते हैं तो सामने

तुम्हारे भी सिर वह सर्प जैसे खूब हिलते हैं पर वह हिलने भर से मैं यह भी जानती हूँ कि जहर सारा का सारा...। उतने ही जहरीले हो कभी-कभी बड़े खतरनाक। और कभी-कभी तो तुम्हारा जहर मुझे भी पीना पड़ता है। ऐसे जैसे कई बार कि हम चल रहें हैं तो चलते-चलते में वह पैर छू रहे हैं बस। तो किसी सेवादार ने कहा कि नहीं-नहीं रूक जाओ। दूर से प्रणाम कर लो। मानसिक प्रणाम कर लो। तो वो पहलवानी धक्का मुक्की करके, धक्के मुक्के मारमूर के धड़ाम। वो इतनी जोर से सिर ठोकते हैं कि सच कहूँ किसी दिन तो पैर की नसों में भी दर्द होने लग जाता है। इतनी जोर से ठोक जाते हैं सिर को। वो लगता है महाराज! तुम्हारा प्यार बड़ा जहरीला है। अब प्यार है कि क्या है मुझे तो कभी-कभी यह भी समझ नहीं लगती। कितने भाव विभोर होते हो मैं यह भी जानती हूँ। भाव में जब आदमी मस्त हो जाता है तब जी होता है कि चरण छू लूँ पर एक बात याद रखना...। वाणी में आता है-

"साध की धूड़ करो इस्नान, साध ऊपर जाइये कुर्बान"

पर उसमें वो यह नहीं कह रहे कि साधू जिस जमीन पर खड़ा हो वहाँ मिट्टी का गड्ढा, गड्ढे में से मिट्टी निकाल कर वो सारी मिट्टी सिर में डालकर बैठ जाओ बाबे बन कर कि भई हम तो स्नान करेंगे। महाराज यहाँ खड़े हुए थे। ऐसा नहीं है भाव। उसका अर्थ यह है कि संत ने जो तुमको वाणी का प्रसाद दिया है उस वाणी के प्रसाद को खा के, उससे स्नान करके छक जाए तो ठीक। अब पैर छू लेने से क्या हो जाएगा? हाँ, मौका हो, हल्ला गुल्ला न हो, संत आराम से बैठा हो तो भले प्रणाम कर लो। कौन मना कर रहा है। पर मैं एक बात तुमको जरूर कहना चाहूँगी और

वो ये कि अगर दिल में तुम्हारे प्रणाम करने का भाव गहरा हो तो तुम जहाँ बैठे हो और जहाँ तुमने सिर झुका दिया बस वहीं सजदा हो गया। वहीं नमस्कार हो गई। पहुँच गया वह नमस्कार संत को। पहुँच गया वह नमस्कार तुम्हारे गुरू को। पहुँच गया वो नमस्कार तुम्हारे भगवान को। उसको छूने की तो जरूरत नहीं और वह भाव, वह गहराई न हो तो भले गुरू के पैर में मथ्था ठोक-ठोक के उसके पैर की हड्डी तोड़ दो तो उससे भी क्या हो जाएगा।

"वज्जत की हालत में कुछ यूँ झुक गए
वो काबा था कि बुत खाना खुदा जाने"

वो प्रेम की हालत में सर झुक गया तो बस झुक गया। तो प्रेम की कसौटी बस इतनी है कि जब प्रेम है तो है। जैसे एक बच्ची ने अपनी माँ से पूछा-पहला-पहला बच्चा पैदा करने लगी थी, गर्भवती थी तो बड़ी घबराई और डर भी था तो माँ से पूछती है माता जी! प्रसव का समय आ गया ऐसा मुझे कैसे पता लगेगा? आप बता दोगे। बेटी माँ से पूछती है, जब Delivery का Time हो जाएगा तो आप मुझको जगा देना। उसने कहा, बच्ची! जब वक्त आएगा तो मैं तुझको क्या जगाऊँगी तू मुझको जगा देगी। मुझे क्या पूरे अस्पताल को जगा देगी। प्रसव की पीड़ा जब शुरू होगी तो वो पूछनी नहीं पड़ेगी किसी से कि कब होगा प्रसव, कब नहीं होगा। ठीक ऐसे ही प्रेम तो प्रसव की पीड़ा जैसी है जब भीतर जगेगी न। जब हृदय को चीरेगी तो पूछना नहीं पड़ेगा कि मुझे प्रेम है कि मुझे प्रेम नहीं है। कोई कसौटी न पूछो। प्रेम में डूब जाओ। तरीका न पूछो, मस्त हो जाओ। कितनी मस्ती चढ़ी है यह भी न पूछो। डिग्रियाँ न नापो कि कितनी डिग्री का आज हुआ था ये भी न बस डूब चलो। डूब चलो गहरे उतर

चलो और तो प्रेम...। बात समझ रहे हो? जब होगा तो पूछोगे नहीं और, और जब होगा तो कहोगे भी नहीं।

एक बड़ी मीठी कथा, सूफी कथा मैंने पढ़ी। एक सूफी फकीर कोई 20 साल तक अपने गुरू के पास रहा। फिर उसके गुरू पूरे हो गए। शरीर छोड़ गए और फिर उसके शिष्य होने लगे। तो एक दिन उसके शिष्य ने पूछा कि गुरूवर! बताइये, जब अपने गुरू जी के पास आए थे तब फिर कैसे आचार-विचार, कैसे बात चीत हुई थी। ज़रा हमें बताईये। गुरू ने कहा कि जब मैं अपने गुरू के पास आया था तो तीन साल तक मैं सत्संग में बैठता, सेवा करता और गुरू ने मेरी तरफ देखा भी नहीं। तीन साल तक सुनता, बैठता गुरू को, पर गुरू ने मुझको देखा भी नहीं और फिर तीन साल के बाद एक दिन अचानक गुरू ने मेरी तरफ देखा और जिस दिन देखा बिजली कौंध गई अन्दर। ख्याल करना सिर्फ देखा। संत ने कहा कि फिर उसके बाद तीन साल तक गुरू ने देखा भी नहीं और तीन वर्ष बीत चले सत्संग करते-करते, ध्यान करते-करते और फिर छः साल के बाद गुरू ने पूछा-कैसे हो? और बोला जिस दिन कहा कैसे हो तो साथ ही उन्होंने अपना हाथ मेरे सिर पर रखा और जैसे ही हाथ सिर पर रखा भीतर चक्र जागृत हो गया, कुण्डलनी जागृत हो गई समाधी हो गई जैसे हजारों सूर्य निकल आए ऐसा प्रकाश अन्दर हो गया। और फिर अगले छः साल तक न पूछा, न देखा, न छुआ और फिर एक दिन एकाएक गुरू ने अपने मरने से तीन दिन पहले, मैं खड़ा था, गुरू गुजर रहे थे। गुजरते-गुजरते मेरे पास आकर रूके और मुझे गले से लगा लिया और मात्र तीन दिन के बाद उनका शरीर छूट गया।

शिष्य ने प्रश्न किया। वह पूछता है-हे गुरू महाराज! ये कैसा प्यार! कि तुमने कभी खोल के बात नहीं की और उन्होंने तुम्हारा नाम तक नहीं पूछा। उन्होंने कहा-बुद्धू, नाम पूछने की जरूरत क्या? जब परमात्मा खुद बेनाम है तो फिर मेरे नाम की कीमत क्या? और कीमत है तो सिर्फ मालिक के नाम की। नाम पूछना, हालचाल पूछना Formality है, औपचारिकता है और गुरू शिष्य में औपचारिकता नाम की कोई चीज है नहीं। बीस वर्ष तक गुरू के पास रहा। एक बार सिर्फ देखा। एक बार सिर्फ पूछा और छुआ और तीसरी बार सिर्फ गले से लगाया और बीस वर्ष तक गुरू को सुनते रहते, ध्यान करते रहे और भीतर क्रान्ति हो गई। भीतर जागरण हो गया।

ऐसी प्रेम की गहराई में उतर जाओ। जीवन में आनन्द हो जाएगा। ऐसे भगवान के सुमिरन में उतर जाओ तो भगवान को भी कहना नहीं पड़ेगा कि भगवान आ के दर्शन दे-दे। कबीर साहब तो कहते-

"कबीरा मन निर्मल भया जैसे गंगा नीर
पाछे लागो हरी फिरे कहत कबीर कबीर"

कबीर कहते हैं, जो मन निर्मल हुआ तो भगवान को पुकारना न पड़ा कि आओ आकर दर्शन दो। मन निर्मल हो गया, मन प्रेम की सरिता में स्नान करके निर्मल हो गया, भगवान तो मेरे पीछे-पीछे घूमते फिर रहे हैं। मुझे पुकारते फिर रहे हैं। मैं उसको नहीं पुकार रहा। ये प्रेम की पुकार तुम्हारे दिल में उठ जाए। ये प्रेम की पुकार और न तो जबरदस्ती उठाई जा सकती है, न तो प्रेम माँग के लिया जा सकता है। न किसी को उधार दिया जा सकता

है। यह तो बस हो जाए, तो हो जाए और न हो तो न हो। कुछ नहीं कर सकते। लाचार है आदमी इस प्रेम के सामने और हो जाए प्रेम तो भी लाचार हो जाता है। ख्याल करना प्रेम नहीं हो रहा तो भी तुम लाचार हो। लड़ नहीं सकते हो भगवान से कि मेरे दिल में ऐसा क्यों नहीं उठ रहा है और अगर प्रेम हो जाए तो भी लाचार हो जाते हो। क्योंकि प्रेम ऐसा दीवाना कर देगा, प्रेम ऐसा मस्ताना कर देगा, प्रेम ऐसी हालत में तुमको ले जाएगा जिसको मीरा कहती है–

"संतन संग बैठ-बैठ लोक लाज खोई,
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।
असुवन जल सींच-सींच प्रेम बेल बोई,
अब तो बेल फैल गई आनन्द फल होई।
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।"

तो प्रेम फिर लाचार कर देगा जो प्रेम हो जाए और न हो रहा हो तो भी लाचार। करें तो क्या करें, तुम्हारे पास सिर्फ एक ही काम है करने को दिन रात पुकार उसको। दिन रात पुकार उसको। दिन रात बुला उसको। दिन रात प्रार्थना से रिझा उसको। तूने दुनिया को रिझाया, दुनिया तो भी न रीझी। अब जरा अपने भगवान को रिझा। वह तो तैयार खड़ा है तुझपे रीझने को। अब थोड़ा उसको मना। अब थोड़ा उससे दिल लगा। तूने दुनिया से दिल लगाया दुनिया ने तेरे दिल को तोड़ा। अब जरा भगवान से दिल लगा वह तेरे दिल को कमल जैसा खिला देगा। तूने लाख मनाया दुनिया को दुनिया तो भी नाराज। नहीं नाराज? मैनूँ पूछया नहीं, मैनूँ दित्ता नहीं, मैनूँ दिखाया नहीं, मैनूँ वेखाया नहीं, मैनूँ ख्वाया नहीं, मैनूँ पिवाया नहीं,

मुझे पूछा नहीं। वह हनुमान जी की पूँछ याद है न। है न रामायण की कथा। रावण ने क्या कहा था कि वानर को पूँछ प्यारी होती है इसकी पूँछ में आग लगा दो। ख्याल करना वानर को ही पूँछ प्यारी होती है कि मनुष्य को भी पूँछ प्यारी होती है। मुझे पूछा नहीं। मुझे पूछा नहीं। तुम्हारी पूँछ नहीं लटकी रहती। फर्क यह है वानर की पूँछ नजर आ जाती है। तुम्हारी पूँछ...। मुझे पूछा नहीं, मुझे पूछा नहीं, मेरी बेइज्जती हो गई।

कभी कभी तो लोग यह पूछ पड़ताल मेरे साथ भी करना चाहते हैं। हम गए थे, महाराज ने हमको पूछा नहीं। मैं क्यों पूछूँ अब भइया तेरे को? क्या पूछूँ अब मैं।

अब वो फोन करने वाले न फोन करेंगे तो वो पूछ रहे हैं महाराज जी आपका क्या हाल है? मैं, मेरे हाल को क्या होना है बहुत अच्छा है। तब वो चाह रहे हैं कि मैं भी पूछूँ कि तुम्हारा हाल...। नहीं समझे? अब मैं इतने पर बात खत्म कर दूँ तो नाराज हो जाते हैं। महाराज ने हमारा हाल तो पूछा ही नहीं। टेलिफोन बन्द करे न प्रेमी तो बाद में वो पूछते हैं कि महाराज से तुमने अमेरिका में बात की तो उन्होंने मेरा नाम ले कर पूछा था तो वो कहते नहीं पूछा था। तेरे को ही पूछते हैं मुझे तो पूछते ही नहीं। तो पूँछ!

अरे महाराज! पूँछ को काट दो। पूँछ को छोड़ दो। इस पूँछ के चक्कर में मत पड़ो। बेटा बाप से नाराज। बाप ने पूछा नहीं। और बाप बेटे से क्यों नाराज होते हैं? बोलो न। मुझे पूछते नहीं। न पूछ के घर से बाहर जाते हैं न पूछ के घर में आते हैं। अपनी मर्जी करते हैं। तुम्हारी भी पूँछ लटकी हुई। Darwin की

Theory यहीं Prove होती कि तुम बन्दर की औलाद हो। बन्दर को पूँछ प्यारी और तुमको भी पूँछ प्यारी। उसकी लटकी वाली पूँछ और तुम्हारी मन में लटकी हुई ये पूँछ। तो पूछा नहीं, पूछा नहीं। अरे! भाड़ में जाए पूछना और अगर पूछना ही है तो अपने प्यारे को पूछना। उससे पूछो, उससे दिल लगाओ, उससे मन का भाव बढ़ाओ और एक बात पक्की है कि उसको तुमने पूछा तो वो तुमको जरूर पूछेगा।

मेरा रूठे न जी मोहन प्यारा,
चाहे सारा जग रूठे।
मैं तेरी हूँ तू है मेरा,
हो जाए तुझसे प्रेम घनेरा,
तेरे प्रेम ने है सबको तारा,
चाहे सारा जग रूठे।
मेरा रूठे न जी मोहन प्यारा . . . . . .
मुझमें अपना प्रेम बढ़ा दे,
मन मन्दिर में ज्योति जगा दे,
तेरे प्रेम ने है सबको तारा,
चाहे सारा जग रूठे।
मेरा रूठे न जी मोहन प्यारा . . . . .
प्यार से जीना सिखा दे मुझको,
प्यार में मरना सिखा दे मुझको,
तेरे नाल मैं प्यार बढ़ाया,
चाहे सारा जग रूठे।
मेरा रूठे न जी मोहन प्यारा।

प्रेम में जीना, प्रेम में मरना। प्रेम में ऐसी अवस्था हो जाए तो जानना, तुमने असल मनुष्य जन्म के लाभ को, मनुष्य होने की गरिमा को तुमने पहचाना। तुम ऐसी गरिमा को पहचान सको। प्रेम में डूब सको। इतना ही कह के वाणी को विराम। शेष चर्चा फिर कल करेंगे।

जीवन से
मृत्यु तक

ओ प्यारे परदेशी पंछी, जिस दिन तू उड़ जायेगा,
तेरा प्यारा पिंजरा पीछे यहीं जलाया जायेगा,
बोल जय सिया राम जय जय सिया राम।
जिस पिंजरे को सभी ने मिल कर पाला पोसा प्यार से,
खूब खिलाया, खूब पिलाया हर दम रखा प्यार से,तेरे होते-होते
नीचे इसे सुलाया जायेगा,
बोल जय सिया राम जय जय सिया राम।
तुझे पता क्या कुछ होना है फिर भी क्यों नहीं सोचता,
मूर्ख है वह दिन आ ही रहा जब पड़ा रहेगा सोचता,
हीरा जन्म गंवा करके, फिर पाछे तू पछतायेगा,
बोल जय सिया राम जय जय सिया राम।

तेरे बिना न खाते खाना रहना चाहते साथ में,
पूछे बिना नहीं करते कुछ भी, तू ही था हर बात में,
तेरे पूछे बिना ये सारा काम चलाया जायेगा,
बोल जय सिया राम जय जय सिया राम।
रोयेंगे थोड़े दिन तक सब भूलेंगे तेरी याद को,
ज्यादा से ज्यादा फिर तेरा करवा देगें श्राद्ध वो,
हलवा पूरी खा कर तेरा श्राद्ध मनाया जायेगा।

ओ प्यारे परदेशी पंछी, जिस दिन तू उड़ जायेगा,
तेरा प्यारा पिंजरा पीछे यहीं जलाया जायेगा,
बोल जय सिया राम जय जय सिया राम।
जिस पिंजरे को सभी ने मिल कर पाला पोसा प्यार से,
खूब खिलाया, खूब पिलाया हर दम रखा प्यार से,

पिंजरा इस शरीर को कह रहे हैं और इस शरीर रूपी पिंजरे में प्राण रूपी सूक्ष्म जीव, आत्मा रूप पक्षी रहता है। पिंजरा और पक्षी दोनों में भेद है, एक नहीं है। ऐसे ही शरीर और जीव आत्मा का भी भेद है। दोनों एक नहीं है। पिंजरा शरीर और इस शरीर में रहने वाला जो है वो इस शरीर रूपी पिंजरे से जुदा है। अब पिंजरा जो माता पिता के द्वारा मिला। इस शरीर रूपी पिंजरे को कहते खूब खिलाया-पिलाया घरवालों ने, नहीं? अब बहुत प्यार से रखा, पर कितने दिन रखेंगे और जहाँ अंतिम समय आने लगता है और हो जाता है कि अब तो बस गया-गया-गया तो पलंग से भी उतार कर नीचे जमीन पर रख देते हैं, कहीं बिस्तरा भी खराब नहीं हो जाये।

तेरे होते-होते नीचे इसे सुलाया जायेगा,
बोल जय सिया राम जय जय सिया राम।
तुझे पता क्या कुछ होना है फिर भी क्यों नहीं सोचता,
मूर्ख है वह दिन आ ही रहा जब पड़ा रहेगा सोचता,
हीरा जन्म गंवा करके, फिर पाछे तू पछतायेगा,

बोल जय सिया राम जय जय सिया राम।

सब को लगता है परिवार मेरा, घर मेरा, दुनिया मेरी और मेरे घर वाले तो मुझे कितना प्यार करते हैं, पर तेरे श्वास निकलते, तेरे शरीर रूपी पिंजरे के जाते कौन तुझको याद करेगा और कितने दिन करेगा। इस भ्रम को छोड़ कर इस ख्याल को दिल से निकाल दे। हालांकि जीते जी तो ऐसे ही होता है।

तेरे बिना न खाते खाना रहना चाहते साथ में,
पूछे बिना नहीं करते कुछ भी, तू ही था हर बात में,
तेरे पूछे बिना ये सारा काम चलाया जायेगा,
बोल जय सिया राम जय जय सिया राम।
रोयेंगे थोड़े दिन तक सब भूलेंगे तेरी याद को,
ज्यादा से ज्यादा फिर तेरा करवा देगें श्राद्ध वो,
हलवा पूरी खा कर तेरा श्राद्ध मनाया जायेगा।

खुशी मनाते हैं हलवा खाते हैं। खुशी का चिन्ह है मिठाई। बुड्ढा मरा अच्छा हुआ, बुड्ढी मरी अच्छा हुआ। और जब जवान मर जाते हैं तो हलवा पूरी का नियम तो चलता रहता है। तो भी बन्द नहीं होते। माने मरने वाले मरे, हम तो खाते हैं और खाते भी सादा नहीं खाते भी मज़े का।

''हलवा पूरी खा कर तेरा श्राद्ध मनाया जायेगा''

अरे, भैया! जब चार बन्दे तेरे को उठा कर ले जा रहे होंगे तेरी अंतिम यात्रा तो तू नहीं बोल सकेगा, तू नहीं गा सकेगा, तेरी देह ठंडी, अकड़ के पड़ी होगी दूसरे कह रहे होंगे

बोल राम! बोल राम! बोल राम! भैया अभी तो तू जिन्दा है, श्वास चल रही है। अभी तो तेरे प्राण हैं। अपना राम-राम खुद ही कर ले। तब तो मौका नहीं मिलना।

जितनी बड़ी सच्चाई यह है कि जीवन है उतनी बड़ी सच्चाई यह भी है कि जीवन का अंत निश्चित है। आप लाख चाहने पर भी न तो इससे छूट सकते हैं, न बच सकते हैं, न भाग सकते हैं और न ही मृत्यु के भय से अपने आप को लाख उपाय करने पर भी सुरक्षित रख सकते हैं। मृत्यु का वार अचूक है।

गुरू नानक साहब अपनी यात्राओं में एक बात कहते हैं-ईरान के पास जब रूके थे। बैठे थे रेगिस्तान में और मरूभूमि की कड़ी दोपहरी इनके दोनों शिष्य, हिन्दू, भाई बाला और इनका एक मुसलमान शिष्य भाई मरदाना, दोनों साथ में थे। आँख बन्द किये ध्यानस्त थे।

अचानक आँख खोलते हैं, पूछते हैं बाला से कि बाला! बता तो इस जिंदगी में, इस संसार में इस जीवन में सबसे बड़ी सच्चाई क्या है, क्या है सच्चाई? बाला सोच विचार के कहते हैं-हे गुरू बाबा! सबसे बड़ी सच्चाई यह कि, यह कि, यह जिंदगी हमें चार दिनों के लिए मिली है और इस चार दिन में हम को बहुत बड़े-बड़े काम करने है और सबसे बड़ा काम माया से अतीत परब्रह्म की पहचान करनी है। सबसे बड़ी सच्चाई तो जिंदगी की यही है। फिर पूछते हैं गुरूनानक मरदाना से कि तुम बताओ तुम्हारी नजर में सच्चाई क्या है?

जीवन में, इस जगत में, इस संसार में सबसे बड़ी सच्चाई

कौन सी है? मरदाना कहते-गुरूवर! मेरी नजर में सबसे बड़ी सच्चाई सिर्फ इतनी बाकी तो सब झूठ है। सिर्फ एक ही सच्ची बात है कि जगत में जो सांचे संत हैं, महापुरूष रहते हैं, बस उन्हीं से सच्चाई है। वे न हों तो सच्चाई कुछ भी नहीं है। उत्तर दोनों सुन्दर हैं पर गुरूनानक तृप्त नहीं हुए। उन्होंने कहा, फिर पूछते हैं-आप कैसा उत्तर हमसे चाहते हैं आप हमें वह बतलाइये? गुरू नानक बहुत धीर गम्भीर सोच से कहते हैं-मेरे प्रिय शिष्यों! सबसे बड़ी सच्चाई जगत में यह है कि जन्म के बाद कोई लाख चाहे कि मरे न, तो वो मौत से बच नहीं सकता। कितना ही प्यारा क्यों न हो उसका घर। कितना ही सुखी क्यों न हो उसका संसार, कितना ही संत क्यों न हो जाये। यह सच्चाई तो रहती है जाना फिर भी पड़ता है। चाहे आप साधु हों, चाहे आप असाधु हों, ज्ञानी कि अज्ञानी, नास्तिक कि अस्तिक इस मृत्यु की सच्चाई से कोई इंकार नहीं कर सकता है।

पर हैरत इस बात की है कि हम लोग हर विषय पर चिंतन करते हैं, पढ़ते हैं, सुनते हैं। यहाँ तक कि मौत के बारे में भी ऐसा नहीं कि तुम सुनते नहीं, सुनते भी हो और अपने निकट सम्बन्ध में कोई मर जाता है तो उसकी मरग में भी जाते हो। पर एक अजीब भ्रम एक अजीब जिसको कहूँगी मैं Self-hypnotism आदमी के अपने मन के ऊपर चल रहा है। वो एक सम्मोहन सा जैसे कि अपनी आँख के सामने लोगों को मरते हुए देख कर भी जरा एक क्षण को भी यह अहसास नहीं आता कि यह मृत्यु एक दिन मुझ पर भी आने वाली है।

कहते जरूर हैं कि हाँ यही सच है कि मौत जरूर होगी और यही सच है कि हम को मरना पड़ेगा। लाख चाहे, लाख चाहे बचना, बच नहीं सकते। शायर कहता है-'क्यों न लिपट के रोऊँ तुझसे, ऐ कब्र!' जिसमें दफनाते है न ईसाई और मुसलमान लोग और कहीं-कहीं कुछ एक साधुओं में जलाया नहीं जाता उनको भी भूमि समाधि दी जाती है। मतलब भूमि में ही गाड़ दिया जाता है। शायर कहता है-

"क्यों न सोऊँ लिपट के तुझसे ऐ कब्र,
कि पाया है तुझको मैंने जिंदगी खो कर"

जिंदगी खोये बिना कब्र नहीं मिलती और जिंदा आदमी को कब्र नहीं मिलती। ये जिंदगी जैसी अनमोल चीज़ को गंवाने के बाद कब्र मिली और इस कब्र से तो मैं खूब लिपट के सोया रहूँ। इस कब्र से तो मेरी खूब दोस्ती बनी रहे। लाख चाहे पर मृत्यु तो होगी। हमारे घरों में जब कभी मृत्यु हो जाये तो हम लोग कोशिश करते हैं कि इस होती मौत को हमारे बच्चे न देखें। लाश बच्चे न देखें, श्मशान घाट में बच्चों को न ले जाओ। उत्तरप्रदेश में तो स्त्रियों को श्मशान घाट में ले जाया भी नहीं जाता। मरग हो जाये तो घर के पुरुष जाते हैं, स्त्री नहीं जाती। लेकिन पंजाब में जाती हैं।

हालांकि तर्क बहुत दिये जाते हैं, जैसे एक तर्क यह दिया जाता है कि स्त्री का दिल कमजोर है और वह बर्दाश्त नहीं कर पायेगी, अपने प्रियजन को जलता हुआ देख नहीं पायेगी और अड़चन होगी। इस लिए फिर महिला को घर ही छोड़ दो। और बस वह दरवाज़े तक, दहलीज तक जाती है, दरवाजे से आगे नहीं

जाती। पर मेरे विचार में मृत्यु को हम जितना छिपायेंगे, मृत्यु क
हम जितना देखने से इंकार करेंगे, उतना मृत्यु भय बनती जायेगी

विशेषतः बुढ़ापे में...। कल मुझे एक शिष्य मिलने आये
उम्र में काफी बड़े हैं। पीछे बीमार थे वो आप्रेशन हुआ। बहु
शरीर कमजोर हो गया। बोलना भी बहुत धीरे-धीरे हो गय
था। और वह धीमे-धीमे सुर में मेरे से बात करें औ
कहते-पता नहीं क्या हो गया है? जब तक Operation नहीं
हुआ था और मैं बड़े आनन्द में था, सत्संग के कैसेट सुनता
ध्यान करता, हर वक्त, हरि ओ३म् नारायण हरि ओ३म
नारायण करता। मैं तो सबसे कहता था कि गुरू महाराज त
हमेशा मेरे अंग संग हैं। ऐसा ज्ञान उन्होंने दिया मैं बड़
आनन्दित था पर अब जैसे मेरी बुद्धि मारी गयी। बड़े दुखी ह
रहे थे। वह कहने लगे किसी के माँ बाप मर जायें तो व
अनाथ होता पर जिसकी बुद्धि मारी जाये उसका तो सब चल
गया और मेरी बुद्धि मारी गयी है, हर समय चिंता, चिंता खा
जा रही है पता नहीं क्या हो गया है मुझको?

ख्याल करना ये एक साधक हैं, नियमित साधना कर
वाले हैं पिछले चार पाँच साल से, दो बार हरिद्वार के शिविर
भी जा चुके। इस शहर में भी जब-जब आये, उन्होंने कभ
Miss नहीं किया। बड़े खुश थे, बड़े आनन्दित थे। बल्कि जि
दिन उनकी दीक्षा हुई उन्होंने कहा कि मेरा आज जन्म हुआ
आज जन्म हुआ, मेरी जिंदगी की प्रेम और साधना की यात्
शुरू हुई अर्थात मेरा नया जन्म हुआ है यह। पर कल उनक
इस दशा में देखा तो वह मुझसे पूछते हैं। मैंने कहा-और कु

नहीं है। कुछ नहीं बदला है, न मेरा सुना ज्ञान बदला है, न ज्ञान की सच्चाई बदली है, सिर्फ इतना बदला है कि अब तुमको अपनी मृत्यु सामने नजर आने लग पड़ी है। अब से पहले तो लगता था जी रहे हैं, जी रहे हैं कब तक जियेंगे कोई नहीं जानते? तो कब तक जियेंगे? हो सकता है अगले सौ बरस तक जियेंगे। और हो सकता है न भी जीयें पर आदमी को लगता है कि मैं लम्बी आयु जीऊँगा।

तभी तो पंडित से पूछता है। मेरी जीवन रेखा कितनी लम्बी है, कितने दिन जीऊँगा, कितने बरस जीऊँगा। पर रोग ने बीमारी ने शरीर में इतनी कमजोरी ला दी कि अपनी दिनचर्या खुद न कर पाये तो उस कमजोरी के कारण अहसास कि सामने मृत्यु मुँह फाड़े खड़ी है, यह बर्दाश्त नहीं होता। शरीर से ममता ने इतनी जोर की जकड़, इतने जोर का बंधन बाँध दिया है कि भय लगता है। क्या करोगे? घरवाले भी परेशान थे। मैंने कहा-एक काम करो तुम, सब के सब तुम मान लो, स्वीकार कर लो कि शरीर को जाना ही है और अब वो वक्त आ गया है, जाना है अब।

आपको एक शहर से दूसरे शहर जाना हो आप कितनी तैयारी करते हैं। सामान बाँधते हैं, रोटी बाँधते हैं, साथ के लिए सुराही पानी की भी, थर्मस भी रख लेते हैं। सब व्यवस्था बिस्तर भी, सिरहाना ले चलो, वह भी ले चलो और जबकि यहाँ से कोई सात-आठ सौ मील तक जाना होगा। कोई इतनी दूर भी नहीं जाना और यह सब सामान तुमको वहाँ भी मिल सकता है क्योंकि घर ही में जाओगे कोई दिक्कत तो है नहीं, लेकिन फिर भी आदमी इतना इंतजाम करता है। पर इस शरीर को छोड़ के

इस जीवन को छोड़ के मृत्यु उपरांत जहाँ जाना है उसक
तैयारी तो कुछ भी नहीं की।

सुबह से लेकर रात तक आदमी भटकता रहता है। घर क
लिए भटकता रहता है, दुकान के लिए भटकता रहता है, परिव
के लिए ये करूँ, ये व्यवस्था बना लूँ वो व्यवस्था बना लूँ। ग
आ रही है Air conditioner लगवा लूँ, सर्दी आ रही है, च
कम्बल-रजाईयाँ खरीद लेते हैं। कितना इंतजाम, पर यहाँ क
इंतजाम हम बहुत कर रहे हैं। पर वहाँ का इंतजाम हम कुछ न
कर रहे। और फिर जब मृत्यु अचानक तुम्हारे द्वार पर खड़ी
जाती है तो लगता है। मौत मेरे ऊपर, मुझे मरना होगा।

बहुत सी प्रसिद्ध कथायें हैं। उनमें एक कथा राज
परीक्षित की है। जब श्राप मिला सर्प के काटने से तुम मरो
सात दिन के भीतर तो भय के मारे जान निकलने लग पड़ी
हाथ-पैर सुन्न होने लगे समझ नहीं आयी क्या करूँ, क
करूँ? और धन, राज्य, सम्पदा, परिवार, पत्नी और पुत्रों
रहते हुए अपने आप को असहाय निहत्था देखता है। साम
आदमी तुमसे लड़ाई करता हो तुम तलवार निकाल के च
लो, तुम घूँसे-लातें चला लो, मार लो, जीत लो। पर मौत रू
शत्रु से कैसे लड़ोगे तुम जो न नजर आती है और मृत्यु
क्या? श्वासों का जाना भर। फिर लौट के भीतर न आन

परीक्षित को जब महर्षि का श्राप मिला कि जिस स
को तुमने मेरे पिता के गले में डाला, वही मरा हुआ सर्प जि
हो कर तुझे सात दिनों में काटेगा, फिर रोता है। और ज

सब ओर से असहाय हुआ तो गया शरण ऋषियों की। शरण में गया मुनि शुकदेव जी महाराज के। हे शुकदेव जी! हे गुरूवर! बताईये क्या होगा मेरा, मौत सामने आ खड़ी। मैं इतना बलवान हूँ मैं क्षत्रिय हूँ मेरे पास सब प्रकार के अस्त्र शस्त्र हैं, पर मैं मौत को जीतने का कोई उपाय नहीं जानता, कोई उपाय मेरे पास नहीं है और मौत से डर लग रहा है।

शुकदेव ने कहते, सात दिन तक परीक्षित को कथा सुनायी, ज्ञान की कथा, भक्ति की कथा, श्रीमद्भागवत की कथा सुनायी और बार-बार घुमा कर उन्होंने एक बात कही कि परीक्षित यहाँ जो जन्मा है उसको जाना है, कारण कोई हो जाये। कारण कोई हो सकता है। और कारण सब के सब झूठे हैं, कारण कोई सच्चा है नहीं, तुम कहो Heart attack हो गया था, Blood pressure बढ़ गया था, नस फट गयी थी, Accident हो गया था या कोई कत्ल कर गया था तो ये सब कारण भी अपने आप को समझाने के हैं। ये कारण हो गया इसलिए चले गये। बिस्तर में सोये-सोये, बैठे-बैठे, खड़े-खड़े, खाते-खाते, मर जाते हैं। उनका तो कारण भी समझ नहीं लगता कि क्यों मर गये? जब भी आप अपने किसी प्रियजन की मृत्यु के विषय में सुनते हो तो आप का सबसे बड़ा प्रश्न होता है। क्या हुआ था? कैसे मर गये? इतना शुक्र है कि तुम यह नहीं कहते कि क्यों मर गये?

मेरे पास एक प्रश्न आया, उसमें पूछते हैं कि

जीवन क्यों है? हम लोगों को जीवन क्यों मिला है, क्यों है यह जीवन? किस कारण से मिला है?

मैं एक बात कहूँ उत्तर देना चाहूँ तो बड़े-बड़े दार्शनिक उत्तर हैं, दार्शनिक उत्तर, Intellectual उत्तर कि भगवान को पाने के लिए, भगवान की बनायी दुनिया को देखने के लिए कि मौज मेला देखने के लिए, कि आत्मा को जानने के लिए, भगवान ने इस लिए तुम को जिंदगी दी। पर सच अगर कहूँ मैं तो जीवन क्यों है? तो इस क्यों का कोई जवाब नहीं है महाराज!

यह तो ऐसे होगा जैसे कोई कहे गुलाब का रंग लाल क्यों है, पेड़ों में पत्ते हरे क्यों हैं, आकाश का रंग दिन में नील और रात में काला क्यों है? अब है तो है, क्या करोगे उसमें ऐसे जीवन है, यह उत्सव है इसका स्वागत कर ले। यह भगवान का प्रसाद है इसको खूब जी भर के खा-पी ले। पूछ मत क्यों? क्योंकि क्यों का कोई जवाब नहीं है। बहुत से सम्प्रदायों ने, बहुत से अलग-अलग धर्मों ने बड़े-बड़े उत्तर दिये हैं कि इसलिए जीवन मिला, इसलिए जीवन मिला। पर सच्चाई ये है कि क्यों है जीवन, न इसका उत्तर और क्यों हो जाती है मौत, इसका भी कोई जवाब तुम्हारे पास नहीं कोई कहते दाना-पानी खत्म हो गया था, कोई कहते श्वास खत्म हो गयी थी, कोई कहता ये, कोई कहता वो। पर सच्चाई यह कि तुम्हारे पास कोई उत्तर नहीं है।

कई बार तुम्हारे किसी प्रियजन की मृत्यु हो जाती तो तुम्हें लगता है कि क्यों मर गये? पति मर जाये तो कभी-कभी पत्नी कहती मैं मर जाती यह क्यों मर गया? पर सवाल यह है कि तुम से पूछ कर तो दुनिया चल नहीं रही है। क्या तुमसे पूछ के दुनिया चल रही है? क्या आज तक

मसे किसी ने पूछा कि तुम्हारी जिंदगी में, तुम्हारी दुनिया में, म्हारे संसार, तुम्हारे जगत में क्या परिवर्तन कर दें? अब हो हैं परिवर्तन तो हो रहे हैं। ऐसे ही जन्म का परिवर्तन मृत्यु अवश्यमेव होना ही है।

आप इस को रोक नहीं सकते, आप इसमें कोई रूकावट हीं डाल सकते। जैसे अक्सर लोग कहते हैं न महाराज! तुम त्संग में नहीं गये। बोलते-टाईम नहीं था। हम तो Busy थे, क्त नहीं मिला इसलिए नहीं जा पाये। अब मान लो मौत तुम्हारे वाजे आ जाये तो क्या तुम मौत को भी कह दोगे अभी me नहीं है, मैं जरा अपनी Appointment Diary देख लूँ क मेरी कल की Appointments क्या हैं? या कल तो मैंने जार में घूमने जाना था? कल तो मैंने खरीददारी करने जाना , मेरे पास फुरसत नहीं है। अमीर से अमीर आदमी भी मृत्यु ो इन अंतिम घड़ियों में एड़ियाँ रगड़ता है, एड़ियाँ।

लाख हाथ पैर जोड़ता है चिकित्सकों से, डाक्टरों से कि र दिन और जीने को मिल जाये। बेटी दूर है उसको मिले बगैर हीं जा सकता। प्राण अटके पड़े हैं पर सच्चाई यह है कि टके नहीं है, अभी समय नहीं आया इसलिए। और तुम लाख हो न मरें, न मरें तो और जान लो इस बात को कि यह देह एक पिंजरा मात्र है और इस देह के टूट जाने पर भी नहीं रोगे "तुम", तो तुम जो तुम हो अपनी उस "तुम" को हचानो, जानो अपने उस शुद्ध आत्मस्वरूप को, पहचानो अपने स शुद्ध आत्मदेव को जो कभी नहीं मरता है। जो गर्भ में ाता है, पर आ कर फिर भी नहीं आता है। कौन है जो मर

कर भी नहीं मरा? कौन है जिसका जन्म हो के भी नहीं हुआ
कौन है वो जो सदा ही भगवान का स्वरूप था, है और रहेग

जो भगवान से एक घड़ी, एक क्षण जुदा नहीं है
तत्व स्वरूप को अगर तू पहचान लेगा तो ऐ परीक्षित! तेरे
मौत का भय नहीं रहेगा। शुकदेव यह नहीं कह रहे कि
को मौत नहीं होगी। वे कह रहे हैं तुझको मौत का भय न
रहेगा। और परीक्षित सुनते-सुनते सातवें दिन के आते-अ
कहते, वाह! वाह! गुरूवर, आप ने मुझे भय मुक्त किय
आपने मेरे देह का ममत्व छुड़ा दिया। आप ने जन्मों-जन
का पड़ा बंधन, जो मैं स्वयं को देह, मन, बुद्धि मान के दु
हो रहा था आप ने छुड़ा दिया उससे। अहो भाग्य,
धन्य-भागी हुआ, आपकी शरण में आ कर।

मैं धन्यवाद देता हूँ, उस ऋषि को भी जिसने
धृष्टता, मेरे अपराध की सजा मुझ को दी। जिसके कारण
आप की शरण में आना पड़ा। दुःख भी कारण बन गया
का। न श्राप मिलता न मैं आपके पास आता। न श्राप मिल
न मैं आप जैसे ब्रह्मज्ञानी गुरू के पास पहुँच पाता। एक प्र
मेरे पास और भी है बीच में साथ लेती चलती हूँ। पूछते है

**आपने अपने सत्संग में एक जगह कहा है
ब्रह्मज्ञानी गुरू का मिलना कठिन है, परमात्मा
मिलना सहज है। इसे स्पष्ट करिये।**

सत्य है यह, बिल्कुल सत्य है। सौ फीसदी सत्य है य
परमात्मा का मिलना, क्या मिलना? क्या मुश्किल? ख्याल

जो मुझसे दूर हो, जो मुझसे इतर हो, जो मुझसे परे हो, जो मेरे से कहीं अलग किसी दूसरे में रहता हो। किसी दूर की जगह, किसी दूर के काल में रहता होता परमात्मा तो बहुत मुश्किल था। रहता भगवान सिर्फ कैलाश पर्वत के ऊपर तो फिर बूढ़े और अपंग कैसे जा सकते उस तक। अगर रहता होता भगवान सिर्फ माऊंट एवरेस्ट की चोटी पर तो हर कोई माऊंटेनरिंग करके तो पहुँच न पाता तो कैसे दर्शन होते भगवान के?

एक भगत, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द के गुरू के पास गया। कहता है-ठाकुर बड़ा तड़पता हूँ भगवान को मिलना है। बहुत रोता हूँ भगवान के दर्शन हो जाये, कहाँ खोजूँ उसको? रामकृष्ण कहते-भगत! तू पहले यह बता कि तुमने अपने भगवान को खोया कहाँ। कहाँ खोया तुमने उसको? किस गली में, किस नुक्कड़, सड़क में खोया उसको। उम्र के किस हिस्से में? बचपन में या जवानी में, कहाँ खोया उसको। कब खोया? ख्याल करना तुम थाने में रपट (रिपोर्ट) लिखाने जाओ कि मेरी कोई चीज गुम हो गयी तो पूछता है-कहाँ गुम हुई, किस वक्त गुम हुई, किस पर शक है? राम कृष्ण पूछते हैं-भगत! आप मुझ को यह बताओ, तुमने तुम्हारे भगवान को कहाँ खोया?

कहाँ खोया उसको और किस पर शक-शुब्हा है कि इसके कारण से खो गया? भगत तो सोच में पड़ गया, महाराज क्या कह रहे हैं? रामकृष्ण कहते हैं-एक बात बताओ भगवान सत्य है कि असत्य? झूठ है कि सच, क्या

लगता है तुम को। उसने कहा-ठाकुर! भगवान तो सत्य है
रामकृष्ण कहते-अब बना, यह जो सत्य स्वरूप भगवान है य
रहता कहाँ है? कहाँ रहता है? भगत कहता है-गुरूवर! ऐस
मैंने सुना, शास्त्रों में पढ़ा कि वह तो सब जगह है। ठाकु
सब जगह है। रामकृष्ण पूछते हैं-तेरे दिल में भी, बोले-ह
तो फिर कहते-दिक्कत क्या है?

जो अभी है, यहीं है, तेरे दिल में है, तेरा अपना आप
उसी का आपा है तो फिर तू क्यों प्रश्न पूछता है कि भगवान
खो गया। यह न कह कि भगवान खो गया। यह प्रश्न ही
गलत है कि भगवान को कैसे मिलूँ? पूछ तो तू यह कि
होश में कैसे आऊँ? मैं अपनी उन आँखों को कैसे खोलूँ
जिन आँखों से देख सकूँ मैं। गलत प्रश्न है कि भगवान को
कैसे मिला जाये? और उत्तर देने वाले भी बड़े-बड़े बेवकुफान
उत्तर देते हैं। कोई कहता है भक्ति करो तो मिलेगा, ज्ञान
सुनो तो मिलेगा, कोई कहता है अष्टांग योग करो तो मिलेगा
सीधा-सीधा तुम से दूर है नहीं, तुमसे अलग है नहीं। जो
तुममें तुम बना बैठा है, उसको कैसे मिलोगे? वाह-वाह
बुल्लेशाह कहता है-

बुल्लया शौ तैं तो वख नहीं,
बिन शौ दे दूजा कख नहीं,
पर देखण वाली अख नहीं।

योग वशिष्ठ में, ऋषि वशिष्ठ जी महाराज रामचन्द्र जी
को उपदेश देते हुए कहते हैं, वैराग्य प्रकरण में, रेत के कण

ो गिन लेना भी सहज है, कि कठिन है? रामचन्द्र जी से छा? रामचन्द्र जी कहते यह तो बहुत कठिन कार्य है। शिष्ठ कहते-नहीं, अगर तू इसको कठिन कहता है तो फिर मझ भगवान का मिल लेना, भगवान की आत्म प्राप्ति, आत्म ध, आत्म साक्षात्कार कर लेना, उतना ही कठिन जितना रेत े कणों को गिनना।

राम जी कहते-गुरूवर अगर इतना कठिन है तो साधक स मार्ग में चलेगा ही क्यों? भगवान को प्राप्त करने का ख्याल ायेगा ही क्यों? अगर इतना मुश्किल है। रेत को गिनना भी म कठिन कहते हो, रेत जो ज़मीन पर है समुद्र के नीचे जो 50 मील के नीचे जो रेत पड़ी है उसको भी तुम कहते हो ोन लेना सहज नहीं है पर आत्म-प्राप्ति इस से भी कठिन है। शिष्ठ कहते-राम और सुन, कठिन तो है पर गुलाब की पंखुड़ी ो दोनों अंगुली से मसल लेना मुश्किल हो सकता है पर ब्रह्म ी प्राप्ति इससे भी ज्यादा सरल है। दो विरोधाभासी State-nents दे रहे। दो विरोधाभासी वक्तव्य महर्षि वशिष्ठ दे रहे ं। कहते-हे राम! पलकों के झपकने में कष्ट हो सकता है र ब्रह्म की प्राप्ति में इतना भी कष्ट नहीं है।

रामचन्द्र जी कहते-गुरूवर! मेरे को तो आपने और संशय ं डाल दिया। मैं इसको सत्य मानूँ कि उसको। वशिष्ठ कहते राम! अब ध्यान से सुन-क्षोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरू मिल जाये तो ह्म प्राप्ति उतनी ही सहज हो जायेगी कि पलकों का झपकना ौर पंखुड़ी के मसलने में कष्ट और देरी-दूरी। पर आत्म प्राप्ति, ात्म बोध में इतनी भी देरी नहीं। पर क्षोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरू तेरे

पास नहीं है, तो इतना कठिन है कि रेत के कण गिन ले
आसन होंगे पर ब्रह्म प्राप्ति मुश्किल होगी।

छुपे बैठे हो कण-कण में भला मैं कैसे पहचानूं,
दुई का दूर करो परदा, सामने आओ तो जानूं।
सुना है कहने वालों से हसीनों में हसीं तुम हो,
क्या मुझसे शर्म आती है, छुपे माया के परदे में,
सामने आओ तो जानूं।

अब उतना ही मुश्किल और उतना ही सहज है। सह
किसके लिए? जिसके पास ऐसा संत है, जिस संत की संग
करते-करते, जिस संत को सुनते-सुनते, जिसको देखते-देख
आप अपने हृदय की समस्त अज्ञान ग्रंथियों को तोड़ देते है
उपनिष्द का श्लोक है-

बिधन्ते हृदय ग्रन्थि छिदयन्ते सर्व संशय
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन दृष्टे परावरे

गुरू का वचन सुनते-सुनते, क्षेत्रिय ब्रह्मनिष्ठ संत
सुनते-सुनते उसकी संगत करते-करते हृदय में, मन में, बुद्धि
संशय हैं, उनका भेदन हो जाये, जितने संशय हैं, वे समाप्त
जायें। जहाँ चित्त का समाधान हो जाये, वहीं समाधि हो जाती है

समाधि किसको कहते हैं? समाधि उसका नाम नहीं
कि तुम जड़ हो जाओ। लोगों ने अजीब-अजीब मनघड़
व्याख्या कर रखी है समाधि के विषय में। समाधि मायने
हम बैठ जायें और बस सब खत्म, हमें कुछ नहीं पता च
रहा है कहाँ बैठे हैं? बाहर क्या वक्त है? शरीर की होश

नहीं रही। समाधि हो गई। ऐसी जड़ता का नाम अगर समाधि है तो फिर यह समाधि बड़ी सस्ती है। आधा किलो पोस्त खा लो। दस-बीस ग्राम अफीम की गोली खा लो। दो बोतल शराब की चढ़ा लो समाधि हो जायेगी।

समाधि का अर्थ-शरीर का जड़ हो जाना नहीं है। समाधि का अर्थ है चित्त का समाधान हो जाना। चित्त में कोई संशय विषय नहीं। अनात्माकार वृत्ति नहीं है। ऐसा चित्त शांत, एकाग्र, एक भीतर ठंडक, एक भीतर गहन गम्भीरता आ गई।

"मीरा के प्रभु गहर गम्भीरा, सदा बसो जी धीरा
आधी रात प्रभु दर्शन दीनैं, प्रेम नदी के तीरा"

चित्त का समाधान भक्त प्रेमी को भी हो जाता है। जब अपने प्यारे के चिंतन में अपने प्यारे की याद में मस्त हो जाता है, जब प्रेम की डुबकी लग जाती है तो चित्त का समाधान। और चित्त का समाधान हुआ कि समाधि। समाधि खाली शीर्षासन करने वालों और पद्मासन करने वालों को ही नहीं होती। योग भी एक तरीका है पर ख्याल रखना कितनी भी मन की उठा-पटक हो, कितना भी मन इधर-उधर भागे, मन की गहराई में भीतर तुम्हारे भी समाधि है। वह आनन्द स्वरूप है! वह सच्चिदानन्द स्वरूप है! बस फर्क इतना है कि तुम बाहर भागते जा रहे हो, वे भीतर जा रहे हैं और वो भीतर है।

कबीर जिसको कहते हैं 'उलट बांसी'। उलट-बाहर नहीं, भीतर चल। बाहर न जा अंदर चल। बाहर खोजने जायेगा पदार्थ मिलेगा, भीतर खोजने जायेगा चेतन आत्मा

मिलेगा। बाहर खोजने जायेगा संसार मिलेगा। अपने भीतर अपने अंदर खोजने जायेगा तो तुझे परमात्मा मिलेगा। ऐसा नहीं कि बाहर परमात्मा है नहीं। बाहर भी है लेकिन नजदीक से अगर उसको देखना है तो अंतर चलना पड़ेगा।

ब्रह्मज्ञानी गुरू ही तुमको भीतर जाने की कला सीखाता है। शास्त्र बहुत हैं। पढ़ सकते हो। शास्त्रों को पढ़-पढ़ कर अभिमानी हो सकते हो, सूखे ज्ञानी हो सकते हो, पर प्रेम और आनन्द की रस धार नहीं बहेगी। शब्द-शब्द का भाव पता होना चाहिए, शब्द का अर्थ पता होना चाहिए। गीता के श्लोक कण्ठस्थ हो गये। बड़ी बात समझ रहे हो तुम। तोते को रट लो, वो भी तो बोल लेगा।

अमरीका में तो पिछले आठ साल से कम्पयूटर में गीता के श्लोक अर्थ सहित डाले गये थे। अब भारत में भी वो डिस्क आ गयी है। आप वह डिस्क लगाईये और गीता के सब श्लोकों को अर्थ सहित समझ लीजिये जान लीजिये और तो और थीसिस कर लीजिये, किसी युनिवर्सिटी से आप पी.एच.डी. कर सकते हैं लेकिन फिर भी गीता के उस रहस्य की जब तक अनुभव से तुम्हारी जानकारी नहीं हुई है, तो तुम पंडित तो हो सकते हो गीता के, पर अनुभवी फिर भी नहीं।

पुरानी बातों में, पुराने ग्रंथों में सब कुछ है। पर ग्रंथों में सब कुछ होने पर भी एक जीवंत संत की आवश्यकता है जो तुम को झिंझोड़ सके। पर ख्याल रखना, **बड़े से बड़े धार्मिक ग्रंथ तुम्हारे अंहकार को कभी न तोड़ेगा क्योंकि वो जड़ है। लेकिन जीवंत संत तो तुम को**

मिनट में ठोक देगा। अंहकार जब ठुकता है तो तुमको बड़ी कलीफ होती है उस वक्त। ऐसा नहीं कि ग्रंथों में कुछ हीं। सब कुछ है पर उसे पीने की तो कला आनी चाहिए।

वो गहरी समझ कैसे उतरे? तुम पुरानी बातों को हरा-दोहरा के ज्ञानी नहीं हो सकते हो। कल रात में एक हानी पढ़ रही थी। तुमने सुनी है "युनियन इज सट्रेन्थ"–एकता ताकत होती है।

एक बूढ़े के पाँच-छः बच्चे थे। बूढ़ा मरण किनारे था तो चता है क्या करूँ कि इनकी एकता आपस में हो जाये। तो हानी उसने पढ़ी थी कि एक बूढ़ा मरते-मरते अपने चार लड़कों कहता है कि एक-एक लकड़ी लाओ फिर उन लकड़ियों को कट्ठा करके बाँधों। उन्होंने बाँध दिया। फिर कहा इसे तोड़ो तो हीं तोड़ सके। फिर उसने एक-एक लकड़ी सब को दी और कहा ड़ो तो सबने तोड़ दी। तब उसने समझाया कि तुम इक्ट्ठे रहोगे तुम को कोई लड़ा नहीं पायेगा और अलग-अलग रहोगे तो म को कोई भी तोड़ जायेगा।

अब इस बूढ़े ने कहानी पढ़ी थी तो कहानी याद आ यी। उसने अपने सारे बेटों को बुलाया और कहा-सुनो! ाओ जा के एक-एक लकड़ी ले के आओ। बुढ़ा क्या चता है? उसी कहानी का प्रैक्टिकल अभी कर दूँगा। ऐसे समझते नहीं जैसे उसके लड़के समझ गये थे वैसे मेरे ड़के समझ जायेंगे। तो कहता है-जाओ एक-एक लकड़ी ले आओ। पाँचों भाई पूछते हैं-क्या करोगे लकड़ी का? आग

सेंकनी है तो कोयला ले आते हैं, उपले ले आते हैं, ही
कंवेक्टर ले आते है। लकड़ी का क्या करना है?

अब वह कैसे कहे कि मैं कहानी का प्रैक्टिकल क
चाहता हूँ। कहता-नहीं-नहीं लकड़ी ही चाहिए। बेटे क
लकड़ी कहाँ से लाये। तो कहानी में कहते है, उसने पढ़ा
कि जंगल से काट के लाये थे। तो बूढ़े ने भी कह दिया जं
से काट के ले आओ। तो बेटों ने कहा-कि जंगलात वाले प
के जेल में डाल देंगे, मरवाओगे क्या? कहाँ से काट ला
कहता-अच्छा चलो, कहीं से भी ले आओ। तो बड़ा वाला क
है-अड़ियल है, बूढ़ा मानेगा नहीं। चलो मरते-मरते की
मान लेते हैं।

लकड़ी की टाल में गया और लकड़ी माँगी तो उसने
मोटी-मोटी लकड़ियाँ दे दी। कहानी में तो पतली-पतली
और देने वाले ने इतनी मोटी-मोटी दे दी। जब लड़का ल
तो बूढ़ा घबरा गया। इतनी मोटी-मोटी लकड़ी एक को
तोड़ नहीं पायेंगे तो पाँच को क्या तोड़ पायेंगे। कहता-अ
अब एक काम करो। इसको इक्ट्ठा करके एक गट्ठर बाँ
छोटा बोला-बापू! क्या करोगे इसका? रस्सी कहाँ से ल
चौथा कहता है-किसी पाजामे से नाड़ा निकाल के देता
उसने नाड़ा निकाला, गट्ठा उन्होंने बाँधा।

अब कहता है, इन्हें तोड़ो। अब पाँचों लड़के अपने
पर हाथ मारे पिताजी हम इनको तोड़ सकते हैं। इसे तो
सिंह न तोड़ सके। कैसे तोड़े हम इसको। अब बूढ़े को

कि कहानी में कुछ और था। यहाँ कुछ और होता जा रहा है। खाली किताब पढ़े वाले की यही हालत होती है। कहता-अच्छा चलो, अब गट्ठा खोल दो। तो तीसरा कहता है-खोलना ही था तो पाजामे से नाड़ा ही क्यों निकलवाया।

बूढ़े ने कहा-अब एक-एक लकड़ी तोड़ो। बड़े लड़के ने कहा-बूढ़ा मानेगा नहीं, तोड़ता हूँ। तोड़े तो टूटे नहीं। अब कहानी में था कि उसने हाथ से तोड़ी और यहाँ प्रैक्टिकल में बिल्कुल उलटा हो रहा है। तो बूढ़े ने कहा-अच्छा घुटने से ही तोड़ दो, तोड़नी है। अब लड़के ने घुटने से जोर लगाया। लकड़ी तो टूटी नहीं घुटना टूट गया। और जब घुटना टूटा तो पाँचों के पाँचों बोलना चालू हो गये। पहला कहता-अड़ियल है बूढ़ा, दूसरे ने कहा-गधा है बूढ़ा, तीसरे ने कहा-जिद्दी है बूढ़ा, चौथा बोला-बूढ़े को अक्ल ही नहीं, पाँचवा बोला-पता नहीं, कब मरेगा।

बूढ़ा कहता है-चलो एक बात पर तो सब सहमत हो गये। Unity, (युनिटी) एक विषय में, इन लोगों की है ही। अब मैं शांति से मर सकता हूँ। वह शांति से गया। ऐसे ही तुम बैठे-बैठे खोलते हो अपने धार्मिक ग्रंथों को और सोचते हो जैसे उधर हुआ वैसे हम भी करेंगे और मुक्त हो जायेंगे। कहानियों को पढ़-पढ़ कर आज तक न कोई मुक्त हुआ है न कोई होगा।

जीवंत प्रैक्टिकल चाहिए और जीवंत प्रैक्टिकल जीता संत करवा सकेगा। मरा हुआ, बीता हुआ, जा चुका नहीं। तो ब्रह्मज्ञानी गुरू का मिलना सचमुच में कठिन है। इसलिए मैं कहती हूँ इस माया की दीवार को तो तोड़ देना उतना कठिन

नहीं, पर फिर अपनी तोड़ लेने के बाद दूसरे की तोड़ने
सहायता करना और भी मुश्किल है। खुद जाग जाना मुश्कि
नहीं है पर दूसरे को जगाना बहुत मुश्किल है। इसलिए फि
हजारों-हजारों जागे हुए संत हुए पर उन्होंने दूसरों को जगा
का काम नहीं किया कि अब यह जोखिम कौन उठाये?

यह जोखिम का काम है, मुश्किल का काम है। हजार-हज
बातें कहनी पड़ती है-सिर्फ एक बात को Clear (क्लीयर) करने
लिए। चलते में एक प्रश्न और लेते हैं-पूछते हैं-

**गृहस्थ के कार्यों को करते हुए इतना समय नह
मिलता कि भजन कर सकें। रात भी देर हो जाती
सोने में। सुबह जल्दी उठ तो जाते हैं पर जल्दी उठ
पर भी साधना नहीं हो पाती। हमारा क्या होगा?**

जिस महिला ने यह प्रश्न पूछा है-मैं उसके लिए कह
चाहूँगी कि यह सत्य है कि हो सकता है तुम्हारी ब
लम्बी-चौड़ी गृहस्थी हो, तुम्हारी बड़ी इच्छा हो कि तुम एका
में बैठ कर जप, ध्यान कर सको, तो एक काम करो। हालां
मैं यह मानती हूँ कि तुम कितने भी व्यस्त क्यों न हो पिक्च
देखने को तो तीन घंटे निकल ही जाते हैं, नहीं निकलते
बाजार घूमने को दो घंटे मिल ही जाते हैं। पड़ोसन के सा
बैठ कर गपशप करने को तो समय मिल ही जाता है। कौ
कहता है, नहीं मिलता।

महिलाओं की गपशप अगर बंद हो जाती है तो शाय
हजारों घरों में शांति हो जाये। क्योंकि गपशप में बड़ी गड़ब

ो जाती है। पिक्चर देखने को, बाजार जाने को वक्त निकलता है तो भजन करने में क्या दिक्कत है। तो पहले तो ुम अपने आप को जाँचो, टटोलो, ईमानदारी से कुछ करना ाहते भी हो कि नहीं। और अगर कुछ न करना चाहते हो ो हजार बहाने और अगर कुछ करना चाहते हो तो हजार हाने करने के भी मिल जायेंगे।

पर मान लो सचमुच में किसी व्यक्ति की परिस्थितियाँ सी हैं कि वो दिन भर काम में लगा है और इतना थक जाता कि नींद तो होती है भजन नहीं होता। ऐसों के लिए मैं क बात कहना चाहूँगी, कोई नहीं तुम काम करो। जो भी ाम कर रहे हो, चाहे वो सड़क कूटने का हो या रसोई बनाने ा हो, अफसरी का हो या चपरासी का हो, काम जो भी तुम रते हो उस काम को एक ईमानदारी से करना और दूसरा रते-करते हुए में भीतर-भीतर अपने प्यारे का नाम ले-ले र याद करते रहना।

अब यह प्रश्न मुझको भेजा है तो जरूर कल भी आयी गी, आज भी आयी होगी तो एक घंटा निकला न, तो मैं ह कहती हूँ कि यहाँ एक घंटा निकल सका सुनने के लिए, ोशिश करोगे तो एक घंटा भजन करने के लिए भी जरूर कल जायेगा। भगवान ने ऐसी यह माया डाल रखी है, जाने गवान ने डाली या आदमी ने डाली जाने किसने डाली। सत्य यह है कि आदमी सब करने को तैयार है। मात्र भजन रने को तैयार नहीं। अपने आप को नहीं देखता है।

हम लोग मौके ढूँढ़ते हैं, बहाने ढूँढ़ते हैं न करने के,

करने के नहीं ढूँढते हैं। सारा दिन घर का काम करते-क
में अगर पाँच मिनट भी, आप आटा गूंध रही हो, तो मुट
को चलाते-चलाते साथ में हरि ओ३म्, हरि ओ३म्...
आटा भी गुंध रहा है और भजन भी हो रहा है। तो

"हथ कार वल्ल दिल यार वल्ल"

आप कार, स्कूटर ड्राइव करते हैं, अपने घर से दफ
तक जाते हैं। मान लो घर से दफ्तर में जाने की जितनी
है, इस दूरी को पार करते-करते में भी तुम याद कर सक
हो। याद करने के हजारों तरीके, गा लो, नाच लो, गुनगु
लो। उसके मंत्र का जप करते-करते कि उसके प्यार
मीठा भजन भीतर गाते-गाते। और बात कहूँ, प्रेम की ल
अगर दिल में जग जाए तो फिर बाहरी कोई नेम, क
अनुष्ठान न भी चलता हो, पर दिल की गहराई से तो भगव
के प्रति आस्था वह प्यार, वह श्रद्धा जग जाये तो सच जा
तो जो भी करोगे वह पूजा हो जायेगी।

"आँख न मुंदू, कान न रूंधू, साधो सहज समाधि भ
तनिक कष्ट न धारूं"

कष्ट बिल्कुल नहीं यह सिद्ध अवस्था की बात है।
कुछ भी करता हूँ वह पूजा हो गया, जहाँ-जहाँ भी चल
हूँ तेरी परिक्रमा हो गयी। जब खाता हूँ तो तुझी को ही भ
लगता है।

वृन्दावन में एक मस्ताने संत को मैंने देखा, मंदिर
अन्दर न जाये, गलियों में इधर-उधर घूमे। सुना था

उसकी दुकान भी थी। तो कभी-कभी दुकान भी चला लेता और कभी-कभी दुकान में जाता ही नहीं था। तो उसके दूसरे कारिंदे और परिवार के लोग सम्भाल लेते। इतना मस्ताना कि किसी ने कहा जो तुम्हारा मंदिर है, उसमें ठाकुर जी को भोग लगवा देना। किसी ने केले दिये, भगवान को भोग लगाने को और संत ने केला छीला और खा लिया।

उस व्यक्ति ने कहा-महाराज! हमने तो भगवान को भोग लगवाने को दिया था। संत ने जवाब दिया-यहाँ तेरा बाप रहता है। चेतन आत्मा है यहाँ तो, वहाँ आधार रूप से सत्य है। तो बाहरी आकार है वह तो जड़ का है, मूर्ति का है, पर असत्य रूप से आधार है उसका, यहाँ शरीर भी बाहरी रूप से जड़ है तुम्हारा शरीर चेतन आत्मा के कारण, हँसता गाता बोलता है।

चेतन आत्मा को मैंने भोग लगवा दिया और क्या चाहते हो तुम। ऐसे ही जैसे तुम घरवालों के लिए जब रोटी बनाओ तो ये न सोचो कि पति के लिए बना रहे हो। ये बोलो कि भगवान के लिए बना रहे हो। प्यार से रोटी बनाओ। किस को भोग लगेगा? ये न सोच कि सास के लिए बना रही हूँ। बोलो उसके रूप में भी मेरा भगवान ही खायेगा। बालक के रूप में भी मेरा भगवान ही खायेगा।

कौन है भगवान? कहाँ है भगवान? भगवान क्या किसी मंदिर में दीवार में कैद है? क्या किसी धार्मिक स्थान की दीवारों के अन्दर कैद पड़ा कोई जड़ है? वो तो चैतन्य है, वो तो सर्वव्यापक है, हर हृदय में है। तो हर हृदय में भगवान है।

ख्याल करना जिसको तुम दुश्मन कहते हो उसमें भी भगवा
है। दोष तेरी आँख का कि तू नहीं देख पा रहा। दोष भगवा
के होने का तो नहीं, तो ऐसा देख पाये अगर तू। पर तुम लो
बनाते हो रोटी अगर घरवाले खाये तो वो कहे-एक रोटी औ
देना। हुणे कहना सी पहले क्यों नहीं बोले?

अच्छा मान लो उसकी जगह हम हों। तुम्हारे घर
भोजन करने आये हों और मान लो हम दूसरी रोटी के बा
तीसरी माँग ले तो क्या, हम को भी ऐसे जबाब दोगे? त
तो भाग-भाग के न-न महाराज! एक और खाओ, एक औ
खाओ। भाव से करोगे। गुरू आये हैं घर में, संत आये हैं, प्रे
आये हैं, सत्संगी जन आये हैं। कितने प्यार से भाग-भाग
तुम उनके लिए सेवा करते हो और घर में तुम्हारे पिताजी
कह दिया। मुन्ना, ज़रा पानी तो देना। ओ बापू जी! ले जा
करो अपने आप। अब मैं कहाँ तुम को देने आऊँ। इतना का
तो कर लेना चाहिए। कमर टूट जाती है इतना का
करते-करते। उसको तुम यह जवाब दे रहे हो।

बहुत बड़ी गलती में है आदमी जो यह समझता है
भगवान बस एक ही जगह कैद है। वह एक जगह में कै
नहीं है वह तो सब जगह में है। और तुम को देखना न आ
तो कसूर तेरा या किसका? और यह भगवान को सब औ
देखने की जो कला है, वह बिना संत के तुम को प्राप्त हो
नहीं। इसलिए

"प्रथम भक्ति संतन कर संगा
दूसर रति मम कथा प्रसंगा"

कहा-संत से प्यार कर ले। प्यार कर उससे। प्यार रेगा संत से, पहुँचेगा उस सत्य तक। एक बात मैं और इसमें हना चाहूँगी। संत से प्रेम करना अच्छा, गुरु से प्यार करना च्छा। पर कभी-कभी लोग संत और गुरु तक अपनी यात्रा तिम मान लेते हैं। गुरु भक्ति करनी अच्छी। पर फिर कईयों गुरु भक्ति को ही अंतिम मान लिया। यह अंतिम नहीं गुरु द्वार है। गुरु तो द्वार है, गुरु से निकलना है। संत तो वाजा है। उससे गुजरना है, पहुँचना है परमात्मा तक। प्रीति रना संत से, मोह नहीं, अटकना नहीं उस पर। अटक गये मुश्किल। घर वालों के मोह से छूटे, संत के मोह में अटक ये। मोह में मत अटकना।

मोह नहीं प्रेम करना। अगर प्रेम करोगे तो यात्रा रमात्मा तक जरूर होगी और मोह करोगे तो फँस जाओगे। ईयों को मैंने देखा-वे गये तो थे भगवान की खोज में, रु, संत से प्यार हो गया और फिर इतना प्यार हो गया कि गवान ही भूल गया। बस अब वही भर याद रह गया। कल झसे कोई पूछ रहे थे कि हम यहाँ त्रिकुटी में गुरु को देखना हते हैं और गुरु दिखते नहीं है। हम क्या करें? हम बहुत खी हैं। मैंने कहा, तुम को किस गधे ने कहा कि यहाँ ख। यहाँ देखना है तो उसको देख।

गुरु से प्यार अच्छा, गुरु से श्रद्धा बहुत अच्छी है पर रु को अंतिम तो न बना। वह तो पड़ाव है, पड़ाव से भी जर जाना है। इस पड़ाव से भी गुजरना है। जो संत जो हात्मा चेलों को अपने ऊपर अटकाते हैं, क्षमा करना, मेरी

कठोर वाणी, वे बेइमान हैं। संत तो तेरा सहायक होगा, स
तक पहुँचाने के लिए। संत तो तेरा मित्र बनता है, तेरे परमा
के इस रास्ते पर। संग-संग चलता है। तेरे साथ-साथ। प
संत को अंतिम मत मान लेना। सीढ़ी है, सीढ़ी से गुजर उ
और इन मस्ताने संतों की, ऐसे ब्रह्मज्ञानी गुरूओं की संग
जिनको मिल जाती है जीवन में, महाराज ! ऐसा अपरम्प
संतोष और आनन्द आता है कि कुछ न पूछो।

जरूरत है कि तुम तैयार हो कमर बाँध के अब इस मालि
के प्यार और इस मालिक की साधना में उतरने को। खाली क
सुन रहे हो, बड़ी अच्छी बात, पर खाली कथा सुन कर घर च
जाओ और कहो कि अब कुछ करने की जरूरत नहीं क्योंकि ज्ञ
की अंतिम बात मैं सुन आया, अब कोई जरूरत नहीं है।

ख्याल करना गणित में सब सवालों के उत्तर किताब
पिछले पेजों पर रहते हैं। परन्तु पिछले पेजों से प्रश्न का उत्
ले के Direct प्रश्न का उत्तर नीचे लिख दो तो तुम पास न
हो जाओगे उलटे फेल हो जाओगे। उलटे मार पड़ेगी तुम क
कि तुमने नकल मारी पीछे से देख के। प्रश्न को पूरा ह
करोगे तो उत्तर वही आयेगा जो पीछे है। पर हल किये बि
खाली उत्तर को रट लो इतने से कुछ नहीं बनेगा।

ऐसे ही तुम यहाँ बैठे सुन रहे हो या किसी संत को ज
तुम सुनते हो तो संत तुम्हें उत्तर दे रहा है, पर मैं तुम्हें ह
करने की प्रक्रिया भी समझाना चाहती हूँ। अब जैसे मैं
कहा-भगवान दिल ही में है। भगवान हम से दूर नहीं है

भगवान तो सदा मेरे पास है, सदा मेरे साथ है। अब यह उत्तर है यह प्रक्रिया नहीं है। प्रक्रिया तो करनी होगी।

यह सच्चाई है कि वह तुमसे दूर नहीं और यह भी सच्चाई है कि इतना कह लेने से भगवान मिल नहीं गये उसके लिए तो साधना। ऐसा ब्रह्मज्ञानी जो मस्त है, मिलना जिसका सचमुच कठिन है। ऐसा ब्रह्मज्ञानी; ब्रह्मज्ञानी कौन? जिसका ज्ञान उसकी बुद्धि तक नहीं, जिसका ज्ञान उसकी आत्मा तक है। जिसके जीवन में रस है, जिसके जीवन में धार है, जिसके चेहरे पर प्रकाश है, जिसकी वाणी में इतना ओज, इतना असर कि सुनते-सुनते चित्त आंदोलित होने लग जाता है। ऐसे ब्रह्मज्ञानी का मिलना सचमुच कठिन। और मिल जाये तो कोई कारण नहीं कि वह तुमको जगाये न। वह बात अलग है कि तुम जागने के बाद फिर सो जाओ क्योंकि सोने की आदत पुरानी है। इतनी जल्दी छूटती नहीं है भाई।

पर ज्ञानी ऐसा ब्रह्मज्ञानी जो अपनी मस्ती में मस्त है। अपनी उस मस्ती को अपने उस भाव को कैसे गुनगुनाता है। अब मेरे साथ तुम भी गुनगुनाओ–

हर हर ओ३म्, हर हर ओ३म्
जंगल में जोगी बसता है
ये रोता है वो हँसता है
दिल उसका कहीं न फँसता है
तन मन में चैन बरसता है
खुश फिरता नंग मंलगा है

नैनों में बहती गंगा है
जो आ जाये सो चंगा है
मुख रंग भरा तन रंगा है
गाता मौला मतवाला है
जो देखो भोला भाला है
मन मनका उसकी माला है
तन उसका एक शिवाला है
पास उसके पंछी आते हैं
और दरिया गीत सुनाते हैं
बादल इस्नान कराते हैं
वृक्ष उसके रिश्ते-नाते हैं

रिश्तेदारी तुम्हारी केवल तुम्हारे परिवार तक सीमित है
संत के लिए तो उसका परिवार ये वृक्ष, ये पेड़, ये फूल,
फल भी। राम तीर्थ स्वामी के लिए कहते हैं-जब वो विशिष
गुफा में रहते थे, ऋषिकेश। गंगा तट में। एक दिन बैठे-बै
चट्टान पर ध्यान के बाद वह जैसे ही उठे, सत्य बात है यह
शेर आ कर बिल्कुल उनके सामने खड़ा हो गया और लम्
ऐसी चट्टान कोई पाँच फुट ऊँची, रामतीर्थ जी पंजाब
हट्टे-कट्टे जवान थे यह।

संत वेदान्त केसरी स्वामी रामतीर्थ, चट्टान के साथ सी
खड़े हो गये और कहते हैं, शेर ने दोनों अगले पैर उठा क
चट्टान के साथ टिका दिये और आँख में आँख डाल के रा
कहते हैं, "आओ! मेरे राम! कैसे हो?" होता अज्ञानी किता

ढ़ा पण्डित कोई तो डर के मारे घिग्गी बंध जाती गंगा में लांग मारता जाने क्या करता पर राम अनुभवी है। राम ह्मज्ञानी संत है। स्वामी राम शेर की आँख में आँख डाल के हते हैं-आओ राम! आओ! मेरे नारायण! कैसे हो?

"एक शेर दूसरे शेर को मिलने आया। एक शेर दूसरे सरी को मिलने आया है। मित्र-मित्र को मिलने आया है।" जारों बार ऐसा हुआ, सर्प कहते बच्चों के पास से गुजर जाते, नके उपर से गुजर जाते, उनको काटते नहीं। पर आदमी, बड़े ो काट लेते हैं। क्यों? बालक में भी मासूमियत, Innocence इनोसैंस), निर्दोषता होती है, वैसी ही निर्दोषता, मासूमियत, nnocence (इनोसैंस) संत के हृदय में होती है। इसलिए हंसक प्राणी भी उसके साथ प्रेम का व्यवहार करते हैं।

आदमी, आदमी के साथ प्रेम न कर सका। ज्ञानी संत े साथ पशु भी प्रेम करता है। अब, जब शंकर महाराज, ठते हैं तो सब सर्प बांहों में, गर्दन में, कलाईयों में घूमते हते हैं। किसी ने पूछा-यूरोप में, एक हिन्दुस्तानी संत स्वामी ोगानंद परमहंस जी को कि ऐसा कैसे हो सकता है कि एक यक्ति के ऊपर इतने साँप और उसको काटे नहीं? यह आप ा कैसा भगवान है तो योगानंद जी ने आगे से जवाब दिया। ोले-भगवान की बात दूर छोड़ो, तुम कहते हो उनके यहाँ कैसे है कि सर्प उनको काटते नहीं और उनके ऊपर घूमते हते हैं। वह इसलिए कि जिनको हम शंकर कहते हैं, उनको म शंकर इसलिए कहते हैं कि उनके लिए हर कंकर, शंकर ं। उनके लिए जड़ कुछ बचा नहीं। हर जड़ में वही चेतन

आत्मा। जैसे तुम अपनी पत्नी को या अपनी माता को क
नुकसान नहीं पहुँचाते ऐसे ही ज्ञानी संत अपने भीतर में उ
चेतन आत्मा को देखता है और साथ में जिसे तुम हिंसक प
कहते हो उसमें भी उसी चेतन आत्मा को देखता है।

तो जो मेरा अपना है, जो मेरा आपा है। वो मुझ
क्यों काटेगा, मारेगा। ऐसे ब्रह्मज्ञानी संत का मिल जा
भगवान का सबसे बड़ा प्रसाद है। जीवन का अगर सबसे ब
पुण्य जागृत हो तो ही किसी ऐसे जागृत, निष्ठावान संत
मुलाकात होती है और यह भी बात बिलकुल सच है कि व
तुमको फिर मृत्यु के भय से मुक्त करने की कला सिखाये
और वही फिर तुम को जीने की कला सिखायेगा। जो ख
निर्भीक, जो खुद अजर अमर आत्मा को जान के आनन्दि
हुआ, वही तुमको इस आनन्द की खबर देगा।

आज की चर्चा यहीं तक।

भाव ही पूजा

प्रभु मेरे अन्तर के पट खोल,
चाहे मेरी आँखें ले ले, ज्ञान की आँखें खोल।
प्रभु मेरे अन्तर के पट खोल।।
करमन का जो तराजू तोलो,
हल्की जाऊँगी मैं डोल,
प्रभु मेरे अन्तर के पट खोल।
बिकने को तैयार खड़ी हूँ,
ले लो चाहे जिस मोल।
तुझसे दूर छिटकी पड़ी हूँ,
कैसे रिझाऊँ तुझे बोल।
प्रभु मेरे अन्तर के पट खोल।।
मिलने को तैयार खड़ी हूँ,
कब आओगे श्याम बोल।
मिलने को तैयार खड़ी हूँ,
कब आओगे गुरू बोल।
प्रभु मेरे अंतर के पट खोल।।
आस लगाए बाट मैं जोहूँ।
प्रीति करूँ अनमोल।
प्रभु मेरे अन्तर के पट खोल।।

आज यहाँ अन्तिम दिन है। अच्छा बोलो तो तुम्हारा कि मारा। सत्संग का अंतिम दिन है सो खूब प्रेम से आनन्द से, हृदय ी गहराई से कीर्तन में शामिल हों।

प्रभु मेरे अन्तर के पट खोल,
चाहे मेरी आँखें ले ले, ज्ञान की आँखें खोल।
प्रभु मेरे अन्तर के पट खोल।।
करमन का जो तराजू तोलो,
हल्की जाऊँगी मैं डोल,
प्रभु मेरे अन्तर के पट खोल।
बिकने को तैयार खड़ी हूँ,
ले लो चाहे जिस मोल।
तुझसे दूर छिटकी पड़ी हूँ,
कैसे रिझाऊँ तुझे बोल।
प्रभु मेरे अन्तर के पट खोल।।
मिलने को तैयार खड़ी हूँ,
कब आओगे श्याम बोल।
मिलने को तैयार खड़ी हूँ,
कब आओगे गुरू बोल।
प्रभु मेरे अंतर के पट खोल।।
आस लगाए बाट मैं जोहूँ।
प्रीति करूँ अनमोल।
प्रभु मेरे अन्तर के पट खोल।।
"करमन का जो तराजू तोलो, हल्की जाऊँगी मैं डोल
प्रभु मेरे अन्तर के पट खोल"

कितना भी आदमी अपने आप को अपने पुण्यों, अ
गुणों के आधार पर अपने आपको श्रेष्ठ मानता हो, अपने आप
दूसरों से भी अलग, दूसरे से बड़ा, दूसरों से भी आदरणीय जान
हो, लेकिन प्रभु के द्वार पर तो कोई मोल नहीं है। सच्चाई
यह है कि जगत की निगाह में भी तुम्हारा कोई मोल नहीं।
तो थोड़ी देर को एक भ्रम सा खड़ा कर दिया जाता है कि
बहुत श्रेष्ठ हो। तब बहुत अच्छे हो। तुम बहुत सुन्दर हो।
बहुत गुणी हो। और फिर जब समाज की मर्जी नहीं होती
वह तुमको दिए हुए ये सब विशेषण छीन लेता है तुमसे।
फिर तुम अपने आपको कितना दीन-हीन और निःसहाय देख
हो। कल तो मुझको बहुत लोग पूछते थे, जानते थे। अ
मुझको कोई नहीं पूछता। आज मुझको कोई नहीं जानता।

ख्याल रखना, जगत के सामने निःसहाय हो जाओगे
जगत खिल्ली उड़ाएगा। अपनी कमजोरी का अहसास तुम दू
को दे दोगे तो दूसरे इसको खूब Exploit करेंगे। और तो
तुम जरा सा किसी को कह दो न कि मुझे तुमसे प्रेम है।
सा अहसास करा दीजिए सामने वाले को तो तुरन्त ही
अपनी माँगों की फहरिस्त तुम्हारे सामने रखना चालू हो जाए
अपनी माँगे, अपनी माँगों की Demands तुम्हारे सामने रख
चालू हो जाता है। श्रेष्ठता, जो तुमको दूसरों से मिलेगी वो दू
छीन लेंगे। दूसरों ने कहा तुम बहुत सुखी हो तुमने मान लि
मैं सुखी हूँ। दूसरे आ कर कहने लगे बड़ा दुःख हो गया तुम
बहुत दुःखी हो तुम। तुमने मान लिया हाँ मैं दुःखी हूँ।

आज कुछ एक प्रश्न मेरे पास इस तरह से ही मि

जुलते आए हैं। एक प्रश्न-लिखने वाला बार-बार अपने आपको कुपात्र कहता जा रहा है। मुझे कह रहा है आप तो माता हो और मैं आपका कुपात्र पुत्र हूँ। कुपुत्र हूँ मैं। नाम नहीं लिखा है। पर मैं कहूँगी कि अगर तुमने मुझे माँ के रूप में देख ही लिया है तो फिर माँ की निगाह में कोई कुपुत्र होता ही नहीं। सो अपने आपको एक तो कुपुत्र कहना बन्द कर दो...। और दूसरे क्यों अपने-आप को निसहाय दिखाना चाहते हो? शायद जरूर यह कुंठा दूसरों की दी हुई होगी। दूसरे कह रहे होंगे उसको तू नालायक है। उसने मानना चालू कर दिया होगा अन्दर कि हाँ मैं नालायक हूँ।

पूछा है-कि मैं अधिक तो कुछ नहीं करता हूँ, पर जब भी कभी मंत्र जप करने बैठता हूँ तो भाव आने लग जाता है और आँखों से आँसू बहने लग जाते हैं और मैं रोक नहीं पाता हूँ और फिर जार-जार रोने लग जाता हूँ और अन्दर फिर एक अजीब सा भय उठता है कि मेरी इस दशा को अगर मेरे घरवालों ने देख लिया तो वे मुझे, मेरे विषय में क्या सोचेंगे। मुझे वे पागल कहेंगे, क्या कहेंगे और मैं कुछ नहीं करता हूँ।

ख्याल करना, तुमने कितने संस्कृत के श्लोक बोले। तुमने कितनी विधिवत् प्रार्थनाओं को, उनके कर्म-अनुष्ठान और उनके विधि विधान के अनुसार किया है। इसकी कीमत भगवान की निगाह में दो कौड़ी की है। हाँ! जो तुम्हारी आँख से आँसू बहे, इनकी जरूर कीमत है। भारत में निम्न जातियों को, नीची जातियों को हजारों-हजारों सालों से अहसास दे दिया गया कि तुम नीच हो, निकृष्ट हो और भगवान को रिझाना हो तो वो तो सिर्फ...।

अब जैसे यहाँ भारत वाले मानते हैं कि संस्कृत से ही भगवान रिझाया जा सकता है। उधर पोप Vatican city के बादशाह। वे कहते हैं कि भगवान को रिझाना हो तो उसकी एक ही भाषा है हिब्रू। हिब्रू भाषा जिसको अब्राहम मोज़िस बोला करते थे। और हिटलर की सेना में जितने लोग थे, उनका यह मानना था कि अगर भगवान से कोई वार्तालाप करना है तो वह जर्मनी भाषा में ही करना होगा। क्योंकि उसके अलावा उसको कोई भाषा आती ही नहीं। वैसे तो कोई दिक्कत नहीं। मान लीजियेगा उसको सिर्फ एक ही भाषा आती हो तो भी आजकल वो Translators मिल जाते हैं। तो भगवान रख सकते हैं दो-चार Translators। अब जापान से अगर कोई आता है तो जरूरी तो नहीं कि भारत के प्रधानमंत्री को जापानी आती हो तो ही वह बात कर सकेगा। वह बीच में Interpretor को बिठा लेगा। बातचीत कर लेगा। क्या दिक्कत है।

पूजा करने का कोई एक तरीका Fix नहीं है, याद रखना कि ऐसे ही होगी तो भगवान मानेगें, रीझेंगे। ऐसे नहीं करोगे तो नहीं होगी। ये कोई शर्त नहीं है। मैंने पहले भी कहा था भगवान से कोई शर्त नहीं है कि तुम यह करो तो मैं रीझूँगा। ये सारी शर्तें बीच वाले लोगों ने बनाई हैं। बीच वाले लोगों ने। सच कहूँ तो तुम्हारे संत जनों ने, जो शायद संतत्व से बड़ी दूर हैं। पर संत जरूर कहलाते हैं। ऐसे लोगों ने बनवा रखी हैं इन्द्रियों का दमन कर लेना। मन को शुद्ध कर लेना। बुद्धि को विवेकी बना लेना तो भगवान रीझ जाएंगे।

ख्याल रखना इन्द्रियाँ तुम्हारी Control में हो गई। मन तुम्हारा शान्त हो गया। बुद्धि तुम्हारी विवेकी हो गई, तो अब

भगवान का अचार डालोगे क्या? अब क्या करेंगे उसको। साबुन की जरूरत तब ही है न, जब कपड़ा मैला हो, जब कपड़ा गन्दा हो। तो उस मैल को धोने वास्ते साबुन की जरूरत है। और कोई कहे कि साबुन के पास तुम तो जा सकते हो अगर तुम उजले हो जाओ। कोई कपड़े से कहे तो बात बनती नहीं है। भगवान ने कोई शर्त खड़ी नहीं की है कि तुम इस तरह का So called बँधा बँधाया एक जो Defination, एक परिभाषा दे रखी है कि तुम ऐसे हो जाओ तो मैं रीझूँगा। वह तो कहता है तुम जैसे भी हो मेरे हो। भगवान कहता है तुम जैसे भी हो, मेरे ही हो। इसमें किंचित मात्र भी कोई शंका की, गुंजाइश की भी जगह नहीं है। तुम उसी के हो। तुम अपने आपको भगवान से जुदा देखते हो या जानते हो तो यह तुम्हारी भूल है। उसकी नहीं। तुम कहते हो भगवान मेरे पर कृपा कर दो। सवाल यह उठता है भगवान तुम्हारे ऊपर कृपा तो आज भी कर रहा है पर तुमको लेनी न आवे तो बता क्या किया जाए। ख्याल रखना जैसे भी हो तुम उसी के हो। जिस हालत में भी हो, तुम उसी के हो। और सच बात और कहूँ प्यार, यह अहसास, ऊँचाईयों में पहुँचा देगा। ऐसे-ऐसे हृदय के उन गौरी शंकरों में तुमको सुशोभित कर देगा कि जिसमें आम आदमी कल्पना भी नहीं कर सकता है।

कल रात कुछ मैं लिख रही थी-

"प्यार इन्सान को इन्सान बना देता है।" ख्याल करना इन्सान को भी इन्सान बनाना पड़ता है। इन्सान का बच्चा ही एक ऐसा है कि जो जानवर भी हो सकता है और शैतान भी हो सकता है और एक अच्छा इन्सान भी हो सकता है।

"प्यार इन्सान को इन्सान बना देता है
जीस्त की राह को आसान बना देता है
ऐ मोहब्बत तू न रख मेरी खताओं पे नजर
प्यार पत्थर को भी भगवान बना देता है"

पत्थर में भी जो भगवत्ता नजर आ रही है क्या वो भक
के प्यार के कारण से ही नहीं। और मन में प्यार न हो
खाली पत्थर है और मन में प्यार हो तो फिर पत्थर भी भगवा
है। अब ख्याल रखना, प्यार न हो तो सामने आकर खुदा ख
भी हो जाए तो भी कह दोगे कि तुम पत्थर हो।

"कुछ और नहीं जीना ही सिखा"

जीना भी सीखना पड़ता है और जीने की कला च
एक लोगों को आती है। सबको आती नहीं है। तो जिस
अपने आपको कुपुत्र कहा है, मैं उस अपने सुपुत्र को कह
हूँ कि एक तो तुम अपने आप को कुपुत्र कहना बंद कर दो
और दूसरे मैं यह कहती हूँ कि भाव से भले मंत्र करो, भ
ध्यान करो, भले आरती करो कि भले शीश नवा दो और भ
नमाज में झुक जाओ कि भले हाथ आकाश की ओर उठा
कि भले हाथ जोड़ दे। किसी भी किस्म से तू अपनी प्रार्थ
पूजा को करता है पर जिसमें भाव उमड़ रहा है तो मैं सा
देती हूँ। कम से कम मैं इतनी बात की सहमति देती हूँ
तुम बिल्कुल सही जा रहे हो। और दूसरे क्या कहेगें। दूस
की फिक्र करनी छोड़ दो।

ख्याल करना दुनिया के नालायक लोगों ने भी, दुनि

की परवाह नहीं की। जैसे तुम्हारा लड़का नालायक हो तो वह माँ-बाप की कोई परवाह करता है क्या? नहीं करता। तुम्हारे घर का कोई नालायक सदस्य हो, लाख समझाओ नहीं मानता है। तो दुनिया में जो लोग नालायक हुए हैं उन्होंने भी दुनिया की परवाह नहीं की और ख्याल करना जो दुनिया के बहुत लायक लोग हुए हैं उन्होंने भी दुनिया की परवाह नहीं की।

जब बाल गंगाधर तिलक ने आवाज उठाई थी कि विधवा हो चुकी स्त्री को जबरदस्ती सती नहीं बनाया जाएगा। ख्याल करना, उस वक्त का सारा धार्मिक समाज खड़ा हो गया था, गंगाधर तिलक के खिलाफ कि तुमने ये बात कही तो कही कैसे? सती होना हमारी परम्परा है और स्त्री अपनी मर्जी से सती नहीं होगी तो हम जबरदस्ती भी कर देगें। जैसे राजस्थान में रानी कुँवर को किया गया था, ख्याल रखना। बाल गंगाधर तिलक लड़ पड़े। अब So called विरोधी Lobby इनको नालायक कहती होगी और यह उनको नालायक समझ के कहते कि कौन परवाह करता है तुम्हारी। इससे ज्यादा शोषण, इससे ज्यादा अपराध इससे ज्यादा पाप और स्त्री के प्रति क्या हो सकता है कि जबरदस्ती उसको आग में झोंका जाए। इससे ज्यादा और Exploitation किसको कहते हैं? आवाज उठाई गंगाधर तिलक ने। एक इकलौते ने उठाई। और फिर कई लोग मिलते गए। और फिर धीरे-धीरे, धीरे-धीरे समाज का एक बड़ा वर्ग इनके साथ हो गया। तो अगर गंगाधर तिलक परवाह करते तो फिर बात यहाँ तक न पहुँचती, जहाँ आज पहुँची है।

तो दुनिया में नालायक भी दुनिया की परवाह नहीं करते

और दुनिया के लायक भी दुनिया की परवाह नहीं करते हैं। जब यह तुम्हारी मर्जी है कि तुम लायक होना चाहते हो कि नालायक होना चाहते हो। तुम पूछते हो घरवाले क्या सोचेंगे? भाड़ में जाएँ। क्या लेना उनसे। अरे! भगवान से भक्ति हो रही है। उसके साथ दिल से दिल मिल रहा है अब दुनिया से क्या लेना कि क्या सोचती है और जरा अपने से हिम्मत न आ रही हो तो सुन मीरा के शब्दों को। मीरा क्या कहती है-

"संतन संग बैठ-बैठ लोक लाज खोई"

भाड़ में जाओ तुम सब। नहीं परवाह करनी मुझको। अगर मुझे मेरे साँवरे से प्यार है तो मैं तो डोलूँगी उसके प्यार में। तुम्हें जो कहना है कह लो। तुम्हें जो करना है कर लो। तुमको जो बोलना हो बोल लो।

"मैं तो साँवरे के रंग राची,
छाड़ जगत की रीति पुरानी,
हरी स्यों प्रीति राखी।
मीरा सांवरे के रंग राची।।
जग की बात कोई कोई बोले,
जग की बात सब काची।
सुनहूँ संतन की वाणी मैं निसदिन,
संतन बात है सांची।
मीरा साँवरे के रंग राची।।"

दुनिया की परवाह न कर। दुनिया की परवाह करने लगोगे तो बड़ी मुसीबत हो जायेगी। प्रसिद्ध कथा है पंचतंत्र की-

एक बाप-बेटा अपने घोड़े को ले करके दूर गांव जा रहे थे। तो बेटे को सवारी करवा रखी थी घोड़े पर और बाप साथ-साथ चल रहा था। कुछ लोगों ने देखा तो टिप्पणी कर दी। कहते-बताओ! कैसा कलयुगी लड़का है, बुड्ढ़े बाप को चलवा रहा है। खुद घोड़े पर बैठा है। बाप ने सुनी और बेटे ने भी सुनी तो बेटे ने कहा, पिताजी! आप घोड़े पर बैठ जाओ, मैं पैदल चलता हूँ। मैं जवान हूँ। मैं चल लूँगा। तो पिता घोड़े पर बैठ गया। बच्चा लगाम लेकर चलने लगा। कुछ दूर जाते हैं। फिर किसी ने टिप्पणी कर दी। कैसा नालायक है बाप। देखो मासूम से बच्चे को चलवा रहा है। खुद गधा! घोड़े पर बैठा है। इतनी अक्ल नहीं करते बच्चे का कितना बोझा होगा, भई! दोनों बैठ जाओ घोड़े के ऊपर। तो दोनों बैठ गए। अब घोड़े के ऊपर दोनों बाप-बेटा बैठे हैं। इतने में किसी ने और टिप्पणी कर दी। वे मेनका गाँधी की Brigade के होंगे। Animal lovers. कहते जानवर को मार दोगे, बेवकूफो! दोनों चढ़ बैठे हो उसके ऊपर। उसकी जान निकालोगे क्या? तो दोनों फिर नीचे उतर गए। दोनों पैदल-पैदल चल रहे हैं घोड़ा साथ-साथ चल रहा है। कुछ आगे गए फिर किसी ने टिप्पणी कर दी। कहते-कितने गधे हैं ये। इतना नहीं करते भई! घोड़ा है चढ़ जाओ ऊपर। बोला-उसको भी चलाए जा रहे हैं खुद भी चले-चले जा रहे हैं। इनको अक्ल ही कोई नहीं। फिर दोनों घोड़े पर चढ़ गये। फिर किसी ने कह दिया पागल हो क्या? घोड़े को मारोगे क्या? फिर उतर आए। उतरते-उतरते किसी ने कहा-इतनी नहीं करते मरियल सा घोड़ा है। उसका भी ख्याल कर ले। तो

बाप बेटा सोचते हैं कैसे ख्याल करें। तो उन्होंने घोड़े की दोन अगली-पिछली चारों टाँगों को डंडे से बाँधा और बाप-बेटा कंध में उठाकर के घोड़े को चलने लग पड़े। अब क्या करें महाराज दुनिया कह रही है। दुनिया का कहा तो मानना पड़ेगा। पर चा कदम भी न चले, गिर गए और घोड़ा इन दोनों बाप बेटे के ऊपर। टाँगे दोनों की टूटीं।

अब दुनिया की परवाह करके अगर जीना चालू करो तो ये दुर्दशा हो जाएगी। ये दुर्दशा करानी चाहते हो तो जरूर मानो दुनिय की बात। नहीं तो भाड़ में जाए दुनिया। अब आप सत्य की राह प चल रहे हो, जब आप अपने ईमान की बात के अनुसार चल रहे हो, जब आप किसी का बुरा नहीं कर रहे हो, जब आप अपनी साधना में संलग्न हो तो किसी को क्या अधिकार है कि वह तुम्हारे ऊपर टिप्पणी करे और अगर करता है सुनो मत।

गुरूवाणी में बड़ा सुन्दर आया-
लोकन की चतुराई उपमा तै बैसन्तर डाल
अब हम चली ठाकुर पै हार''

हम तो ठाकुर के चरणों में हार गए। संसार वाले अब हमें भला कहें, स्तुति करें तो भी ठीक। बुरा कहें तो भी ठीक। और दुनिया का ख्याल करोगे तो बहुत मुश्किल हो जाएगी। किसकी बात मानोगे किसकी बात नहीं मानोगे। इसी से मिलता जुलता एक और प्रश्न एक महिला ने मुझसे पूछा है-वह पूछती है कि कुछ दिन ही पहले मेरे पति मर गए। अब सब लोग मुझे अनाथ हो गई, अनाथ हो गई। ऐसा कहते हैं। और जबकि यह

भी कहा जाता है कि भगवान सिर पर है तो फिर कोई अनाथ कैसे हो सकता है। पर समझ कुछ नहीं आती और समाज की बातें सुन-सुन कर मैं दुःखी होती हूँ। बताओ मैं क्या करूँ?

मैं एक बात तुमको कहना चाहूँगी। समाज की सुनोगे तो दुःख होगा ही। क्योंकि दूसरों को तुम्हारे दुःख कुरेदने और तुम्हें दुःखी देखने में बड़ा आनन्द मिलता है। एक जो Sadistic हैं। एक वे लोग जो अपने-आपको दुःख दे करके बड़े खुश होते हैं। और फिर एक वे लोग हैं जो दूसरे को दुःख दे कर बड़े खुश होते हैं। वे किसी को सुखी देखना चाहते ही नहीं। दुःख देना चाहते हैं। दुःख देते हैं। जैसे हिटलर के विषय में मैंने कहा-जब इसने यहूदियों का कत्ल करना चालू किया तो इतने जालिम तरीकों से कत्ल करता था कि लोग तड़फड़ाते थे Gas chambers में और Gas chambers में दस-दस हजार आदमी को इकट्ठे घुसाया जाता। जिस Chamber में जिस कमरे में सौ-सौ आदमी, दो सौ आदमी मुश्किल बैठ सकता हो या कोई पाँच सौ आदमी खड़ा हो सकता हो उस Chamber में आदमी क्या, ऊपर लेटा-लेटा कर तहें बाँधी जाती थीं। और फिर जहरीली गैस छोड़ी जाती और फिर अन्दर से कई दिन बाद उनकी सड़ी हुई लाश को निकालते।

फिर एक दिन इसको ख्याल आया कि यह जो स्त्रियों को हम मारते हैं तो ये इनके इतने बाल होते हैं। ये बाल तो किसी काम में भी लाए जा सकते हैं। तो उनसे फिर कह दिया कि इन स्त्रियों को मूंड दिया करो और इन बालों को यहाँ बाजार में बेचो। नहीं तो इनकी रस्सी बना के मेरे सैनिकों को

युद्ध में भिजवा दो। खुशी मिलती थी उसे Sadistic लोग।

और फिर दूसरे हैं जो अपने आप को दुःख, अपने आप को तकलीफ दे के बड़े खुश होते हैं। ख्याल करना जब एक आदमी कड़ी धूप में, जून के महीने में और कड़ी धूप में खड़ा है दुनिया कहती है बड़ा तपस्वी है। कि हम लोग छाया में खड़े है यह धूप में खड़ा है। मैं उसको तपस्वी नहीं मैं उसको कुछ और कहूँगी। वह स्वंय को सताने वाला sadistic आदमी है। कहाँ लिखा है कि शरीर को इस तरह से तपाने से भगवान खुश हो जाएंगे। तो चमड़ी को मोटी कर रहा है अपनी! जिस दिन चमड़ी ज्यादा मोटी हो जाएगी गर्मी महसूस ही नहीं होगी। सर्दी महसूस ही नहीं होगी।

एक आदमी लम्बे-लम्बे उपवास कर ले तुम कहते हो बड़ा तपस्वी है। ख्याल रखना। इस तपस्वी होने के पीछे जरूर Sadistic भाव है नहीं तो महावीर जी ने, स्वंय महावीर जी ने जैनी परम्परा में उपवास के ऊपर इतना जोर कि 100 दिन, 200 दिन, 400 दिन का उपवास फिर अखबारों में विज्ञापन बाजी की जाती है। स्वंय महावीर जी ने भले उपवास किए पर वे खुद भी कहते-

"मंझिम निकाय"

मध्य के मार्ग में चलो। न शरीर को सताओ, न शरीर को बहुत भोगी बना लो। बीच में रहो। ख्याल से, जरा मेरी बात को समझने की चेष्ठा करना। मैं किसी का खंडन-मंडन नहीं कर रही हूँ। एक बात रख रही हूँ। जब तुमको मालूम हो कि

लां महात्मा जी ने कोई 100 दिन से अन्न नहीं खाया। ये धाधारी हैं। इन्होंने 40 साल से कुछ अन्न नहीं खाया। दूध ही ीते हैं। तुम कहते हो-महात्मा जी बड़े तपस्वी हैं। ख्याल रखना रीब मुल्कों में खुद भारत में ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ लोगों को खाने ो नहीं मिलता और दिन क्या महीनों-महीनों तक वे गन्दे, सड़े ानी को पी-पी कर अपनी भूख को मिटाने की कोशिश करते। ट पीठ के साथ लगा है। क्या आप उनको तपस्वी कहोगे? क आदमी ने भरी ठंड में कपड़े निकाल दिए, नंगा घूम रहा । तुम कहते हो तपस्वी हो गए। अब जिन गरीबों को कपड़ा हनने को ही नहीं मिला तुम उनको तपस्वी क्यों नहीं कहते हो फिर? जब तुम ऐसे गरीब को जिसके बदन पर कपड़ा न हो, खते हो तो नाक-भोंह सिकोड़ लेते हो। गंदा।

संसार के विषयों में, संसार के भोगों में घुस जाना और स भोग ही भोग और वासना ही वासना में चले जाना। जहाँ लत हैं वहाँ, तुम कहो बस मैं सब कुछ छोड़ के भूखा मरूँगा। हाऊँगा भी नहीं। जुएँ सिर में डाल लूँगा। सच्ची बात है जब जटाएँ सिर में रखोगे, धोओगे नहीं तो जुँए ही तो सिर में पड़ेगी और क्या पड़ेगी।

रविन्द्र नाथ टैगोर, एक कवि, एक ऋषि। रविन्द्रनाथ टैगोर को कोई मिलने वाले आए तो वह मुलाकात का समय था। तो वे अपने कमरे में शीशे के सामने खड़े कंघी कर रहे थे। तो एक व्यक्ति जो उनको बुलाने आया कि ठाकुर चलिये। आप का इन्तजार कर रहे हैं लोग। तो देखा जब रविन्द्र को बड़े सुन्दर तरीके से कंघी करते हुए। तो मन में एक प्रश्न उठ

खड़ा हुआ और उसने पूछ भी लिया। उसने पूछा-ठाकुर! आ
अपने शरीर से इतना मोह करते हो कि क्या कंघी संवार
कर रहे हैं। गीतान्जली जैसे अनुपम ग्रन्थ के रचयिता रविन
नाथ टैगोर। शान्ति निकेतन जैसे आश्रम के रचयिता, व्यवस्थापक
रविन्द्रनाथ टैगोर। और पूछने वाला पूछ रहा है कि आपक
अपने शरीर से इतना मोह, इतना लगाव कि सजा रहे हो आप
अपने शरीर को।

टैगोर कहते हैं मोह कहते हो, तो नहीं। लगाव कहो, त
हाँ। बोले-क्या अन्तर है इसमें? बोले अंतर यूँ है, जो मैं अपन
देह को मैं मानता तो मोह होता। इस देह को तो मैं भगवान
का मन्दिर समझता हूँ इसलिए लगाव है इससे। जैसे एक पुजारी
अपने मन्दिर को साफ करता है, धोता है और सुथरे कपड़े
रोज़ाना ठाकुर को बदलाता है। सुन्दर शृंगार करता है। ऐसे ही
यह जो मेरी देह भगवान का घर है और इस घर को साफ
सुथरा रखना क्या दोष है। उपनिषद तो कहता भी है-

"सत्यम् शिवम् सुन्दरम्"

भगवान का एक स्वरूप है कि सबसे सुन्दर। वैदिक काल
के ऋषियों के आश्रमों का कभी तुम वर्णन पढ़ो तो इतना
खूबसूरत वर्णन है कि क्या कहें। हाँ यह जरूर है कि उन्होंने
इटालियन मार्बल और ग्रेनाइट नहीं लगवाए हुए थे। That's
definitely true कि उसमें सोने का पानी चढ़े नल नलके नहीं
लगे हुए थे। लेकिन उनके आश्रम इतने सुन्दर थे कि कहीं
फूल खिल रहे, कहीं फल खिल रहे, कहीं मोर नाच रहे, कहीं
कबूतर उड़ रहे, कहीं पशु-पक्षी और कहीं हिरन घूम रहे हैं।

कहीं छोटे-छोटे उनके बच्चे, छौने घूम रहे हैं और किसी बड़े से बरगद के पेड़ के नीचे ऋषिवर ध्यानस्त बैठे और जमीन पर उनके दूसरे मुनि और दूसरे शिष्य लोग उनका दर्शन और उनका सत्संग सुन-सुन कर निहाल होते थे।

सुन्दरता की तारीफ करना और सुन्दर होना। हांलाकि गोस्वामी तुलसीदास कहते-

"सोई सुन्दर सोई सुघड़ शरीरा
जो सब छाड भजे रघुबीरा"

सबसे सुन्दर कौन? जिसने अपने मन से समस्त दूसरे-दूसरे बंधनों और सम्बन्धों को निकाल दिया मात्र एक प्रभु का प्यार दिल में बसा लिया। उससे अधिक कोई और सुन्दर हो ही नहीं सकता। तुम अपने सुन्दर से प्यार करो। और दुनिया, दुनिया के लिए याद रखना ये Sadistic लोग तुम्हारे आस-पास बसते हैं जो खुद को भी दुःखी करना चाहते हैं और दूसरे को भी दुःख देना चाहते हैं। पति चले गए। दुःख होगा। मानती हूँ मैं। स्वभाविक है। Natural है। लेकिन जब प्रश्न यह उठता है कि जीवन में तुमको जीना है। जाने वाला जा चुका तो अगर तुम Vulnerable हो जाओगे, बड़े लोग सताने आ जाएंगे। ख्याल रखना रोते के साथ और रूलाने वाले बहुत आ जाएंगे। पर तेरे को हँसते हुए देख कर तेरे साथ हँसने वाले कितने लोग होंगे? बोलो, भइया! कोई ज्यादा रोए न, तो कहते हैं इसकी तो शक्ल ही ऐसी है। क्या करें हम? किसी को सुखी देख कर तुम पूछते हो यह सुखी क्यों है? दुःखी क्यों नहीं हो जाता और किसी को दुःखी देख कर कहते हो अच्छा है दुःखी है। अपने पाप भोग रहा है।

ख्याल रखना पति का मर जाना या पत्नी का मर जान इसमें तुम्हारा कोई पाप नहीं है। अब उसका जीवन ही इतन था कि उसमें क्या करोगे। अब मीरा का पति मर गया तो क्य मीरा पापिन थी। नहीं। पर मीरा के पति मरे तो उसने अलविद कही। कहा-जिस साँवरे ने भेजा था यह जीवन साथी उसी साँवरे ने इस जीवन साथी को वापस बुला लिया। जीवन तो चलेगा और जीवन तो है ही परमात्मा के लिए। उसके लिए जीऊँगी अब तो।

"मैं तो साँवरे के रंग राचूँगी।
लोक लाज कुल की मर्यादा,
यां मैं एक न राखूँगी।
मैं तो साँवरे के रंग राचूँगी।।"

लोग मीरा को बड़ी डरी हुई, भावुक और Emotional स्त्री संत मानते हैं और मैं तो मीरा को बड़ी कमाल की क्रान्तिकारी और सच बोलने वाली और जगत की परवाह न करने वाली महिला संत मानती हूँ। और वैसे भी मीरा से कुछ मुझको अधिक लगाव भी है। एक मीरा से और एक राबिया से।

राबिया मुसलमान सूफी फकीर हुई है। बड़ी मस्त-बड़ी मस्त।

कहते हैं नमाज़ का वक्त था तो आस पड़ोस की महिलाएँ सब अपने-अपने घर में बैठ नमाज अदा कर रही हैं और राबिया बाहर खड़ी थी आकाश के नीचे। तो आकाश, खाली आकाश की ओर देखते चली जा रही है। किसी ने आवाज़ दी, हे राबिया! नमाज का वक्त हो चला है। तू नमाज नहीं पढ़ेगी

आज क्या? दुआ नहीं करेगी आज? तो राबिया जैसे चौंकी और पलट के देख के कहती है। नमाज़? अब तो जब हर श्वास दुआ बन चुकी हो, अब मेरी जिन्दगी की हर घड़ी उस खुदा से एक हो जाने में जा रही हो तो अब अलग से कौन सी नमाज करूँ मैं? नमाज वो करें जो दिन भर कुछ और करते हैं। दुकान कर रहे हैं। व्यापार कर रहे हैं। गाली गलोच रहे हैं। निन्दा कर रहे हैं। ये कर रहे, वो कर रहे तो वे कहते अच्छा भई अब चलो थोड़ी देर बैठ कर अब नमाज कर लें। थोड़ी देर बैठ के पूजा कर लें। पर जिसका श्वास-श्वास पूजा हो चुका हो अब वो अलग मुसल्ला बिछा कर क्या नमाज पढ़े। कहती-कैसी नमाज़? कौन सी नमाज़?

राबिया! तुम कह सकते हो कि उसको परवाह करनी चाहिए थी और मैं कहती हूँ जो सच के रास्ते पर है, जो सांचा है, जो हकीकत पर है, वह अपने हकीकत पर इतना पुख्ता होकर चलता है, परवाह नहीं करता फिर किसी की। इसलिए दूसरे की परवाह मत कर। जीवन तेरा है। भगवान का प्रसाद है तेरे को। इस प्रसाद की कीमत डाल। हर घड़ी, हर पल, हर वक्त अपने मालिक की याद में बीते, ऐसी कोशिश कर। सुनने लगेगी दूसरों की तो महाराज! बड़ी मुश्किल। और फिर आ जाते हैं कभी-कभी धार्मिक लोग। नहीं-नहीं, तुम्हारा पाप था इसलिए घरवाला मर गया। पाप तो ऐसा कह रहे हैं जैसे पाप और पुण्य के ठेकेदार यही लोग हैं। शायर कहता है-

"मुल्ला और ममालची दोनों एक समान"

ममालची जानते हो? मशाल जलाने वाले। हाथ में पकड़े

रहते थे पुराने समय में। ममालची कहते थे। वो कहते

"मुल्ला और ममालची दोनों एक समान
औरों को चानन करें आप अंधेरे जान"

बैठे संत उपदेश दे रहे। पाप है तुम्हारा इसलिए दुःख है अरे, भईया! ममालची न बनो। एक मेरा निवेदन है आप दूसरों के निर्णायक बनने की कोशिश न किया करें। आप कौन होते हैं कि आप किसी के जीवन का निर्णय करो। यह आदमी अच्छा, यह आदमी बुरा। Don't be Judgemental. Don't pass your Judgement. कौन परवाह भी कर रहा है। और आपके तीखे वचनों को सुनकर किसी का दिल दुःख रहा है, तुम्हें वह नजर नहीं आता। कैसे भगवान के भक्त होने का दावा तुम करते हो जो दूसरों के जीवन में जहर घोलते हो। और दूसरों को दुःखी देख कर दिल-दिल में बड़े खुश होते हो। अच्छा हुआ।

याद रहे सुख में तेरे साथ हँसने वाले हजारों होगें। जब-जब जीवन में दुःख आएगा सब पीठ दिखा जाएंगे और ख्याल करना यह दुःख ही वक्त है अपने आपको मजबूत करने का। और यह दुःख ही वक्त अपने आप को भगवान के साथ जोड़ने का। दुःख तो सबसे बड़ी Opportunity है। सबसे बड़ा अवसर है। दोस्त-दोस्त की परख हो जाएगी दुःख में। कौन दुश्मन है परख हो जाएगी दुःख में। सुख में कुछ नहीं पता चलता है बिल्कुल नहीं पता चलता है। सुख में तो लगता है कि सब अच्छे हैं और दुःख में...। दुःख में बहुत मुश्किल हो जाती है और लगता है मैं अकेला। एक बात और याद रखना। हम अकेले जाएंगे। और हमको अकेला ही जीना है इस अपने अकेलेपन से घबराओ

नहीं। इस अकेलेपन से डरो नहीं। इस अकेलेपन का लाभ लेना सीख जाओ। कब तक कोई बैठेगा तुम्हारे पास? कब तक। आज वह चला गया कल वह चला जाएगा। अकेले पन में बड़ा डर लगता है। जिस महिला ने मुझसे पूछा कि लोग कहते हैं तू अनाथ हो गई और जब कि भगवान सिर पर हो तो अनाथ कोई कैसे हो सकता है? अगर तुम्हें यह सचमुच लग जाता कि भगवान मेरे सिर पर है और मैं अनाथ नहीं हुई तो तुमने फिर मेरे से यह जो प्रश्न पूछा है यह कभी न पूछते। लाख कह देता जमाना तुम दुःखी, तुम कहते नहीं दुःख कैसा? साथी मिला, साथी चला गया। बात खत्म हो गई।

हम Train में सफर करते हैं यहाँ से दिल्ली गए। चार मुसाफिर साथ में और बैठे। एक टुंडला उतर गया, एक आगरा उतर गया और दिल्ली तक जाते-जाते तुम्हारे आमने-सामने कोई भी नहीं बचा तो तुम दुःखी हो के रोते थोड़े हो। आए हो आओ। जाते हो जाओ। अब यह जो विवेक है, यह विवेक आप को तब ही हो सकता है जब आप गहरे भीतर प्रेम अथवा ध्यान की डुबकी लगाओगे और कोई तरीका नहीं। इसलिए घबराओ मत और याद रहे जब तुम दूसरे को दुःखी देखकर, उसके ऊपर टिप्पणी करते हो न! तो मेरी एक बात याद रखना वह दिन क्या दूर है जब तुम्हें दुःख न होगा। दूसरे के दुःख पर हँसने वाले जरा तो शर्म कर। क्या तेरे पर दुःख कभी न आएगा। आज तू हँसे दूसरे के दुःख पर, कल जब कोई तेरे दुःख पर हँसेगा तो तुझे कैसा लगेगा? इसलिए अगर दुःख आया जीवन में तो स्वीकार कर ले। इस दुःख के विष को पी जा और जो जिम्मेदारियाँ परिवार

की या बच्चों की या अन्य दूसरी आई हैं उनको वीर होकर तू झेल। अपने आपको तू कमजोर न मान।

पिछले दो तीन दिनों में मेरे पास कम से कम 10-15 गरीब घर की महिलाएँ आई और सबकी एक ही Problem, एक ही मुश्किल। घरवाला शराब पीता है, मारता पीटता है। महाराज! कुछ प्रसाद दे दो कि वह खाए और ठीक हो जाए। बंदा बन जाए। और मैंने कहा-कि अगर मेरे को भगवान कोई ऐसी ताकत दे-दे कि जिसको मैं प्रसाद दूँ और वह खाए और उसकी शराब छूट जाए और जो वह पत्नी को मारता पीटता है वो मारना पीटना बंद कर दे बल्कि पत्नी भक्त हो जाए तो मैं तो देवियों! तुमको भर-भर के पेटियाँ दे दूँ। पर मेरे पास ऐसा कोई चमत्कारी प्रसाद फल नहीं है कि मैं तुमको दे दूँ। एक चीज़ तुमको मैं जरूर कहूँगी। दो बात हैं। तुम मार खाती ही क्यों हो? तुम्हारे दो हाथ नहीं है? तुम्हारी एक जुबान नहीं है? पहले तो सावधान करो उसको जीभ से कि बड़े मियाँ! सीधे हो जाओ। बहुत खा लिया मार। न कमा के दो, न बच्चों का कोई ख्याल करो। ऊपर से मारते पीटते हो, काहे को?

एक तो यह बड़ी मुश्किल है तुम जनानियों की, पति परमेश्वर! पति परमेश्वर कहती रहती हो और परमेश्वर तुमको कभी देवी कहता नहीं। तुम्हारा पति परमेश्वर तुमको देवी कहता? कोई नहीं। तुम अपने घरवाले को कहती हो मजाजी खुदा। और मजाजी खुदा खूब मजाज दिखाता है। मजाज आई, मतलब मर्जी आई तो बुलाया और नहीं मर्जी आई तो "हऊं"।

परस्पर प्यार, परस्पर इत्तिफाक, परस्पर एक दूसरे की इज्जत

रो तो कहो पति को परमेश्वर और वह कहे अपनी पत्नी को
ी। पर जहाँ तुम तो कहे जा रहे हो पति परमेश्वर और पति
ो सचमुच लग रहा है कि हाँ मैं हो गया परमेश्वर।

ब्याह जब होता है न ब्याह। एक तो दिमाग खराब कर
ते हैं जब वह बारात वाले दिन घोड़ी पर। बाकी सब पैदल-पैदल।
न दूल्हे राजा बाकी सब बाराती हैं। खाने को पहले दूल्हे को
। पीना हो पहले दूल्हे को दो। बढ़िया कुर्सी बैठानी पहले
न्हे को बैठाओ। आधा दिमाग तो ब्याह वाले दिन खराब हो
या। आधा दिमाग दूल्हे का खराब किया सुहाग रात में पत्नी
। जब वह कहती तुम तो मेरे परमेश्वर हो। तुम तो मेरे
जाजी खुदा हो। तो उसको भी होश आती है घरवाले तो मुझे
ल्लू-चप्पू कहते थे। और मैं तो मजाजी खुदा हूँ। मैं तो
गवान हूँ और मेरे को यह नालायक कहते थे। सब नालायक
, सुबह सब को सीधा कर दूँगा। और जैसे कमरे से बाहर
कलता है घरवाले कहते हैं तेवर तो देखो इसके ज़रा।

पत्नी मार खाए क्यों? जुबान से समझाओ। नहीं समझे तो
फिर दो-दो हाथ, आजा काके कर ले दंगल। कर ले जो
रना है तुम्हें। मैं स्त्री को लड़ाका नहीं बना रही हूँ। कई लोग
हते हैं मुझे कि ये तो ऐसा कहते हैं। मैं किसी को लड़ने को
हीं कह रही। मैं तो लड़ने के पक्ष में भी नहीं हूँ। ख्याल रखना
तो रोज प्रवचन चालू ही इससे करती हूँ शान्ति शान्ति शान्ति।
र सामने वाला थप्पड़ मारने लगे तो करो क्रान्ति क्रान्ति।

स्त्री अपने आपको असहाय, इतनी असहाय देखती है। घरवाला
र भी कुछ नहीं रहा। कमा भी तू रही है। बच्चे भी तू पाल

रही है उस मुए को रोटी भी बना कर दे रही है और उसकी म
भी खा रही है। सब कुछ क्यो कर रही है। एक काम कर
छोड़ या तो उसको रोटी बना कर न दे, सेवा न कर उसकी
उसकी मार न खा। Make a deal. सौदा कर उसके साथ।

**एक अन्तिम प्रश्न और लेंगे वे पूछते हैं मैं य
जानना चाहता हूँ मनुष्य को अपना अन्तिम समय नजदीक
आता देख क्या करना चाहिए?**

ख्याल रहे अन्तिम समय नजदीक आ रहा है ऐसा पहल
तुझे पता ही कैसे चलेगा? बताओ न। यह बेईमानी है। पक्की
बात। वह कहता है अभी बन्दगी नहीं करूँगा जब मरने लगूँग
तो कर लूँगा अजामिल जैसे। तो अजामिल की कथा की त
मैंने खूब डोंडी पीटी है। नहीं पीटी है? अन्तिम वक्त क
आएगा कौन जानता है? शायर कहता है-ज़ौक कहते हैं-

"ऐ शेख, तेरे सब राज खुल गए
जाना था मैखाने में मस्जिद को निकल गए"

नियत देखो। बैठे है मन्दिर में कथा सुन रहे हैं और मन
में संसार। और वे कहते हैं-मियाँ साहब! लाला जी! आज तो
तुम्हारा सब राज देख लिया क्योंकि तेरी आँखों में तू शराब खाने
के निकट से गुजरा तो तेरी आँखों में जो चमक और जो लपट
आई ना कि जल्दी-जल्दी खत्म करो, आरती पूजा और घुस
जाऊँ वहाँ पर। बोले-आज खुल गई बात। देख लिया हमने।
अन्तिम समय नजदीक आए बुलवा लो पंडित जी को। कान मे
गीता सुना दे और मरने वाला मर रहा है और अन्तिम सासें गिन

ा है और हाँफ-हाँफ के, खींच-खींच के सांस ले रहा है और
डित बैठे कान में गीता सुना रहे। उसको सुन कहाँ रही है।
न रही है उसको?

एक मरते हुए आदमी को श्वासें अटकी हुई। अपने लड़के
ो बुलवाया कहा-बेटा कहाँ है? तो उसकी पत्नी ने
हा-जल्दी-जल्दी बुलवाओ। कहाँ है? और श्वासें अटकी हैं
र मुश्किल-मुश्किल से श्वासें ले रहा है। लड़का पास है
हना-बोलिये पिताजी और मरता यह बुड्ढा आदमी कह रहा है।
हना-आज शेयर का भाव क्या है? पत्नी कहती है कि मरना
तो ढंग से मर जा और मरते में भी पूछ रहा है शेयर का
व क्या है? और इधर बैठे पंडित जी गीता सुनाए चले जा
वह शेयर का भाव पूछ रहे उधर गीता चल रही। बात कुछ
न नहीं रही।

जिस आदमी ने जीते जी, या यूँ कहूँ अभी भगवान का
रण नहीं किया मरने में कर लेगा ऐसी क्या गारन्टी और क्या
धार है तुम्हारे पास? जो करना है सो अब करो जो करना है
अभी करो। मत पूछो मौत जब आएगी तो क्या करेगें। मौत
ब आएगी तो तब तो तुम क्या करोगे। जैसे एक ने शिकार
खना चालू किया कि शिकारी बनूँ, शिकार करना सीखूँ तो बन्दूक
थ में पकड़ी। पहले दिन जंगल में गया तो अपने उस्ताद जी से
हता है उस्ताद जी एक बात तो बताओ। उस्ताद कहते-पूछो
टा! कहते उस्ताद जी मान लीजिये हम मचान में बैठे हों और
न्दूक मचान में रखी हो मुझे पेशाब लग जाए तो और मैं मचान
नीचे उतर जाऊँ और सामने शेर आ जाए, तब क्या करूँ? तो

उस्ताद जी कहते-मुन्ना! तब तो शेर ही करेगा जो करेगा तब तू क्या करेगा? तब तेरे बस का कुछ नहीं होने का तब तो जो करेगा वही करेगा। क्या करोगे जब मौत सामने?

जब मौत का शेर सामने आकर खड़ा होगा पूछते हो-तब क्या करेंगे तब तुम कुछ न करोगे। तब तो जो करेगी मृत्यु ही करेगी। शरीर जड़ हो जाए, जुबान बन्द हो जाए, बोलना बन्द हो जाए, दिखना बन्द हो जाए। बात न हो सकेगी तो तुम क्या करोगे कुछ नहीं। इसलिए जो करना है सो अब कर। अब कर।

"कल करे सो आज कर, आज करे सो अब"

अब कर। मुश्किल यह है तुम अब नहीं करना चाहते हो। और कोई मुश्किल नहीं है। अब नहीं करना चाहते और चाहते हो या तो कोई महात्मा आर्शीवाद दे-दे कि भई तुम तर जाओगे और या तो फिर कुछ मोटा दान कर दें तो जिसको मैं दान दूँ वो आदमी आर्शीवाद दे-दे कि तुम तर जाओगे।

अक्सर लोगों को ऐसा लगता है कि भगवान ने जब हमें मनुष्य बनाया तो हमें स्वछन्द नहीं बनाया। हमारे चारों तरफ से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार के हमले हो रहे और हम बेचारे इन पाँचों दुष्टों में फँसे हुए हैं और भगवान ने अगर इतनी योनियों में भटकाने के बाद अगर मनुष्य जन्म दे ही दिया तो इन पाँच विकारों का घेरा हमारे ऊपर क्यों डाला है? हमें इनका गुलाम क्यों बनाया है। ख्याल रखना भगवान ने तुमको गुलाम बना के नहीं भेजा उसने तो तुमको स्वतन्त्र भेजा और कहा चुनाव कर जो तू करना चाहे कर पर इसका इल्ज़ाम फिर किसी के ऊपर

नहीं देना। इसका इल्ज़ाम खुद तेरे ऊपर होगा। और हकीकत यही है। अगर तुम्हारे मन में भीतर के उस सत् का बोध हो तो ख्याल रखना तेरे आस पास फिर कितना भी भोग विलास का सामान होता हो, जिसने अन्दर का आनन्द रस पीना सीख लिया उसको कोई फर्क नहीं पड़ने वाला और जिसके अन्दर चोर है वो आँख नीची कर लेगा वो आँख बन्द कर लेगा।

एक बड़ा ऐतिहासिक और शास्त्र का उदाहरण मैं देना चाहूँगी। राजा जनक के वक्त में एक स्त्री संत हुई थी जिसका नाम था गार्गी और गार्गी कहते नग्न रहती थी। कपड़ा नहीं पहनती थी। भारत में अगर मैं ये कहूँ कि दो स्त्रियाँ ऐसी हुई हैं जिनके भीतर में पुरूष जैसा स्वाभिमान और पुरूष की भांति जी है। एक तो गार्गी और एक काश्मीर में हुई थी वल्ला, दो।

गार्गी कहते हैं जनक की सभा में गई। क्योंकि जनक की सभा में बड़े-बड़े ऋषि और महात्मा शास्त्रार्थ करने को आए थे और बड़ा लम्बा चौड़ा तगड़ा इनाम था कि जो जीतेगा शास्त्रार्थ उसको सोने से मढ़ी हुई सीगों वाली दस हजार गायें मिलेगी। तो बड़े-बड़े विद्वान, बड़े-बड़े शास्त्री गए तो गार्गी। अब गार्गी बिल्कुल नग्न। जैसे ही उसने सभा में प्रवेश किया तो कोई कुछ करने लगा तो कोई कुछ बोलने लगा। पर वो निर्भीक चलती हुई एक दम सामने तक चली गई और जैसे ही जनक की नजर गई तो जनक की नजर गई तो जनक ने आँखें नीची कर ली। कहा कुछ नहीं आँख नीची कर ली। गार्गी खिलखिला के हँस पड़ी। गार्गी कहती जनक तेरी सभा कोई कुछ कहे, कोई कुछ और कहे तो समझ लगती है पर तुझे तो लोग विदेह मुक्त ज्ञानी

कहते है और तुझ ज्ञानी को भी मेरा स्त्री होना नजर आ रहा है, पुरूष होना नजर आ रहा है और जबकि ब्रह्मवेता, ब्रह्मज्ञानी तो उसी को कहते हैं जो सबमें एक ब्रह्म के दर्शन करता है। ब्रह्मज्ञानी कौन, जो समस्त में ब्रह्मदर्शन करता है।

"ब्रह्म दीसै ब्रह्म सुनिये एक एक वखानिये
आत्म पसारा करनहारा प्रभ बिना नहीं जानिये"

गार्गी कहती अगर मेरी जगह कोई दिगम्बर अवधूत पुरूष आता तो क्या तब भी तू आँख नीची करता और अगर नहीं तो फिर मेरे आने पर तूने आँख नीची क्यों की? जनक ने क्षमा माँगी। कहा-देवी! मुझे क्षमा कर। ऐ ब्रह्मवादिनी! मुझे क्षमा कर। मेरा आचरण सही नहीं था। मैंने ठीक नहीं किया।

तो जिसके मन में विकार कोई नहीं तो उसके लिए फिर ये भेद भी खत्म हो जाता है। ख्याल रखना, भारत के ऋषियों ने कभी नहीं कहा कि घर बार संसार त्याग करके भाग जाओ, कायर हो जाओ और संसार के काम धंधे छोड़ के कहीं भाग के गुफा में कैद कर लो अपने आपको। वो कहते-जहाँ है वहीं रह। जिस संसार में है भले वहीं रह। बस अपने मन से इस विकार भर को निकाल दे। रहे दुनिया का मौज मेला जितना मर्जी। देख सुन्दर दुनिया के रंग को। पर जब भीतर से निष्प्रह हो गए, जब भीतर से निर्मोह हो गए, जब भीतर से निअंहकार हो गए, जब भीतर से मैं देह नहीं हूँ आत्म स्वरूप हूँ ऐसा जिसने बोध कर लिया उसके लिए कोई झंझट नहीं फिर कि आँख बंद कर लो।

जैसे वो कबूतर ने देखी बिल्ली तो आँख बंद करके बैठ गया कबूतर कि न दिखे बिल्ली न मारेगी मुझको। दुनिया से घबरा के, दुनिया से डर के जो दुनिया से भागेगा याद रखना दुनिया उसका पीछा करती रहेगी ही रहेगी, छूटेगी नहीं कभी भी। आदमी को भय लग रहा हो और भय की वस्तु से भाग जाए तो भय नहीं चला जाएगा। जैसे एक छोटा बच्चा अंधेरे कमरे में जाने से डरता है। अब दो तरीके हैं। एक तो माँ को कहता है माँ मेरे साथ चल कि मुझे वहाँ ऊपर जाना है वहाँ अन्दर अंधेरा है वहाँ भूत होगा तो माँए आमतौर पर क्या करती कि न, न, मेरे बच्चे! तू डर नहीं चल तेरी मम्मी तेरे साथ चलती है। या तो मैं लाइट जला देती हूँ पहले कमरे में तो तुम चले जाना और दूसरा तरीका जिसको मैं स्वीकार करूँगी कि इस तरह से तुम भी करना बच्चा जो डरे कि नहीं अंधेरे में मैं नहीं जाऊँगा वहाँ भूत है तो उसको कहो नहीं, जा और जा के देख ले वहाँ कोई भूत नहीं। तुम कहो भूत है और तुम कहो भूत नहीं है फिर कोई सामने नहीं रखता। जब तुम उसकी अँगुली पकड़ के साथ चले गये तो उसके दिल में गहरा भय बैठ जाएगा कि सचमुच अंधेरे में भूत होता है। कहो उसे जाओ। क्या है, चले जाओ। पर एक तो तुम खुद डरपोक हो, वैसे ही रीं-रीं करने वाले अपने बच्चे बना देते हो। एक खुद डरते रहते हो तैसे उनको डरना सिखा देते हो और कबीर साहब कहते-

"डर डर मरते जो जानया दूर"

जब तक मैंने भगवान को दूर जाना है मैं डरता था।

"डर डर मरते जो जानया दूर

डर चूक्या देखा भरपूर''

और जब मैंने उसको भरपूर देख लिया अब डर खत्म हो गया अब सारे भय खत्म हो गए। अब मुझको किसी प्रकार से कोई भय, कोई भी डर नहीं लगता। अब तुम कैसे जीना चाहोगे? डर-डर के और डर-डर के जीना चाहोगे तो महाराज! बड़े डराएगें फिर तेरे को। बहुत डराने वाले आ जाएंगे और डर को अपने बदन से उखाड़ के फैंक दो। काहे को डरना भइया। मौत जिन्दगी में एक ही बार आनी है दो बार नहीं, चार बार नहीं, छः बार नहीं, आठ बार नहीं, दस बार नहीं। कितनी बार आएगी मौत? बोलो न। एक ही बार। तो अब जब आएगी तब ही आएगी। उसके पहले आने वाली है नहीं तो डरना क्या? बोलो न, काहे को डरना, किससे डरना, मत डर। अपने भीतर जरा इस भाव को जगा, अपने भीतर जरा इस अहसास को जगा कि तू एक क्षण को भी न उस मालिक से दूर है, न दूर हो सकता है। तो जो हर वक्त तेरे सिर पर है, जो हर वक्त तेरे अन्दर बाहर है और जो हर वक्त सांचा साहब तेरी रक्षा करने को बैठा है और अब तू एक भी घड़ी को उससे जुदा नहीं, उससे अलग नहीं तो फिर डर किससे? और डर कैसा? मौज से रह और देख तेरा प्यारा जिसे तू भगवान कहे, राम कहे कृष्ण कहे, वाहेगुरू कहे, खुदा कहे तेरे अन्दर बाहर।

सकल रहा भरपूर मेरा प्यारा, मेरा प्यारा,
नहीं नेड़े नहीं दूर मेरा प्यारा, मेरा प्यारा।
जल में, थल में, अग्नि पवन में,
नहीं नेड़े नहीं दूर मेरा प्यारा, मेरा प्यारा।

सब घट बैठा, सब घट जाने,
सब घट छलके नूर मेरा प्यारा।
सब में रहकर सब को जाने,
देखा जलवा हजूर मेरा प्यारा।
सकल रहा भरपूर मेरा प्यारा, मेरा प्यारा।
सबके अन्दर बाहर बसना,
देखा जलवा हजूर मेरा प्यारा।

जो सब अन्दर बाहर बसता है और देखा जलवा हजूर और जिसने उसका जलवा देखा वो तो महाराज नाचेगा नहीं तो और क्या करेगा।

"या तो दीवाना हँसे या जिसे तू तौफीक दे
वरना इस दुनिया में मुस्कुराता है कौन"

हँसने का मौका दे रहे हैं हँस। अब कही बात जो बेखुदी में कही जो कही बात तो उस हकीकत की शराब की मस्ती में बेखुद होकर के कही। और बेखुद हो के गर तुमको सुनना आ जाए, जीवन आनन्द-आनन्द हो जाएगा। पर याद रहे जीवन में जहाँ आनन्द पीने के मौके तुम्हें सिर्फ अपने अन्दर, अपने ही भीतर जा के मिलेंगे, वहाँ जब तुम व्यवहार में आओगे तो वहाँ दुःख भी होगा, सुख भी, चिन्ताएँ भी, मुसीबतें भी सब कुछ है। पर जब तुमको मुस्कुराना आ जाएगा न तो हर गम को यूँ मुस्कुरा के उड़ा दिया करेगा। जैसे धूल आई तो तुमने झाड़ दी ऐसे ही जिनको आनन्द से जीना आता है न जब उनकी जिन्दगी में दुःख आता है तो उसे धूल की माफिक बस झाड़ देता है। ये

कला तुमको आ जाए इस कला से फकीरों की फकीरी कायम है भइया। जिस कला को जानने से संत-संत हो गए ऋषियों को ऋषि पदवी प्राप्त हो गई वो तुझको भी मिल सकती है वो तेरी ही है। तेरे से अलग बिलग तो है नहीं, क्योंकि तू परमात्मा से अलग बिलग नहीं है।

इतने दिन तक संग-संग बैठे, मैंने प्रेम से कही अपनी बात, तुमने प्रेम से सुनी। आज यहाँ ही सभी से अब इजाजत लेते हैं क्योंकि-

"हम तो हमारी मस्ती में झूमते चले हैं,
आदाब कर लिया है जो राह में मिले हैं।
रस्ता मिला है पक्का हम दौड़ते चले हैं,
कि पैरों से अपने खुदी को रौंदते चले हैं।
खुदा से मिली है निगाह तो मुस्कुराते चले हैं,
आदाब कर लिया है जो राह में मिले हैं।
खाएगा अब न धोखा,
गुरू दिया है ज्ञान अनोखा।
जो नजरें उससे मिली हैं,
तो नजरें मिलाते चलेंगे।
हम तो हमारी मस्ती में झूमते चले हैं,
आदाब कर लिया है जो राह में मिले हैं।।"

तो महाराज! मेरी इस शरीर की यात्रा में तुम सब मिले तो भाई तुम सबको मेरी आदाब, तस्लीम, अस्सलामवालेकुम, नमस्ते, राम-राम, हरी ओ३म्।

जो कहो। बात रखनी थी रखी। आनन्द में इतने दिन गुजरे उसके लिए मैं धन्यवादी हूँ अपने प्रभु की। इतने प्यार, इतने आनन्द की ये जो छटा सब ओर छाई, सब को आनन्द हो, सबके जीवन में रस हो, सबके जीवन में सुख हो। मेरी ये प्रार्थना, शुभकामना तुम सबके लिए। सबके भीतर में प्रेम का वास हो, सबके अन्दर में मालिक की याद हो, सबके दिल में मालिक का सुमिरन हो, सब सुख से बसो और जब-जब दुःख आ जाए तो उनको भी मुस्कुरा के झेलना। तब भी रोना नहीं। रोना तो मालिक की याद में, दुःख में कभी नहीं। इतना कह के वाणी को विराम।

गुरू माँ जी की अन्य प्रकाशित पुस्तकें

1. कबीरा राम यूं सुमिरिए

आनन्दमूर्ति गुरू माँ के मुखारविंद से संत कबीर पर अलग-अलग स्थानों में दिए गए 13 सुन्दर अमृत प्रवचनों का संकलन।

2. प्रेम दीवानी मीरा

आनन्दमूर्ति गुरू माँ के मुखारविंद से संत मीरा पर अलग-अलग स्थानों में दिए गए 12 सुन्दर अमृत प्रवचनों का संकलन।

3. सत्गुरू पूरा पायो

आनन्दमूर्ति गुरू माँ के मुखारविंद से गुरू तत्व की व्याख्या पर अलग-अलग स्थानों में दिए गए 8 सुन्दर अमृत प्रवचनों का संकलन।

4. धर्मक्रान्ति

आनन्दमूर्ति गुरू माँ के मुखारविंद से धर्म की व्याख्या पर अलग-अलग स्थानों में दिए गए 6 सुन्दर अमृत प्रवचनों का संकलन।

5. आत्मबोध

आनन्दमूर्ति गुरू माँ के मुखारविंद से आत्म ज्ञान पर अलग-अलग स्थानों में दिए गए 9 सुन्दर अमृत प्रवचनों का संकलन।

6. चिन्मय की ओर

आनन्दमूर्ति गुरू माँ के मुखारविंद से ध्यान पर अलग-अलग स्थानों में दिए गए 10 सुन्दर अमृत प्रवचनों का संकलन।

7. कम्पैशन (अंग्रेजी)
8. जे रत लगै कपड़ा (पंजाबी)
9. करूणा

गुरू माँ जी की पुस्तकें, ऑडियो एवं वीडियो कैसेट्स प्राप्त करने के प्रमुख स्थान

ऋषि ध्यान द्वीप केन्द्र

दिल्ली

1. एन.पी. *99*, टी.वी. टावर रोड़, नजदीक गोपाल मन्दिर, पीतमपुरा, नई दिल्ली
   फोन: *7143412, 7443006*
2. एफ-*97*, ए बाली नगर, नई दिल्ली- *110015*
   फोन: *5194844*
3. *991*, त्री नगर, तालाब रोड़, नई दिल्ली-*110035*
   फोन: *7196016*
4. *22*, अजन्ता अपार्टमैन्ट्स, पटपड़गंज, दिल्ली-*110092*
   फोन: *2721257*
5. आर-*40*, राजौरी गार्डन, दिल्ली-*27*
   फोन: *5415903, 5458266*

फरीदाबाद-*434*, सैक्टर-*16*, फरीदाबाद। फोन: *264369*

लुधियाना-*103*, भारत नगर, पी.एन.बी. गली, लुधियाना।
फोन: *444933, 445933*

अमृतसर-*250*, हुसैन पुरा, शिवाला फाटक, अमृतसर।
फोन: *278365, 234585*

फरीदकोट-जगदेव राज, मेन बाजार, नजदीक अर्जुना बेकरी, फरीदकोट। फोन: *54929*

कानपुर- 118/133, बंबा रोड, गुमटी नं. *5*, कानपुर।
फोन: *215629, 297816*

जालंधर-*52*, चन्दन नगर जालंधर। फोन: *400604*

बुध
WED

199

बृह.	शुक्र	शनि	रवि
THU	FRI	SAT	SUN

8 9 10 11